श्री वेंकटेश्वर स्वामी चरित्र

कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद द्वारा विरचित वैदिक ग्रंथरत्न

1. श्रीमद् भगवद्गीता यथारूप
2. श्रीमद् भागवत (१-१२ स्कंध) (१८ भागों में)
3. श्री चैतन्य चरितामृत (९ भागों में)
4. लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण
5. भक्तिरसामृतसिंधु
6. भगवान श्री चैतन्य महाप्रभु का शिक्षामृत
7. उपदेशामृत
8. श्री ईशोपनिषद
9. अन्य ग्रहों की सुगम यात्रा
10. भागवत का प्रकाश
11. आत्म-साक्षात्कार का विज्ञान
12. कृष्णभावनामृत : सर्वोत्तम योग पद्धति
13. पूर्ण प्रश्न पूर्ण उत्तर
14. महारानी कुन्ती की शिक्षाएँ
15. देवहूतिनन्दन भगवान कपिल का शिक्षामृत
16. जन्म-मृत्यु से परे
17. राजविद्या - ज्ञान का राजा
18. जीवन का स्रोत जीवन
19. कर्मयोग
20. रसराज कृष्ण
21. प्रह्लाद महाराज के दिव्य उपदेश
22. योग की पूर्णता
23. कृष्ण की ओर
24. कृष्णभावनामृत की प्राप्ति
25. कृष्णभावनामृत - एक अनुपम उपहार
26. पुनरागमन - पुनर्जन्म का विज्ञान
27. योगपथ - आधुनिक युग के लिए योग
28. योग की पूर्णता
29. नारद भक्ति-सूत्र
30. उत्तम प्रश्न, उत्तम उत्तर
31. जीवन का स्रोत जीवन
32. गीता सार
33. प्रकृति के नियम
34. मुकुंद माला स्तोत्र
35. भ्रम और संदेह से परे
36. ज्ञान की खोज
37. ज्ञान की तलवार
38. मृत्यु की पराजय
39. आत्मा का प्रवास
40. भगवद् दर्शन (मासिक पत्रिका) (संस्थापक)

समर्पण (अंकित)

अंशांशस्तु मरीच्याधिरंशा ब्रह्मादयस्तथा।
कलाः कपिलकूर्माद्या अवेशाभार्गवाद यः॥
पूर्णो नृसिंहो रामश्च श्वेतद्वीपाधिपो हरिः।
वैकुंठोऽपि तथा यज्ञो नरनारायणः स्मृतः॥
परिपूर्णतमः साक्षात् श्रीकृष्णो भगवान् स्वयं।
असंख्याक ब्रह्मांड पतिर्गो-गोलोके धाम्नि राजते॥

मरीचि आदि मुनि अंशांश अवतार हैं। ब्रह्मा आदि अंशावतार हैं। कपिल और कूर्म आदि कलावतार हैं। परशुराम आवेशावतार हैं। नरसिंह, राम, श्वेतद्वीपाधिपति (नारायण), वैकुंठपति (विष्णु), यज्ञ, नरनारायण आदि पूर्ण अवतार हैं। श्रीकृष्ण भगवान स्वयं आदि भगवान हैं। असंख्य ब्रह्मांडों के स्वामी (श्रीकृष्ण) गोलोक में निवास करते हैं। (गर्गसंहिता गोलोककाण्ड प्रथम अध्याय श्लोक 16-18)

ऐसे श्रीकृष्ण भगवान के बारे में दुनिया भर में प्रचार करने वाले अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) के संस्थापकाचार्य कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद अभयचरणारविंद भक्ति वेदांत स्वामी प्रभुपाद को और मेरे गुरुदेव परम पूज्य श्री भक्ति विकास स्वामी महाराज को यह ग्रंथ समर्पित करता हूँ।

श्रील भक्ति विकास स्वामी द्वारा लिखी गई पुस्तकें[1]

कृष्णभावनामृत में पहला कदम
भारतीय नवयुवकों को संदेश
कृष्णभावनामृत में ब्रह्मचर्य
पारम्परिक भारतीय जीवन की एक झलक
श्रील प्रभुपाद के बारे में मेरी स्मृतियाँ
श्रील प्रभुपाद की सेवा में प्रबल प्रचार
प्रेमावतार श्री चैतन्य महाप्रभु
श्री वंशीदास बाबाजी
जय श्रील प्रभुपाद!
आज की नारी कल की संस्कृति
भक्तिपथ
श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर: संक्षिप्त जीवनचरित्र
Lekha-Mālā
Mothers & Masters
Patropadeśa
On Pilgrimage in Holy India
Śrī Bhaktisiddhānta Vaibhava (3 volumes)
Vaiṣṇava Śikhā O Sādhana (Bengali)

श्रील भक्ति विकास स्वामी द्वारा सम्पादित तथा संकलित पुस्तकें

वाल्मीकि कृत रामायण
The Story of Rasikānanda
Gaudiya Vaiṣṇava Padyāvali (Bengali)

अधिक जानकारी तथा सूचीपत्र के लिए लिखें:
भक्ति विकास ट्रस्ट, सुरत, गुजरात. WhatsApp#+(91)-7016811202
ये पुस्तकें books@bvks.com पर भी उपलब्ध है।

---

(1) जिन पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी भाषा में उपलब्ध है, उन्हें ऊपर की सूची में देवनागरी लिपि में निर्दिष्ट किया गया है।

अनुक्रमणिका

आमुख

इस ग्रंथ को प्रारंभ करने से पहले मैं अपने गुरु महाराज परम पूज्य श्री भक्ति विकास स्वामी महाराज, भगवद्भक्तों, श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण के अवतारों को प्रणाम करता हूँ।

सरकार द्वारा नियुक्त डाकिया संपूर्ण नहीं हो सकता है, लेकिन उसके द्वारा दिए गए पत्र के माध्यम से हमें लाभ मिल सकता है। उसी प्रकार, मैं संपूर्ण नहीं हो सकता हूँ, लेकिन मेरे द्वारा दिया गया संदेश पवित्र है, जो गुरु परम्परा द्वारा दिया गया है, शास्त्र प्रमाणित है और संपूर्ण है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप इस संदेश को स्वीकार करके महान लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इस ग्रंथ को लिखने के लिए भविष्योत्तर, स्कंद, भागवत, वराह पुराणों से, श्रीवैष्णव ग्रंथों से और तिरुमला तिरुपति देवस्थानम ग्रंथों से प्रमाण जुटाए गए हैं।

प्रस्तावना

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।

सबसे पहले मैं भगवान नारायण को, नर-नारायण ऋषि को और ज्ञान की देवी सरस्वती को तथा महर्षि वेदव्यास को प्रणाम करता हूँ। (महाभारत, आदिपर्व, अध्याय 1, श्लोक 1)

वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के तिरुमला[(1)] पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण वैष्णव मंदिर है। यह मंदिर वेंकटाचल[(2)] की सात पहाड़ियों में से एक पहाड़ी पर 853 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण दक्षिण भारतीय मंदिर निर्माण शैली (आगम शास्त्र) के अनुसार किया गया है।

शुकदेव गोस्वामी ने परीक्षित महाराज से कहा, "इलावृत्तवर्ष की भांति भारतवर्ष में भी अनेक पर्वत और नदियाँ हैं। इनमें मलय, मंगलप्रस्थ, मैनाक, त्रिकूट, ऋषभ, कूटक, कोल्लक, सह्य, देवगिरि, ऋष्यमूक, श्रीशैल, वेंकट, महेंद्र, वारिधारा, विंध्य, शुक्तिमंत, ऋक्षगिरि, पारियात्र, द्रोण, चित्रकूट, गोवर्धन, रैवतक, ककुभ, नील, गोकामुख, इंद्रकील, कामगिरि आदि हैं। इनके अलावा हजारों अन्य पर्वत भी हैं, जिनसे कई नदियाँ निकलती हैं।" (श्रीमद्भागवतम् 5.19.16)

(1) तिरुमला यह शब्द तेलुगु भाषा से लिया गया है। "तिरुमला" का अर्थ "पवित्र पर्वत" होता है। आंध्र प्रदेश में, विशेषकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर (तिरुपति) के संदर्भ में "तिरुमला" अधिक प्रचलित है। इसका मूल शब्द "तिरुमल" है। यह तमिल भाषा का शब्द है। "तिरुमल" का अर्थ है "पवित्र पर्वत" या "श्री विष्णु भगवान"। तमिल आचार्य और भक्त कवि इस नाम का प्रयोग भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) के लिए करते थे। तेलुगु परंपरा और तिरुपति में प्रचलित नाम को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में "तिरुमला" शब्द का प्रयोग किया गया है।

(2) यह तिरुमला का ही अन्य नाम है।

उपरोक्त वर्णित पुण्य पर्वतों में वेंकट-पर्वत[1] पर ही नारायण वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट हुए। तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के प्रकट होने के कारण तिरुमला क्षेत्र को कलियुग का वैकुंठ भी कहा जाता है। इस क्षेत्र में नारायण स्वयं प्रकट हुए थे। नारायण को वेंकटेश्वर, श्रीनिवास, सप्तगिरीश, एड़ुकोंडलवाड़ा, बालाजी, तिरुमलप्पा और तिरुमलेश जैसे अनेक नामों से पुकारा जाता है।

लगभग पाँच हज़ार वर्ष पूर्व, कलियुग की शुरुआत में तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी प्रकट हुए और एक हज़ार वर्ष पहले तिरुपति में रामानुजाचार्य ने गोविंदराज स्वामी को प्रतिष्ठित किया। चोल, विजयनगर, गद्वाल, मैसूर, पल्लव जैसे कई राजवंशों के राजाओं और रानियों ने इन दोनों विग्रहो की सेवा और दर्शन का लाभ लिया। उन्होंने गोपुरों और मंदिरों के निर्माण और पुनर्निर्माण के कार्य किए। भूमि दान में दी और सोने के आभूषण समर्पित किए। ऐसे भक्ति युक्त कार्यो से उन्होंने बहुत सुकृति प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक बनाया।

ब्रह्म, कुमार, रुद्र और श्री संप्रदायों के कई आचार्य और भक्त वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन और सेवा करके अपने जीवन को सार्थक बना चुके हैं।

वेंकटेश्वर स्वामी और तिरुमला-तिरुपति के विभिन्न पवित्र स्थलों के बारे में विभिन्न पुराणों में अलग-अलग विवरण मिलता हैं। इसलिए, इस पुस्तक में प्रकाशित जानकारी अन्य भक्तों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के विवरण से अलग हो सकती है।

(1) यह तिरुमला का ही अन्य नाम है।

1

श्री वेंकटेश्वर स्वामी का लीला चरित - 1

भविष्योत्तरपुराण से

नैमिषारण्य के मुनियों ने सूत गोस्वामी से कहा, "हे सूत गोस्वामी! अब तक हमने वरदराज स्वामी और जगन्नाथ स्वामी के बारे में सुना है। अब वेंकटाचल माहात्म्य का वर्णन करें।" इस पर सूत गोस्वामी ने इस प्रकार कहा:

एक बार गंगा नदी के तट पर मुनियों द्वारा एक महान यज्ञ किया जा रहा था। तब नारद मुनि वहाँ आए और मुनियों से कहा, "इस यज्ञ का फल आप परमेश्वर को अर्पित करें" और वे चले गए। मुनियों ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिमूर्ति में से कौन परमेश्वर हैं, यह जानने के लिए भृगु महर्षि को भेजा। भृगु महर्षि पहले ब्रह्माजी के पास गए और साष्टांग नमस्कार किया, लेकिन ब्रह्माजी ने उन्हें कोई भी आशीर्वाद नहीं दिया। इसलिए भृगु महर्षि वहाँ से कैलाश की ओर चले गए।

कैलाश में शिवजी पार्वती देवी के साथ एकांतवास कर रहे थे। पार्वती देवी भृगु महर्षि के आगमन को देखकर संकोच के कारण शिवजी से दूर चली गईं। तब शिवजी ने कहा, "जब पति-पत्नी अकेले में हों तो, बिना अनुमति के आप कैसे अंदर चले आए?" और क्रोधित होकर उनका संहार करने के लिए तैयार हुए। इस पर भृगु महर्षि ने उन्हें कहा, "मैं क्यों यहाँ आया हूँ इस बात को सोचे-समझे बिना ही मुझे नष्ट करने के लिए आ रहे हो। इस लिए में तुम्हें श्राप देता हूँ की आज से तुम्हें पृथ्वी पर मात्र लिंग पूजा ही मिलेगी," और फिर भृगु महर्षि कैलाश से वैकुंठ की ओर चले गए।

वैकुंठ में उस समय भगवान विष्णु आदिशेष पर शयन कर रहे थे। भृगु महर्षि ने सोचा कि यह भगवान विष्णु की परीक्षा लेने का उचित

समय है, और उन्होंने भगवान विष्णु के पास जाकर उनके वक्षस्थल पर अपने पैर से प्रहार किया। भगवान विष्णु तुरन्त उठकर बोले, "हे महर्षि! आपकी उपस्थिति का ध्यान न रख पाने के लिए क्षमा करें," और इस प्रकार क्षमाप्रार्थी हुए। फिर उन्होंने महर्षि को सिंहासन पर बैठाया और कहा, "मेरा वक्षस्थल वज्र से भी आठ गुना कठोर है, इसलिए आपके पैर में दर्द हो रहा होगा।" फिर उन्होंने गुनगुने जल से महर्षि का पादप्रक्षालन किया और उस पानी को भक्ति से अपने सिर पर छिड़का। बाद में भृगु महर्षि गंगा नदी के तट पर लौट आए और वहाँ एकत्रित सभी मुनियों को बताया कि उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को कैसे परखा। मुनियों ने तब निष्कर्ष निकाला कि भगवान विष्णु ही परमेश्वर हैं और यज्ञ का फल भगवान विष्णु को समर्पित किया जाना चाहिए।

भृगु महर्षि द्वारा ब्रह्मा, विष्णु और महेश का परीक्षण पद्मपुराण और भागवत में उल्लेखित है।

पद्मपुराण में, भृगु महर्षि के द्वारा त्रिमूर्ति के परीक्षण के बाद, मुनियों ने निष्कर्ष निकाला कि "विष्णु ही परमेश्वर हैं" और यज्ञ का फल विष्णु को समर्पित किया।

भागवत में, शुकदेव गोस्वामी ने परीक्षित महाराज से कहा, "कुछ लोग मानते हैं कि ब्रह्मा इस सृष्टि के स्रष्टा हैं, कुछ लोग शिव को और कुछ विष्णु को। सरस्वती नदी के किनारे मुनियों ने इस संदेह को दूर करने के लिए भृगु महर्षि को भेजा। भृगु महर्षि ने त्रिमूर्ति का परीक्षण किया और निष्कर्ष निकाला कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश में से विष्णु ही परमेश्वर हैं।"

नारायण का वेंकटाचल में आगमन

भृगु महर्षि के चले जाने के बाद, लक्ष्मी देवी ने विष्णु से कहा, "जब भृगु ने अपने पैर से मेरे निवास स्थान (आपके वक्षस्थल) के ऊपर प्रहार किया, तब उसे श्राप देने के बजाय, आपने उसकी सेवा

की। इसके कारण अब मैं इस वैकुंठ में नहीं रह सकती।" यह कहकर, लक्ष्मी देवी दु:खित होकर वैकुंठ छोड़कर करवीरपुर[1] में तपस्या करने लगीं। लक्ष्मी देवी के अनुपस्थिति नारायण को वैकुंठ में रहना अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने भी वैकुंठ त्याग दिया और मानव रूप धारण कर वेंकटाचल पर्वत पर आ गए। वहाँ, स्वामि पुष्करिणि के पास स्थित एक इमली वृक्ष के नीचे की वल्मीक[2] में नारायण निवास करने लगे। इस प्रकार, नारायण ने उस वल्मीक में दस हज़ार वर्ष बिता दिए। द्वापरयुग समाप्त हो चुका था, और अब कलियुग का 28वाँ वर्ष आरंभ हो चुका था। तब ब्रह्मा और शिव लक्ष्मी देवी के पास आए और ब्रह्मा बोले, "नारायण आपकी खोज में वल्मीक में रह रहे हैं। हम गाय और बछड़े का रूप धारण करेंगे। आप एक सामान्य स्त्री बनकर हमें चोल राजा को बेच देना, जो चंद्रगिरि पर शासन करते हैं। मैं प्रतिदिन नारायण को दूध दूँगा।" इस पर लक्ष्मी देवी ने सहमति दी।

शिव और ब्रह्मा गाय और बछड़े का रूप धारण कर लिया। तब लक्ष्मी देवी उन दोनों को लेकर चोलराज के पास पहुँचीं। लक्ष्मी देवी ने राजा से कहा, "हे राजन! यह गाय उत्तम नस्ल की है, और इसका दूध न केवल स्वादिष्ट है, बल्कि अत्यंत पौष्टिक भी है।" यह कहकर लक्ष्मी देवी ने गाय और बछड़े को राजा को बेच दिया। राजा ने इस गाय के बारे में अपनी पत्नी को बताया और गाय की देखभाल की ज़िम्मेदारी रानी को सौंप दी। रानी ने ग्वाले को बुलाकर आदेश दिया कि इस गाय का दूध अलग से दुहकर लाया जाए। ग्वाला प्रतिदिन इस गाय को अन्य गायों के साथ पहाड़ पर चराने ले जाता था। किंतु जब दुहने का समय आता, तो गाय के थनों में दूध नहीं होता था। रानी ने ग्वाले को बुलाकर पूछा, "तुम अब तक उस विशेष गाय का दूध क्यों नहीं लाए?" ग्वाले ने उत्तर दिया, "गाय के थनों में दूध नहीं होता है।" रानी ने उसे फटकार बताई, "उस गाय को तो दूध पीने वाले बछड़ा होने पर भी उसके थनों

(1) आधुनिक कोल्हापुर

(2) मिट्टी या रेत से बना टीला या ढेर, जो दीमकों का घर होता है।

से दूध क्यों प्राप्त नहीं होता है? निश्चित रूप से तुम ही उसका दूध पी जाते होंगे! यदि कल से तुम उस गाय का दूध लेकर नहीं आए, तो मैं तुम्हें दंडित करूँगी।"

ग्वाला जब गायों को चराने गया, तो उसने विशेष ध्यान से उस गाय का निरीक्षण किया। उसने देखा कि वह गाय एक वल्मीक के उपर खड़ी होकर उसमें दूध छोड़ रही है, जहाँ श्रीनिवास(1) विराजमान थे। ग्वाला क्रोधित होकर अपनी कुल्हाड़ी से गाय को मारने के लिए आगे बढ़ा। यह देखकर कि ग्वाला मुझे दूध देने वाली गाय को मारने जा रहा है, श्रीनिवास ने उसे रोकने का प्रयास किया। परंतु ग्वाला द्वारा मारी गई कुल्हाड़ी गाय पर न लगकर श्रीनिवास के मस्तक पर लगी, जिससे रक्त बहने लगा। ग्वाला जब अपने सामने श्रीनिवास के रूप में साक्षात नारायण को देखता है, तो भयभीत होकर तत्काल प्राण त्याग देता है।

इसके बाद गाय वहाँ से राजा के पास जाकर भूमि पर गिर पड़ी और जोर-जोर से रंभाने लगी। राजा, गाय की इस स्थिति को देखकर उसके पीछे-पीछे घटनास्थल पर पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि वल्मीक रक्त से सनी हुई है और ग्वाला मृत पड़ा है। राजा ने विस्मित होकर पूछा, "ग्वाले की मृत्यु का कारण क्या है? यह वल्मीक किसके रक्त से सनी है? इस भयानक घटना को किसने अंजाम दिया है?" तब श्रीनिवास ने नारायण के रूप में वल्मीक से बाहर निकलकर राजा को पूरी घटना का विवरण दिया। राजा ने तुरंत विनम्रता से श्रीनिवास से प्रार्थना की, "मेरे सेवक से जो अपराध हुआ है, उसे क्षमा करें।" इस पर श्रीनिवास ने कहा, "सेवक द्वारा किये गये अपराध के लिये स्वामी को ही जिम्मेदार माना जाता है। इसलिए तुम्हारे द्वारा किए गए इस अपराध के कारण मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि तुम राक्षस बनोगे।"

राजा ने श्रीनिवास से प्रार्थना की कि, "स्वामी! मैंने जो अपराध नहीं किया है, उसके लिए मुझे श्राप दिया गया है। कृपया इस श्राप से मेरी रक्षा

---

(1) भगवान नारायण का एक नाम

कीजिए।" तब श्रीनिवास ने राजा से कहा, "हे राजन! कुछ समय बाद इस क्षेत्र में आकाशराज का जन्म होगा, और वे अपनी पुत्री पद्मावती का विवाह मुझसे करेंगे। उस विवाह के अवसर पर मुझे जो स्वर्ण मुकुट भेंट किया जाएगा, उसे मैं प्रत्येक शुक्रवार की सायंकाल धारण करूँगा और जब मैं उससे आनंदित हो जाऊँगा। तभी तुम्हारा श्राप समाप्त हो जाएगा।" इस प्रकार श्रीनिवास ने राजा को अपने अवतार की भविष्य में होने वाली लीला का वर्णन किया। राजा ने श्रीनिवास को प्रणाम किया और वहाँ से विदा हुआ। श्रीनिवास ने अपनी चोट के उपचार हेतु बृहस्पति का स्मरण किया। तुरंत ही बृहस्पति वहाँ प्रकट हुए। श्रीनिवास ने उनसे पूछा, "इस घाव के लिए औषधि क्या हो सकती है?" बृहस्पति ने उत्तर दिया, "गुलर वृक्ष के दूध में अकौआ (आक) के पेड़ की रुई (फल के रेशों) को मिलाकर इसका लेप बनाइए और उसे घाव पर लगाइए।"

श्रीनिवास का वराह स्वामी से मिलन

जब श्रीनिवास अपनी चोट के उपचार हेतु औषधि की खोज में थे, तब उन्होंने वराह स्वामी के दर्शन किए। वराह स्वामी ने तुरंत पहचान लिया कि यह नारायण स्वयं हैं और उनसे पूछा, "आप यहाँ क्यों पधारे हैं?" तब श्रीनिवास ने पूरी घटना का वर्णन किया और वराह स्वामी से निवेदन किया कि उन्हें इस पर्वत पर कलियुग के अंत तक निवास करने की अनुमति दी जाए। वराह स्वामी ने कहा, "यदि आप उचित मूल्य (लक्ष्मी) देंगे, तो मैं आपको यह स्थान रहने के लिए दूँगा।" इस पर श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "इस समय मेरे पास लक्ष्मी देवी नहीं हैं। इसलिए, मैं आपको एक वचन देता हूँ कि कलियुग में जो भी भक्त मेरे दर्शन के लिए आएँगे, वे सबसे पहले आपके दर्शन करेंगे। मेरे अभिषेक, पूजा और नैवेद्य से पहले, आपके लिए ये सभी कर्म किए जाएँगे। यही मेरा आपको दिया जाने वाला मूल्य है।" वराह स्वामी इस प्रस्ताव से सहमत हो गए और श्रीनिवास को निवास के लिए सौ फुट भूमि प्रदान की। इसके बाद, वराह स्वामी ने वकुलमाता से कहा कि वे श्रीनिवास

के लिए प्रतिदिन भोजन की व्यवस्था करें, जैसे वे उनके लिए भोजन बनाती थीं।

यहाँ सूत गोस्वामी ने मुनियों से कहा, "नारायण ने कलियुग में पापी जीवों का उद्धार करने के लिए साधारण मानव की तरह अभिनय किया। यद्यपि श्रीनिवास और वराह स्वामी दोनों एक ही हैं, फिर भी उन्होंने भक्तिहीन लोगों को मोह में डालने और अपनी लीलाओं को सुनने वाले भक्तों को आनंदित करने के लिए ऐसा किया।"

वकुलमाता का पूर्वजन्म

द्वापरयुग में श्रीकृष्ण, राक्षसों का संहार करते हुए और गोपबालकों के साथ एक साधारण बालक की भाँति खेलते हुए, यशोदा माता को आनंदित करते थे। समय बीतने पर श्रीकृष्ण वृंदावन छोड़कर मथुरा चले गए। मथुरा से द्वारका जाकर उन्होंने कई रानियों से विवाह किया। एक बार यशोदा माता ने कृष्ण से दुःखी होकर कहा, "हे कृष्ण! मैं तुम्हारी बाल लीलाओं को देखकर आनंदित तो हुई, लेकिन तुम्हारे विवाहों में से एक भी नहीं देख सकी।" तब श्रीकृष्ण ने यशोदा माता को वचन दिया, "माँ! जब आप इस शरीर को छोड़ोगी, तब वकुलमाता के रूप में जन्म लोगी और वेंकटाचल पर स्थित वराह स्वामी की सेवा करोगी। मैं वैकुंठ से श्रीनिवास के रूप में वहाँ आऊँगा। तब आप ही मेरा विवाह कराओगी।" इस प्रकार, यशोदा माता ने वकुलमाता के रूप में जन्म लिया और वराह स्वामी की सेवा में तत्पर रहने लगीं।

श्रीनिवास का पद्मावती देवी से मिलन

श्रीनिवास वेंकटाचल पर वकुलमाता की सेवा स्वीकार कर सुखपूर्वक समय बिता रहे थे। एक दिन, उन्होंने शिकार पर जाने का निश्चय किया। जैसे ही उन्होंने मन में सोचा, वायु देवता एक घोड़े के रूप में प्रकट हुए और श्रीनिवास के पास आए। श्रीनिवास वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर धनुष-बाण धारण कर शिकार के लिए निकले। उन्होंने कई जानवरों,

शेरों, बाघों, लोमड़ियों, हाथियों, सरभृंगों, और जंगली सूअरों का शिकार किया। इसके बाद, वे एक हाथी का पीछा करने लगे। वह हाथी श्रीनिवास के समक्ष साष्टांग प्रणाम कर जान बचाने की प्रार्थना करने लगा। श्रीनिवास ने दया करके उसे छोड़ दिया। वहीं पास में, एक पुष्पवाटिका में पद्मावती देवी अपनी सखियों के साथ फूल चुन रही थीं। श्रीनिवास ने उन्हें देखा और उनके पास गए। वे उनके पास पहुँचे, तब पद्मावती की सहेलियाँ उनसे पूछने लगीं, "आप कौन हैं? यहाँ क्यों आए हैं?"

तब श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "मुझे कृष्ण कहकर पुकारा जाता है। मेरे भाई बलराम, मेरी बहन सुभद्रा, मेरे पिता वसुदेव और मेरी माता देवकी हैं। मैं श्यामवर्ण का हूँ और कृष्ण पक्ष में जन्मा हूँ, इसलिए मेरा नाम कृष्ण पड़ा है।" इसके बाद उन्होंने पद्मावती देवी से पूछा, "आपका नाम और वंश क्या है?" पद्मावती देवी ने उत्तर दिया, "मेरा नाम पद्मावती है, मेरे पिता आकाशराज हैं। हमारा वंश चंद्रवंश है और गोत्र अत्रि मुनि का है। हे वनराज! अब आप यहाँ से जा सकते हो।" श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "हे राजकुमारी! इतना क्रोध क्यों? पथिकों की प्यास बुझाने वाले और अन्नदान करने वाले स्वर्ग प्राप्त करते हैं। भले ही भोजन न कराएँ, परंतु उनसे नम्रतापूर्वक बोलने से पुण्य मिलता है। मैं अब तुम्हारे प्रति प्रेमासक्त हो चुका हूँ। मेरी इच्छा पूरी करके, तुम स्वर्ग जाओगी।" इस पर पद्मावती देवी ने श्रीनिवास को फटकारते हुए कहा, "हे दुष्ट! क्या तुम्हें प्राणों की चिंता नहीं है? मेरे पिताश्री के आने से पहले ही यहाँ से चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा अंत निश्चित है।"

श्रीनिवास ने कहा, "हे राजकुमारी! राजा मुझे अधर्मपूर्वक क्यों दंड देंगे? तुम अविवाहित हो, और मैं तुम्हारे योग्य वर हूँ। मैं तुमसे शादी के लिए प्रस्ताव रखूँ उसमें मेरा कोई दोष नहीं है।" पद्मावती ने क्रोधित होकर कहा, "हे मूर्ख! मेरे पिताश्री आकाशराज अवश्य ही तुम्हें दंड देंगे।" श्रीनिवास ने शांत स्वर में कहा, "जो जन्मा है, उसकी मृत्यु निश्चित है। पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार शुभ और अशुभ फल प्राप्त होते हैं। मैंने

कोई अपराध नहीं किया है, तो राजा आकाशराज मुझे क्यों दंड देंगे?" पद्मावती ने उत्तर दिया, "हे वनराज! माता-पिता और बंधु-बांधवों को छोड़कर, तुम कौए की तरह क्यों मरना चाहते हो?" परंतु श्रीनिवास ने पद्मावती देवी की बातें अनसुनी कर दीं और अपने घोड़े पर सवार होकर उनके नजदीक जाने लगे। अचानक हुई इस घटना से भयभीत होकर पद्मावती देवी ने श्रीनिवास पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। उनकी सहेलियाँ भी पत्थर मारने लगीं।

इन पत्थरों की चोट से श्रीनिवास का घोड़ा मर गया और स्वयं श्रीनिवास को भी गहरी चोटें आईं। ताकि लोग उन्हें एक साधारण मानव समझते रहें, इसलिए श्रीनिवास वहाँ से लौटकर वेंकटाचल आ गए और विश्राम करने लगे।

इसके बाद, मुनियों ने सूत गोस्वामी से पूछा, "वह पद्मावती देवी कौन हैं? उनके जन्म की कथा बताइए।" तब सूत गोस्वामी ने पद्मावती देवी के जन्म के विषय में विस्तार से बताना आरंभ किया।

पद्मावती देवी का जन्म

महाभारत युद्ध के एक हज़ार वर्ष बाद, सुधर्म नामक राजा समस्त भूमि पर शासन कर रहे थे। सुधर्म के आकाशराज और तोंडमान नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए, दोनों नारायण के भक्त थे। आकाशराज का विवाह धरणी देवी नामक राजकन्या से हुआ। कई वर्षों तक संतान न होने के कारण, आकाशराज ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ करने का निश्चय किया। यज्ञ के लिए भूमि जोतते समय जब उनको एक बालिका मिली, तब आकाशवाणी हुई कि, "हे राजन! इस बालिका को अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार करो। इस बालिका के कारण आपकी कीर्ति जगभर में फैलेगी।" राजा ने प्रसन्न होकर पद्म में उत्पन्न होने के कारण बालिका का नाम, पद्मावती रखा और उसका अपनी पुत्री के रूप में पालन किया। उस बालिका की कृपा से, आकाशराज को एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, जिसका नाम वसुदास रखा गया।

पद्मावती देवी का पूर्वजन्म

वकुलमाता स्वादिष्ट पदार्थों को भोजन के लिए तैयार करके श्रीनिवास के पास आई और बोली, "गोविंदा! तुम दिन के समय क्यों सो रहे हो? जागो! तुम दुःखी क्यों हो? तुम्हारे दुःख का कारण क्या है? क्या तुम जंगल में भूत-प्रेतों को देखकर डर गए हो? या फिर तुम जानवरों से डरते हो? तुम्हारे शरीर पर इतने घाव क्यों हैं? क्या तुम ने जंगल में किसी कन्या को देखा है? यदि देखा है, तो वह भाग्यशाली कन्या कौन है? जो तुम्हारे मन को हर ले गई है, उसके बारे में मुझे बताओ।"

तब श्रीनिवास ने लक्ष्मी देवी के समान दिखने वाली पद्मावती देवी के बारे में इस प्रकार बताया, "जब मैंने त्रेतायुग में श्रीराम के रूप में अवतार लिया, तब मेरे पिता की आज्ञा से सीता और लक्ष्मण के साथ चौदह वर्षों का वनवास किया। मेरे और लक्ष्मण की अनुपस्थिति में रावण ने सीता देवी का अपहरण कर लिया, और जब वह सीता देवी को लेकर जा रहा था, तभी अग्निदेव अपने वाहन भेड़ पर सवार होकर वहाँ प्रकट हुए और रावण से कहा, 'हे रावण! तुम सीता देवी को नहीं ले जा रहे हो। वह एक ब्राह्मण स्त्री है।' राम ने तुम्हारे भय से सीता देवी को मेरे पास छिपा दिया है। सीता देवी को मेरे पास से ले लो और ब्राह्मण स्त्री को छोड़ दो।' रावण ने अग्नि देवता की बात मान ली और सीता देवी को छोड़कर अग्नि देवता के पास स्थित वेदवती को ले गया।

"रावणासुर वध के बाद, जब वेदवती अग्नि में प्रवेश कर रही थी, तब अग्नि से असली सीता प्रकट हुई और उसने मुझे पिछले घटनाक्रम के बारे में बताया और वेदवती से विवाह करने का अनुरोध किया। तब मैंने उत्तर दिया, 'मैंने राम अवतार में केवल एक पत्नी से ही विवाह करने की प्रतिज्ञा की है, इसलिए अब मैं उनसे विवाह नहीं कर सकता। कलियुग में वेदवती जब आकाशराज के घर जन्म लेंगी, तब मैं उनसे विवाह करूँगा। तब तक वेदवती ब्रह्मलोक में ब्रह्मदेव की पूजा स्वीकार करती रहेंगी।' इसके बाद, वेदवती ब्रह्मलोक चली गईं। वही वेदवती अब

आकाशराज के पुत्रकामेष्टि यज्ञ में, यज्ञभूमि को जोतते समय एक पद्म में मिलीं। चूंकि वह एक पद्म में मिली थीं, इसलिये आकाशराज ने उस बालिका का नाम पद्मावती देवी रखा।"

वराह पुराण में वेदवती के बारे में इस प्रकार वर्णन है:

वेदवती नारायण से विवाह के लिए तपस्या कर रही थीं। उसी समय लंका के राजा रावण ने, जिसने सभी दिशाओं के अधिपति और पृथ्वी पर राज्य करने वाले सभी राजाओं को जीत लिया था, वेदवती को तपस्या करते हुए देखा। रावण वेदवती के पास गया और कहने लगा, "हे कल्याणी! तुम्हारी तपस्या और सौंदर्य में कोई मेल नहीं बैठता। मैंने चौदह लोकों को जीत लिया है। इन्द्र सहित सभी देवता मेरे सेवक हैं। त्रिमूर्ति मुझसे डरते हैं। अब तीनों लोक मेरे अधीन हैं। मैंने इन सब लोकों की यात्रा की, लेकिन तुम्हारे जैसी सुंदर कन्या को कहीं नहीं देखा। तुम्हें देखते ही मेरा मन काम से उत्तेजित हो गया है। तुम इस तपस्या को छोड़ दो, ताकि तुम्हारा यौवन व्यर्थ न जाए। तुम मुझे विवाह के लिए स्वीकार करो और मेरी लंका के राज्य को समृद्ध करो। तुम्हें चौदह लोकवासियों की सेवा प्राप्त होगी।"

वेदवती ने रावण की बातें सुनकर क्रोध और भय से परिपूर्ण होकर साहस जुटाते हुए उत्तर दिया, "हे राक्षस राज! मैंने नारायण के अतिरिक्त किसी अन्य से विवाह न करने का व्रत लिया है। इसलिए मैं नारायण के लिए तपस्या कर रही हूँ। यदि नारायण मुझसे विवाह नहीं करेंगे, तो मैं अपने प्राणों का त्याग कर दूँगी, पर किसी और से विवाह नहीं करुँगी। अत: तुम अपने मार्ग पर चले जाओ।"

रावण जोर से हंसकर बोला, "हे मूर्ख स्त्री! नारायण मेरा नाम सुनते ही भयभीत हो जाता हैं। मैं तुम्हें स्वयम् प्रस्ताव दे रहा हूँ और तुम मना कर रही हो ? मैं तुम से बलपूर्वक विवाह करूँगा और देखूँगा कि मुझे कौन रोकता है।" यह कहकर रावण ने वेदवती के निकट जाकर

उसके केश पकड़ लिए। वेदवती ने अपने तपोबल से अपने हाथ को खड्ग के रूप में बदलकर अपने केश काट दिए और रावण से कहा, "हे पापात्मा! जो स्त्री तुमसे विवाह में रुचि नहीं दिखा रही है, उसे बलपूर्वक क्यों ले जाना चाहते हो? मेरे कारण तुम और तुम्हारा वंश समाप्त हो जाएगा।" यह कहते हुए वेदवती ने अग्नि में प्रवेश कर लिया। वही वेदवती अग्नि देवता ने रावण को दी थी।

वकुलमाता का पद्मावती देवी की सखियों से मिलना

श्रीनिवास ने वकुलमाता से कहा, "मैं पद्मावती से विवाह करना चाहता हूँ। अतः कृपया आप पद्मावती के माता-पिता के पास जाकर मेरे विवाह की व्यवस्था करें।" वकुलमाता ने श्रीनिवास से कहा, "स्वामी, जैसा आपने कहा, मैं वैसे ही आपके विवाह की व्यवस्था करुँगी।" यह कहकर, वह मादा घोड़े पर सवार हो गई और श्रीनिवास द्वारा बताए गए मार्ग पर निकल पड़ी। वकुलमाता ने पहले कपिलतीर्थ में स्नान किया और कपिलेश्वर के दर्शन किए। वहाँ उन्होंने प्रार्थना की कि उनके पुत्र का विवाह हो जाए। वहाँ से, वकुलमाता ने पद्मसरोवर में स्नान किया और वहाँ स्थित कृष्ण-बलराम मंदिर(1) में जाकर, कृष्ण-बलराम की कमल के फूलों से पूजा की। वहाँ से वकुलमाता सुवर्णमुखारी नदी गईं और उसमें स्नान करके पवित्र हुई।

वकुलमाता सुवर्णमुखारी नदी से प्रस्थान करके, अगस्त्य-आश्रम पहुँची और वहाँ अगस्त्येश्वर के दर्शन किए। उसी समय, पद्मावती देवी की सखियाँ भी वहाँ पर आईं। वकुलमाता उनके पास गई और उनसे पूछा, "आप कौन हैं? यहाँ क्यों आई हैं?" उन कन्याओं ने उत्तर दिया, "हम पद्मावती देवी की सखियाँ हैं" और फिर उन्होंने पुष्पवाटिका में घटित घटनाओं का विवरण दिया। आगे उन्होंने कहा: "जब वह किरातक (शिकारी) वहाँ से चला गया, तब पद्मावती देवी मूर्छित होकर भूमि पर

(1) यह कृष्ण और बलराम का मंदिर वही था, जो अभी भी पद्मावती देवी के मंदिर में स्थित है।

गिर पड़ीं। हम पद्मावती देवी को पालकी में उठाकर आकाशराज के पास ले गए और सारी घटनाएँ बताईं। तब आकाशराज ने अपने पुत्र वसुदास से कहा, 'बृहस्पति को यहाँ लेकर आओ।' वसुदास स्वर्ग गया और बृहस्पति को लेकर आया। आकाशराज ने बृहस्पति की अतिथि सेवा की और उनसे पद्मावती के स्वस्थ होने का उपाय पूछा। तब बृहस्पति ने सुझाव दिया कि आप अगस्त्येश्वर की अभिषेक सेवा करें। आकाशराज ने ब्राह्मणों से कहा, 'अगस्त्येश्वर की अभिषेक सेवा करें' और उसके लिए आवश्यक व्यवस्था करने का हमको निर्देश दिया। इसलिए हम अभिषेक पूजा के लिए आवश्यक सामग्री लेकर यहाँ आईं हैं।"

इसके बाद, पद्मावती देवी की सखियों ने वकुलमाता से पूछा, "आप कौन हैं ? कहाँ से आ रही हैं ? यहाँ आने का क्या कारण है ?" वकुलमाता ने उत्तर दिया, "पुराण पुरुष और जन्मरहित नारायण के प्रभाव से तुम अपरिचित हो। वही नारायण अब वेंकटाचल पर्वत पर एक साधारण मानव के रूप में निवास कर रहे हैं। मैं उन्हीं नारायण की सेवा करती हूँ। मेरा नाम वकुला है। मैं पद्मावती देवी की माता धरणी देवी से मिलने आई हूँ। कृपया मुझे उनसे मिलने का मार्ग बताएँ।" पद्मावती देवी की सखियों ने कहा, "आप हमारे साथ आकर धरणी देवी से मिल सकती हैं।" वकुलमाता ने सहमति व्यक्त की और उनके साथ चल पड़ीं।

श्रीनिवास का महिला ओझा का वेश धारण करना

वकुलमाता का आकाशराज के पास विवाह प्रस्ताव लेकर प्रस्थान करने के बाद, श्रीनिवास को विचार आया कि, "केवल एक ही पुत्र होने वाला संतानहीन होने के समान है, और केवल एक ही आँख वाला व्यक्ति अंधे के समान है। इसी प्रकार, केवल अकेली स्त्री द्वारा किए गए कार्य सफल नहीं होते। संभव है कि वकुलमाता द्वारा कही गई बातें आकाशराज को विश्वास योग्य न लगें।" यह विचार कर, उन्होंने ब्रह्मदेव को एक बालक के रूप में रूपांतरित किया और शिव को मन्त्रछड़ी बनाया। बादमें स्वयं एक महिला ओझा(1) का वेश धारण किया। महिला

(1) स्त्री तांत्रिक या जादू-टोना, झाड़-फूंक करने और हाथ देखने वाली महिला

ओझा के वेश में श्रीनिवास बालक रूपी ब्रह्मा और मन्त्रछड़ी रूपी शिव को लेकर आकाशराज के राज्य नारायणपुर में पहुँचे।

नारायणपुर के लोगों को सुनाई देने वाले स्वर में वह स्त्री कहने लगी, "मैं किसी के भी भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में बता सकती हूँ।" नगर की एक स्त्री यह सुनकर धरणी देवी के पास गई और उस महिला ओझा के बारे में बताया। धरणी देवी ने उसे बुलाया और उससे पद्मावती देवी के विषय में पूछने को कहा। पद्मावती देवी का हाथ देखकर उस महिला ओझा ने धरणी देवी से कहा, "आपकी पुत्री ने कुछ दिनों पहले पुष्पवाटिका में एक युवक को देखा है और उससे प्रेम करने लगी। वह उससे विवाह करना चाहती है, लेकिन यह सोचकर कि आप सहमत नहीं होंगे इसलिये, उसने आपको यह बात नहीं बताई और इस कारण से वह नींद और आहार छोड़कर दु:खी हो रही है। यदि आप तुरंत उस युवक से पद्मावती का विवाह नहीं कराएँगी, तो आपकी पुत्री जीवित नहीं रह पाएगी। वह युवक कोई साधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि वैकुंठ के भगवान नारायण हैं। यदि आप नारायण से अपनी पुत्री का विवाह कराएँगी, तो उसकी मानसिक पीड़ा समाप्त हो जाएगी।" यह कहकर महिला ओझा वहाँ से चली गई। उसके जाने के बाद, धरणी देवी ने पद्मावती के पास जाकर उसे सांत्वना दिया और कहा, "मैं आपकी इच्छा अनुसार ही करुँगी। तुम दु:खी मत हो।"

वकुलमाता का धरणी देवी से मिलना

पद्मावती देवी की सखियाँ धरणी देवी के पास जाकर वकुलमाता के आगमन के बारे में बताती हैं। धरणी देवी वकुलमाता का आदरपूर्वक आतिथ्य करती हैं और पूछती हैं, "आप कौन हैं? और कहाँ से आई हैं?" वकुलमाता ने उत्तर दिया, "मैं वेंकटाचल पर्वत पर वराह स्वामी और नारायण की सेवा करती हूँ।" उन्होंने पुष्पवाटिका में घटित घटना का विवरण भी दिया और कहा, "नारायण आपकी पुत्री से विवाह करना चाहते हैं। अत:, उन्होंने मुझे आपका अभिप्राय जानने के लिए भेजा है।"

धरणी देवी ने वकुलमाता से कहा, "मैं अपने पति से परामर्श करके आपको उत्तर दूँगी।"

इसके बाद धरणी देवी आकाशराज के पास जाकर वकुलमाता और महिला ओझा द्वारा बताए गए सारे विषयों का उल्लेख करती हैं। आकाशराज ने बृहस्पति को बुलाकर उनसे वकुलमाता और महिला ओझा द्वारा बताई बातों पर चर्चा की और श्रीनिवास के बारे में जानकारी माँगी। बृहस्पति ने उत्तर दिया, "श्रीनिवास के बारे में मुझसे अधिक शुकदेव[1] जानते हैं। अतः, आप शुकदेव से पूछें।" आकाशराज ने तोंडमान को बुलाकर शुकदेव को आमंत्रित करने के लिए भेजा। तोंडमान ने जाकर शुकदेव के समक्ष आकाशराज का आमंत्रण प्रस्तुत किया। शुकदेव तोंडमान के साथ आए, और आकाशराज ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और उन्हें अतिथिगृह में ले जाकर सम्मानपूर्वक आसन पर बिठाया। वह शुकदेव से वकुलमाता और महिला ओझा द्वारा बताए गए विषयों पर चर्चा करते हैं और श्रीनिवास के बारे में जानकारी माँगते हैं। शुकदेव ने वैकुंठ में घटी घटना और नारायण का वेंकटाचल आने का कारण बताया। इसके बाद उन्होंने आकाशराज से कहा, "आप अत्यंत सौभाग्यशाली हैं। अपने पूर्वजन्म के पुण्य के फलस्वरूप नारायण स्वयं आपके दामाद बनने जा रहे हैं। हे राजन्! आपकी मित्रता के कारण हम भी इस सौभाग्य के सहभागी बने हैं।"

आकाशराज द्वारा श्रीनिवास को विवाह पत्र लिखना

आकाशराज ने बृहस्पति से परामर्श किया और पूछा कि श्रीनिवास को शुभपत्र कैसे लिखें। तब बृहस्पति ने सुझाव दिया: "दिव्य, मंगलमय स्वरूप वाले, सभी शुभ गुणों से युक्त, सनातन (जन्म-मरण से परे), स्वतंत्र (किसी के अधीन नहीं) और अनेक अवतार धारण करने वाले नारायण के चरणों की सेवा करने का उत्साह रखने वाला मैं आकाशराज, जो आपकी कृपा से नारायणपुर का शासन करता हूँ। मैं अपनी पुत्री

(1) महर्षि व्यासदेव के पुत्र शुकदेव गोस्वामी

पद्मावती का विवाह आपसे करने का निश्चय कर चुका हूँ। अतः, कृपया वैशाख शुक्ल दशमी, शुक्रवार के शुभ मुहूर्त में अपने बंधु-बांधवों के साथ पधारकर पद्मावती से विवाह करें।"

आकाशराज ने बृहस्पति के निर्देशानुसार यह पत्र लिखा और इसे शुकदेव को सौंपते हुए प्रार्थना की, "आप वकुलमाता और अपने शिष्यों के साथ वेंकटाचल जाकर यह शुभपत्र श्रीनिवास को प्रदान करें।" शुकदेव ने सहमति व्यक्त की और वेंकटाचल जाकर सारी घटनाएँ श्रीनिवास को बताईं और आकाशराज का लिखा हुआ शुभ संदेश श्रीनिवास को सौंप दिया। श्रीनिवास वह शुभ संदेश पढ़कर अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने शुकदेव को आलिंगन करते हुए कहा, "जिस प्रकार हनुमान ने मुझे सीता का समाचार दिया था, और तब मैंने उन्हें आलिंगन कर ब्रह्मपद प्रदान किया था, उसी प्रकार मैं तुम्हें भी आशीर्वाद देता हूँ।"

श्रीनिवास द्वारा आकाशराज को उत्तर पत्र लिखना

तत्पश्चात, श्रीनिवास ने शुकदेव से कहा, "मैं इंद्र के मित्र आकाशराज को उसी प्रकार पत्र लिखूँगा, जैसे मैंने पहले रुक्मिणी को लिखा था।" उन्होंने पत्र में लिखा: "राजाओं द्वारा पूजित सुधर्म के पुत्र आकाशराज को मैं श्रीनिवास, भक्तिपूर्ण प्रणाम करता हूँ और यह पत्र लिख रहा हूँ। आपके द्वारा भेजा गया शुभपत्र पढ़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। वैशाख शुक्ल दशमी, शुक्रवार को आपने जो शुभ मुहूर्त निर्धारित किया है, उस दिन मैं अवश्य पधारकर पद्मावती से विवाह करूँगा। जिस प्रकार समुद्र ने अपनी पुत्री (लक्ष्मी) को मुझे समर्पित कर यश प्राप्त किया था, उसी प्रकार आप भी अपनी पुत्री पद्मावती को मुझे अर्पित करके इस लोक में यश प्राप्त करेंगे। जैसे भगीरथ ने गंगा को धरती पर लाकर कपिल मुनि के श्राप से श्रापित सगरपुत्रों का उद्धार किया था, वैसे ही आप भी अपनी सुंदर पुत्री को मुझे अर्पित कर अपने पितरों का उद्धार करेंगे और अतुलनीय कीर्ति प्राप्त करेंगे।" श्रीनिवास ने यह पत्र शुकदेव को सौंपा और उन्हें आकाशराज तक पहुँचाने के लिए भेजा।

श्रीनिवास द्वारा देवताओं को विवाह में आमंत्रित करना

श्रीनिवास ने वकुलमाता से कहा, "आकाशराज अपने बंधु-बांधवों के साथ हैं। मनुष्य समानता रखने वाले लोगों के साथ ही विवाह या किसी विवाद में शामिल होना पसंद करते हैं। मैं यहाँ अकेला हूँ, बंधु-बांधवों से दूर। इसलिए हमें भी विवाह के लिए अपने बंधु-बांधवों के साथ जाना चाहिए।" इसके बाद, श्रीनिवास ने गरुड़ और आदिशेष का स्मरण किया, और वे तुरंत प्रकट हुए। श्रीनिवास ने गरुड़ से कहा, "तुम तुरंत ब्रह्मा जी के पास जाओ और उन्हें मेरे विवाह का शुभपत्र देकर कहो कि वे अपने बंधु-बांधवों सहित मेरे विवाह में सम्मिलित हों।" आदिशेष से उन्होंने कहा, "तुम कैलाश जाओ और शिवजी को मेरे विवाह का शुभपत्र देकर अपने बंधु-बांधवों सहित विवाह में आने का निमंत्रण दो।" गरुड़ और आदिशेष ने उनके आदेश का पालन किया और निमंत्रण पहुँचाया।

ब्रह्मा ने अपने लोक में घोषणा की कि नारायण के विवाह में सभी को उपस्थित होना चाहिए। उन्होंने इंद्र, कुबेर, वरुण, यमराज जैसे दिक्पालों को बुलाकर आदेश दिया कि वे भी अपने बंधु-बांधवों सहित विवाह में सम्मिलित हों। ब्रह्मा अपनी पत्नियों (सरस्वती, सावित्री, गायत्री) और दिक्पालों के साथ शेषाचल पहुँचे और श्रीनिवास के चरणों में प्रणाम किया। शिवजी भी कैलाश से अपने बंधु-बांधवों सहित आए और श्रीनिवास को प्रणाम किया।

ब्रह्मा की इच्छा से विश्वकर्मा ने सभी अतिथियों के लिए निवास की व्यवस्था की। इसके बाद, श्रीनिवास ने विश्वकर्मा को नारायणपुर जाने और विवाह मंडप का निर्माण करने का निर्देश दिया।

लक्ष्मी देवी का श्रीनिवास के विवाह में आना

श्रीनिवास ने अपने मन में सोचा कि उनका विवाह लक्ष्मी देवी को भी देखना चाहिए। उन्होंने सूर्यदेव को बुलाया और कहा,

"करवीरपुर (कोल्हापुर) में मेरे लिए तपस्या कर रही लक्ष्मी देवी के पास जाओ और उन्हें बताओ कि मैं शेषाचल पर्वत पर भूख के कारण दुर्बल होकर भूमि पर गिर पड़ा हूँ। यह सुनते ही वह यहाँ आ जाएँगी।" सूर्यदेव ने उत्तर दिया,

"स्वामी, लक्ष्मी देवी सभी के मन की बात जानती हैं। यदि मैं उन्हें यह कहूँ कि आप भूख के कारण दुर्बल होकर भूमि पर पड़े हैं, तो वह मेरी बात पर कैसे विश्वास करेंगी?" श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "मेरी माया के प्रभाव से वह तुम्हारी बात पर विश्वास करके यहाँ आ जाएँगी।" सूर्यदेव ने कहा, "स्वामी, मैं वैसा ही करूँगा जैसा आपने कहा।" सूर्यदेव लक्ष्मी देवी के पास गए और कहा, "नारायण भूख के कारण दुर्बल होकर भूमि पर गिर पड़े हैं।" यह सुनकर लक्ष्मी देवी ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और तुरंत वेंकटाचल पहुँचीं। लक्ष्मी देवी को देखकर सभी ऋषि-मुनियों और देवताओं ने उन्हें प्रणाम किया। लक्ष्मी देवी ने श्रीनिवास को प्रणाम किया और उनका आलिंगन किया। श्रीनिवास ने लक्ष्मी देवी से कहा, "रामावतार के समय, तुमने वेदवती से विवाह करने के लिए मुझसे कहा था। वही वेदवती अब पद्मावती के रूप में जन्मी हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी उपस्थिति में मैं पद्मावती से विवाह करूँ।" लक्ष्मी देवी ने प्रसन्नतापूर्वक सहमति दे दी।

श्रीनिवास का कुबेर से ऋण लेना

श्रीनिवास ने ब्रह्मा जी से कहा, "आए हुए सभी लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करें।" ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया, "स्वामी, यहाँ भोजन पकाने के लिए आवश्यक सामग्री या पात्र उपलब्ध नहीं हैं।" श्रीनिवास ने कहा, "मैं अभी साधारण मनुष्य के रूप में हूँ, इसलिए मैं वैकुंठ में स्थित अपने धन का उपयोग भूलोक में नहीं कर सकता।" ब्रह्मा जी ने सुझाव दिया, "स्वामी, विवाह या गृह निर्माण के समय यदि धन की कमी हो तो साधारण मनुष्य ऋण लेते हैं। इसी प्रकार आप भी कुबेर से ऋण लें।" श्रीनिवास ने उनकी बात मान ली और कुबेर को बुलाकर विवाह के खर्च

के लिए ऋण माँगा। कुबेर ने कहा, "यह भूलोक है, इसलिए आपको मुझे लिखित पत्र देना होगा, तभी मैं धन प्रदान करूँगा।"

श्रीनिवास ने सहमति व्यक्त की और लिखा, "ऋण लेने वाला: श्रीनिवास, ऋण देने वाला: कुबेर। कलियुग के विलंब नामक वर्ष, वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि के दिन मैं अपने विवाह के लिए श्रीराम मुद्रा में 14 लाख माडल (सोने के सिक्के) ऋण स्वरूप ले रहा हूँ। इस धन को मूल और ब्याज सहित 1,000 वर्षों के भीतर लौटाने का वचन देता हूँ। इसके साक्षी ब्रह्मा, रुद्र और एक पीपल का वृक्ष हैं।" श्रीनिवास ने यह लिखित पत्र कुबेर को दिया। कुबेर ने धन प्रदान किया। ब्रह्मा जी ने उस धन से आवश्यक सामग्री मंगाई और भोजन तैयार किया। इसके बाद ब्रह्मा जी ने श्रीनिवास से पूछा, "हे श्रीनिवास! इस भोजन का नैवेद्य किसे अर्पित करना है?" श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "अहोबिल नरसिंह स्वामी को नैवेद्य अर्पित करें।" ब्रह्मा जी ने नरसिंह स्वामी की पूजा कर नैवेद्य अर्पित किया और आए हुए सभी लोगों में वह प्रसाद वितरित किया।

श्रीनिवास का नारायणपुर पहुँचना

श्रीनिवास का मंगल स्नान विभिन्न सुगंधित द्रव्यों से संपन्न किया गया। उन्हें सुंदर वस्त्र और आभूषण पहनाकर वर के रूप में सजाया गया। अप्सराओं ने नृत्य किया, गंधर्वों ने गायन किया, देवताओं ने पुष्प वर्षा की, और ऋषि-मुनियों ने वेदों का पाठ किया। इसके बाद, श्रीनिवास वराहस्वामी के पास गए और बोले, "स्वामी, आपके आशीर्वाद से मैं विवाह करने जा रहा हूँ। कृपया आप भूदेवी के साथ मेरे विवाह में पधारें।" वराहस्वामी ने उत्तर दिया, "मेरी सेविका वकुला तुम्हारे विवाह में आएगी।" श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "मैं आपकी इच्छा को अस्वीकार नहीं कर सकता।" फिर, वे वहाँ से लक्ष्मी देवी को साथ लेकर गरुड़ पर सवार होकर नारायणपुर जाने के मार्ग में स्थित पद्म सरोवर के तट पर पहुँचे।

पद्म सरोवर पर शुकदेव का आश्रम था। शुकदेव श्रीनिवास के पास आए, प्रणाम किया, और प्रार्थना की, “हे वैकुंठपति! कृपया मेरे आश्रम में पधारें और मेरे आतिथ्य को स्वीकार कर मेरे जीवन को सार्थक करें।” श्रीनिवास ने कहा, “मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे परिवार और अनुयायी हैं।” शुकदेव ने उत्तर दिया, “स्वामी, यदि आप संतुष्ट हैं, तो चौदहों लोक के निवासी संतुष्ट हो जाते हैं। अतः कृपया आप मेरे आतिथ्य को स्वीकार करें।” श्रीनिवास ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और उनके आश्रम में पधारे। शुकदेव ने पद्म सरोवर में स्नान किया, स्वादिष्ट भोजन तैयार किया, और लक्ष्मी देवी तथा श्रीनिवास को अर्पित किया। लक्ष्मी देवी तथा श्रीनिवास ये भोग ग्रहण करके नारायणपुर के लिए आगे बढ़े।

पद्मावती देवी और श्रीनिवास का विवाह

लक्ष्मी देवी तथा श्रीनिवास के नारायणपुर पहुँचने की सूचना मिलते ही तोंडमान अपनी पत्नी और ब्राह्मणों के साथ उनका स्वागत करने पहुँचे। उन्होंने श्रीनिवास को प्रणाम कर उनका अभिनंदन किया। तोंडमान की पत्नी ने श्रीनिवास को बुरी दृष्टि से बचाने के लिए उनकी आरती उतारी। तोंडमान ने श्रीनिवास को लेकर आकाशराज के महल में प्रवेश किया और उन्हें एक स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान किया। आकाशराज ने श्रीनिवास के चरणों में प्रणाम किया। धरणी देवी ने श्रीनिवास के चरणों पर स्वामि पुष्करिणि के जल से अभिषेक किया, और आकाशराज ने स्वयं उनके चरण धोकर जल को अपने सिर पर छिड़क लिया। इस जल को उन्होंने अपने परिवारजनों, सेवकों, खजाने, गौशाला, हाथीशाला, अश्वशाला, और वस्त्रशाला पर भी छिड़कते हुए कहा, “श्रीनिवास के चरणोदक से आज मेरा राज्य, परिवार, पितृदेवता और संपत्ति सब पवित्र हो गए हैं।”

इसके पश्चात बृहस्पति ने श्रीनिवास से कहा, “अत्रि महर्षि के गोत्र में उत्पन्न सुधीर की प्रपौत्री और सुधर्म की पौत्री, आकाशराज की कन्या

पद्मावती को आप पत्नी रूप में स्वीकार करें।" वसिष्ठ मुनि ने श्रीनिवास के पक्ष से उत्तर दिया,

"वसिष्ठ गोत्र में जन्मे, ययाति के प्रपौत्र, तेजस्वी सूरसेन के पौत्र, और वसुदेव के पुत्र श्रीनिवास, आपकी पद्मावती देवी को पत्नी रूप में स्वीकार करेंगे।" आकाशराज ने श्रीनिवास से प्रार्थना की, "हे पुरुषोत्तम! मैं अपनी कन्या को आपको अर्पित करता हूँ। कृपया इसे स्वीकार करें।" उन्होंने पद्मावती देवी को श्रीनिवास के दाहिने हाथ में सौंप दिया। विवाह के समय वसिष्ठ मुनि ने वैदिक मंत्र पढ़े, और पवित्र मंत्रोच्चार के बीच श्रीनिवास ने पद्मावती देवी के गले में मंगलसूत्र बाँधा। इस दौरान ब्राह्मण स्त्रियों ने पद्मावती देवी को आशीर्वाद दिया, "हे देवी, सावित्री के समान अनेक पुत्रों को जन्म देकर समस्त लोक की माँ बनो और सबके लिए कल्याणकारी बनो।"

नारायणपुर में पद्मावती देवी और श्रीनिवास का विवाह जहाँ हुआ था, वहाँ अब पद्मावती देवी और वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर स्थित है, जो तिरुपति से 40 किलोमीटर की दूरी पर है।

विवाह के उपलक्ष्य में आकाशराज ने करोड़ों की संख्या में गौएँ, घोड़े, वस्त्र, आभूषण, और धन ब्राह्मणों को दान में दिए। उन्होंने श्रीनिवास को दहेज़ के रूप में सोने का शतभार मुकुट, कंठाभरण, मणियों के आभूषण, दोनों भुजाओं के लिए नागाभरण, अगुठियाँ, सोने का कमरपट्टा, और रत्नजटित हार भेंट किए। विवाह के बाद सभी ने श्रीनिवास और पद्मावती के साथ भव्य भोज में भाग लिया। यह उत्सव चार दिनों तक चला। पाँचवें दिन श्रीनिवास, पद्मावती देवी के साथ गरुड़ पर सवार होकर सुवर्णमुखारी नदी के तट पर स्थित अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँचे।

आकाशराज, जो पद्मावती देवी के वियोग से दु:खी थे, उन्होंने विवाह के उपरांत भोजन सामग्री और सेवकों के साथ अगस्त्य मुनि के आश्रम में उनकी सेवा हेतु सैकड़ों दासियाँ भेजीं। उन्होंने स्वयं पद्मावती देवी और श्रीनिवास से भेंट की। श्रीनिवास ने आकाशराज से कहा,

"आप मेरे लिए गुरु के समान हैं। अपनी कोई इच्छा हो तो बताइए, जिसे मैं पूरी कर सकूँ।" आकाशराज ने विनती की, "हे कृष्ण, मुझे और मेरे परिवार को भक्ति का वरदान दें।" श्रीनिवास ने उन्हें आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात श्रीनिवास ने अपने पहने हुए रेशमी वस्त्र अपने सालाजी वसुदास को भेंट किए। आकाशराज ने पद्मावती देवी से कहा, "पुत्री, मैं अब जा रहा हूँ। श्रीनिवास की सेवा करके अपने जीवन को सार्थक करो।" इसके बाद वे नारायणपुर लौट गए। श्रीनिवास ने देवताओं और मुनियों से कहा, "मैं आगामी छह महीनों तक अगस्त्य मुनि के आश्रम में रहूँगा। आप सभी अपने-अपने लोक लौट जाएँ।" उनकी बात को नकार न पाते हुए, सभी ने श्रीनिवास, पद्मावती देवी और लक्ष्मी देवी की परिक्रमा करके प्रणाम किया और चले गए। लक्ष्मी देवी श्रीनिवास की अनुमति से करवीरपुर (कोल्हापुर) लौट गईं।

आकाशराज का देह त्याग

जब श्रीनिवास अगस्त्य मुनि के आश्रम में थे, तभी आकाशराज का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। उन्होंने अपना शरीर त्यागते समय पद्मावती देवी और श्रीनिवास को देखने की इच्छा जताई और उन्हें लाने के लिए एक दूत भेजा। दूत ने पद्मावती देवी को प्रणाम कर बताया, "आकाशराज गंभीर रूप से अस्वस्थ हैं और आपसे मिलने की इच्छा रखते हैं।" यह सुनते ही पद्मावती देवी मूर्छित होकर गिर पड़ीं। अगस्त्य मुनि की पत्नी सेवा करके पद्मावती देवी को होश में लाईं। आकाशराज के स्वास्थ्य का समाचार सुनकर श्रीनिवास भी अत्यंत दु:खी हुए।

सभी नारायणपुर पहुंचे और आकाशराज से भेंट की। श्रीनिवास ने उनसे भावुक होकर कहा, "हे राजन! आप अपने पुत्र वसुदास, पुत्री पद्मावती, धैर्यवान भाई तोंडमान , सामंत राजाओं, राज्य और शरीर को छोड़कर जा रहे हैं? आप ही हमारे माता-पिता हैं। आपके बिना हम अनाथ हो जायेंगे। अब हमें आपके साक्षात दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा।" आकाशराज ने उत्तर दिया, "हे श्रीनिवास, यद्यपि आप सब

लोकों के बंधु हो, लेकिन सौभाग्यवश आपने हमसे प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया है। आप हमारे बंधु बने उससे हमारे सभी के जन्म सफल हो गए हैं। मैं ब्रह्मलोक जाने के बाद अपने पुत्र वसुदास और भाई तोंडमान की रक्षा का भार आप पर छोड़ता हूँ।" यह कहकर, आकाशराज ने अपने प्राण त्याग दिए और उनके लिए आए विमान में ब्रह्मलोक चले गए। वसुदास ने वसिष्ठ, अगस्त्य, अत्रि और भरद्वाज जैसे मुनियों के निर्देशन में आकाशराज के अंतिम संस्कार किए। इसके बाद, श्रीनिवास और पद्मावती देवी अगस्त्य मुनि के आश्रम लौट आए।

राज्य के लिए तोंडमान और वसुदास का युद्ध

आकाशराज के देहत्याग के बाद तोंडमान ने वसुदास से कहा, "जब बड़े व्यक्ति नहीं रहते, तो छोटे को राज्य मिलता है। अतः इस राज्य का राजा बनने का अधिकार मेरा है।" वसुदास ने उत्तर दिया, "पिता का राज्य पुत्र को ही मिलता है। इसलिए इस राज्य पर मेरा अधिकार है।" इस प्रकार, दोनों राज्य के लिए विवाद करते हुए युद्ध के लिए तैयार हो गए। युद्ध में मदद करने के लिए वसुदास और तोंडमान , दोनों ने श्रीनिवास से सहायता की याचना की। श्रीनिवास ने एकांत में पद्मावती देवी से पूछा, "मैं किसकी मदद करूं?" पद्मावती देवी ने उत्तर दिया, "तोंडमान वीर और युद्ध में अनुभवी है। वसुदास न तो युद्ध में अनुभवी है और पिताविहीन भी है, इसलिए आप वसुदास की सहायता करें।" श्रीनिवास ने तोंडमान को अपना शंख और चक्र सौंप दिए और वसुदास को युद्ध में सहायता देने का वचन दिया।

युद्ध शुरू हो गया। वसुदास ने तोंडमान को दस बाणों से घायल कर दिया। क्रोध में तोंडमान ने वसुदास को छोड़कर श्रीनिवास के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। श्रीनिवास ने तोंडमान को घायल कर उसके सारथी को मार डाला और रथ को नष्ट कर दिया। यह देखकर, तोंडमान का पुत्र श्रीनिवास पर आक्रमण करने आया और उसने पांच हजार बाणों से श्रीनिवास के वक्षस्थल को घायल कर दिया। क्रोध में तोंडमान ने

घोड़े पर सवार होकर श्रीनिवास द्वारा दिए गए सुदर्शन चक्र से श्रीनिवास के वक्षस्थल पर प्रहार किया, जिससे श्रीनिवास साधारण मनुष्य की भांति मूर्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़े।

श्रीनिवास के युद्ध भूमि में गिरते ही, अन्त:पुर के ऊपर से यह दृश्य देख रहीं पद्मावती देवी दु:खी होकर अगस्त्य मुनि के पास गईं और सबके सामने प्रार्थना करने लगीं , "क्या मेरे पति युद्धभूमि में मूर्छित हो गए हैं, या वे केवल मेरी परीक्षा के लिए ऐसा कर रहे हैं ? मुझे मार्गदर्शन दें कि अब मैं क्या करूं।" अगस्त्य मुनि ने पद्मावती देवी से कहा, "देश और काल के अनुसार कार्य करने पर ही मनुष्य फल प्राप्त करता है। इसलिए, अपने पति का कल्याण चाहती हो तो उन्हें युद्धभूमि से वापस लाने का प्रयास करो। स्त्रियों का धर्म अपने पति के प्रति अपार भक्ति रखना है। कल्याणी! मुझे यही उचित लगता है कि शांति का प्रयास किया जाए। तुम्हारे चाचा और भाई, दोनों ही राज्य चलाने में सक्षम हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।" पद्मावती देवी ने अगस्त्य मुनि के वचनों को स्वीकार करते हुए कहा, "आप जो कह रहे हैं, मैं वैसा ही करुँगी।" इसके पश्चात वह अगस्त्य मुनि के साथ युद्धक्षेत्र की ओर प्रस्थान कर गईं।

अगस्त्य मुनि के साथ युद्ध क्षेत्र में पहुँचकर पद्मावती देवी ने श्रीनिवास की सेवा करके उन्हें मूर्छा से बाहर निकाला। श्रीनिवास ने पद्मावती देवी को देखकर कहा, "स्त्रियों को युद्ध भूमि में नहीं आना चाहिए। तुम यहाँ क्यों आई हो ?" अगस्त्य मुनि ने श्रीनिवास से कहा, "हे श्रीनिवास! आप युद्ध को रोककर राज्य को दोनों में बाँट दें।" परंतु श्रीनिवास ने क्रोधित होकर उत्तर दिया, "मैं तोंडमान और उसके पुत्र को युद्ध में हराकर वसुदास को राज्य दूँगा। आप यहाँ से चले जाएँ।" पद्मावती देवी ने श्रीनिवास को प्रणाम कर और हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "हे स्वामी! पुण्डरीकाक्ष! इस विनाशकारी युद्ध से क्या लाभ होगा ? वसुदास और तोंडमान दोनों हमारे बंधु हैं, इसलिए कृपया राज्य को दोनों में बाँट दें।"

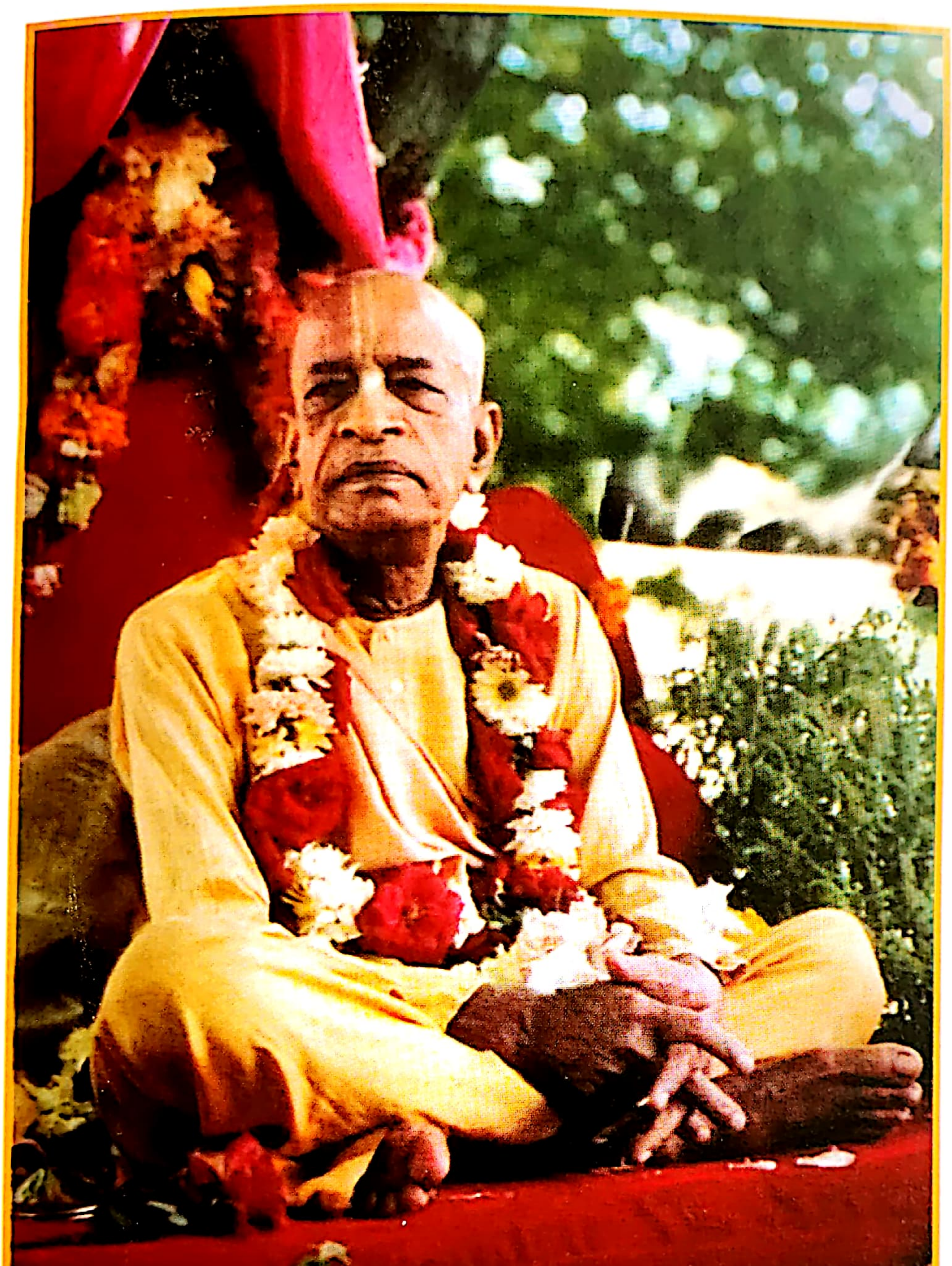
श्रीनिवास ने उत्तर दिया, "तुम्हें क्षत्रिय धर्म की जानकारी नहीं है। तुम यहाँ से चली जाओ!" श्रीनिवास के न मानने पर, पद्मावती देवी ने अगस्त्य मुनि से प्रार्थना की, "आप ही कृपया युद्ध को रोकें।" अगस्त्य मुनि ने श्रीनिवास को समझाया, "आकाशराज ने अपने अंतिम समय में आपसे वसुदास और तोंडमान की रक्षा का वचन लिया था। यदि आप एक को मारकर दूसरे को राज्य देंगे, तो आपने जो वचन दिया, उसे तोड़ देंगे। अत: दोनों में राज्य को समान रूप से बाँट दें।" अगस्त्य मुनि की मंत्रणा सुनकर, श्रीनिवास शांत हो गए और वसुदास और तोंडमान को बुलाकर कहा, "आकाशराज ने अपने शरीर त्यागते समय मेरे ऊपर आप दोनों की रक्षा का दायित्व सौंपा था। अत: आप दोनों राज्य को समान रूप से बाँट लो।" वसुदास और तोंडमान श्रीनिवास की बात को नकार नहीं सके और राज्य को समान रूप से बाँट लिया।

श्रीनिवास का अर्चामूर्ति बनना

श्रीनिवास ने वसुदास और तोंडमान को राज्य बाँटने के बाद, अगस्त्य मुनि के आश्रम में रहना शुरू कर दिया। एक दिन, तोंडमान श्रीनिवास के पास आए और प्रणाम किया। श्रीनिवास ने तोंडमान को गले लगाते हुए पूछा, "तुम क्यों आए हो?" तोंडमान ने उत्तर दिया, "स्वामी! आपके दर्शन से बढ़कर मेरे लिए कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। हे श्रीनिवास! आप योगियों के स्वामी हैं, आप ही सृष्टि के निर्माता हैं, ब्रह्माजी को नियुक्त करने वाले हैं, और लक्ष्मी देवी के साथ विहार करने वाले हैं।" उन्होंने श्रीनिवास की स्तुति करते हुए कहा, "आपकी सेवा करके मैं अपने जीवन को सार्थक करना चाहता हूँ।" श्रीनिवास ने कहा, "हे राजा! तुम्हारे भाई के कारण मैं गृहस्थ बना हूँ। फिर भी, मेरे पास रहने के लिए घर नहीं है। आकाशराज के दामाद के लिए यह अपकीर्ति होगी कि उसके पास निवास के लिए घर नहीं है और उसे दूसरों के घर में रहना पड़ता है। इसलिए, मेरे लिए इस वेंकटाचल पर्वत पर तीन प्राकारों, दो गोपुरों, सात द्वारों, फूलों की माला गूंथने की जगह, रसोई, यज्ञशाला,

वस्त्र भंडार, तेल का कक्ष, भोजन कक्ष और आभूषण कक्ष के साथ एक अद्भुत मंदिर बनवाओ।"

तोंडमान ने श्रीनिवास के बताए अनुसार मंदिर का निर्माण कराया। मंदिर (श्रीनिवास मंगापुरम से) के लिए सीढ़ियों का निर्माण भी कराया गया। इस प्रकार, मंदिर का निर्माण पूरा होने पर उन्होंने श्रीनिवास को बताया। श्रीनिवास ने शुभ मुहूर्त में देवताओं के साथ उस मंदिर में प्रवेश किया। उन्होंने पद्मावती देवी को अपने वक्षस्थल पर धारण किया, बाएँ हाथ को कमर पर रखा और दाएँ हाथ से अपने चरणों का आश्रय लेने का संकेत करते हुए अर्चामूर्ति बन गए।



कृष्णकृपामूर्ति

श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

संस्थापकाचार्य : अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ

(पृष्ठ 180)



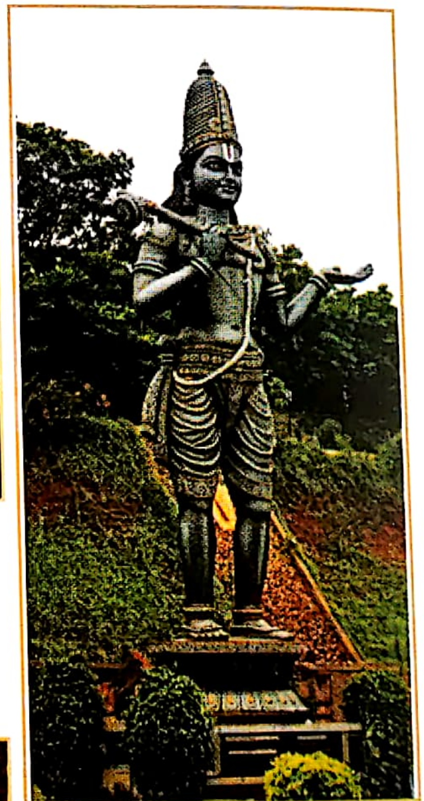
बारह आल्वार (पृष्ठ 113)



अनंताचार्य
(पृष्ठ 139)



रामानुजाचार्य
(पृष्ठ 133)



अन्नमाचार्य
(पृष्ठ 152)



अनंताचार्य इस सब्बल (गड्डा करने का लोहे का एक ओज़ार) से ही वेंकटेश्वर स्वामी के ऊपर प्रहार किया था। अब इस सब्बल को हम वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के पहले गोपुर की दाई दीवाल पर दर्शन कर सकते हैं। (पृष्ठ 37, 141)



श्री नित्यानंद प्रभु
(पृष्ठ 168)

श्री कृष्ण चैतन्य
महाप्रभु (पृष्ठ 164)



सुवर्ण मुखारी (स्वर्ण मुखी) नदी (पृष्ठ 110)



व्यासतीर्थ (पृष्ठ 163)



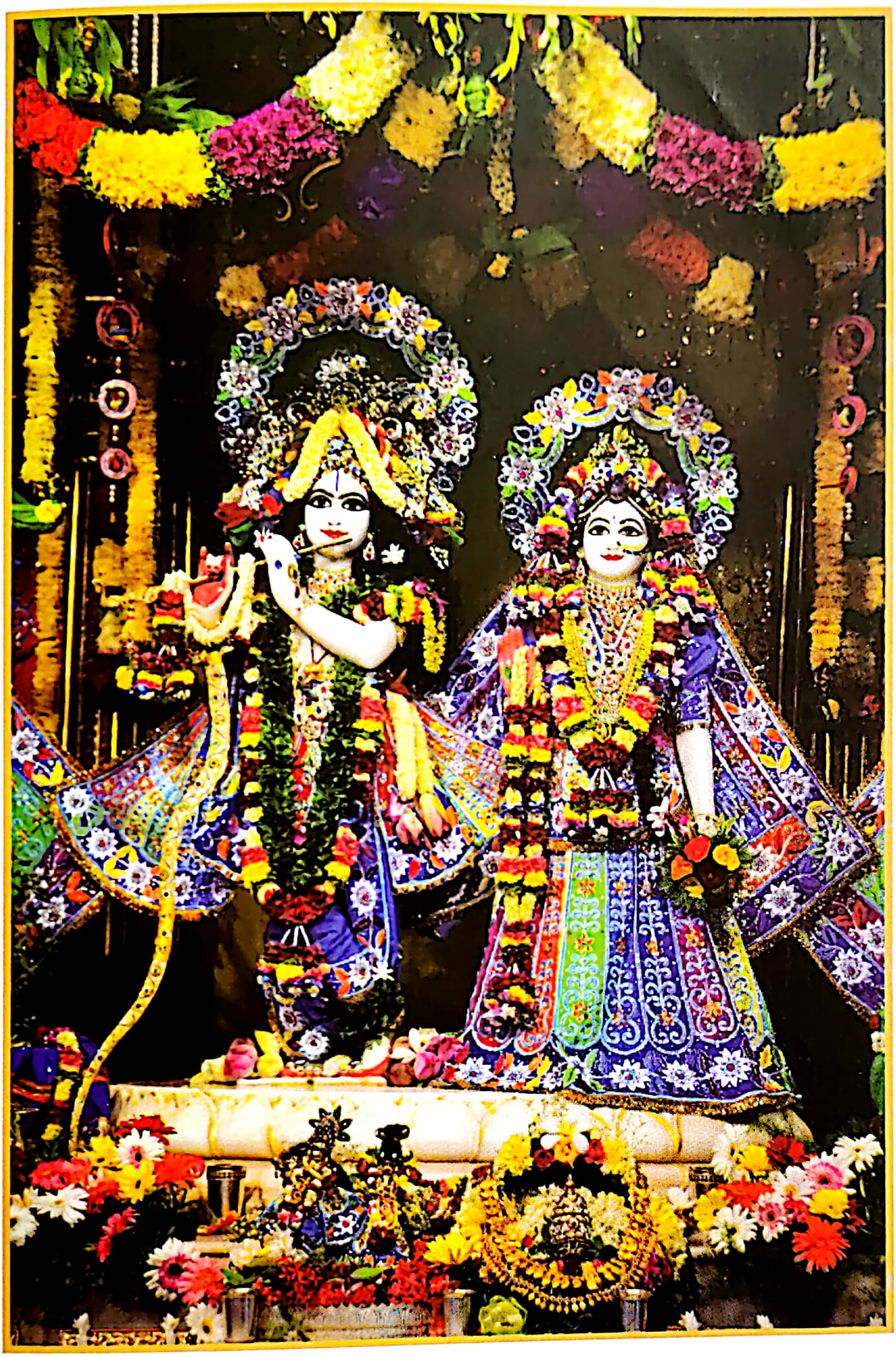
कनक दास (पृष्ठ 174)



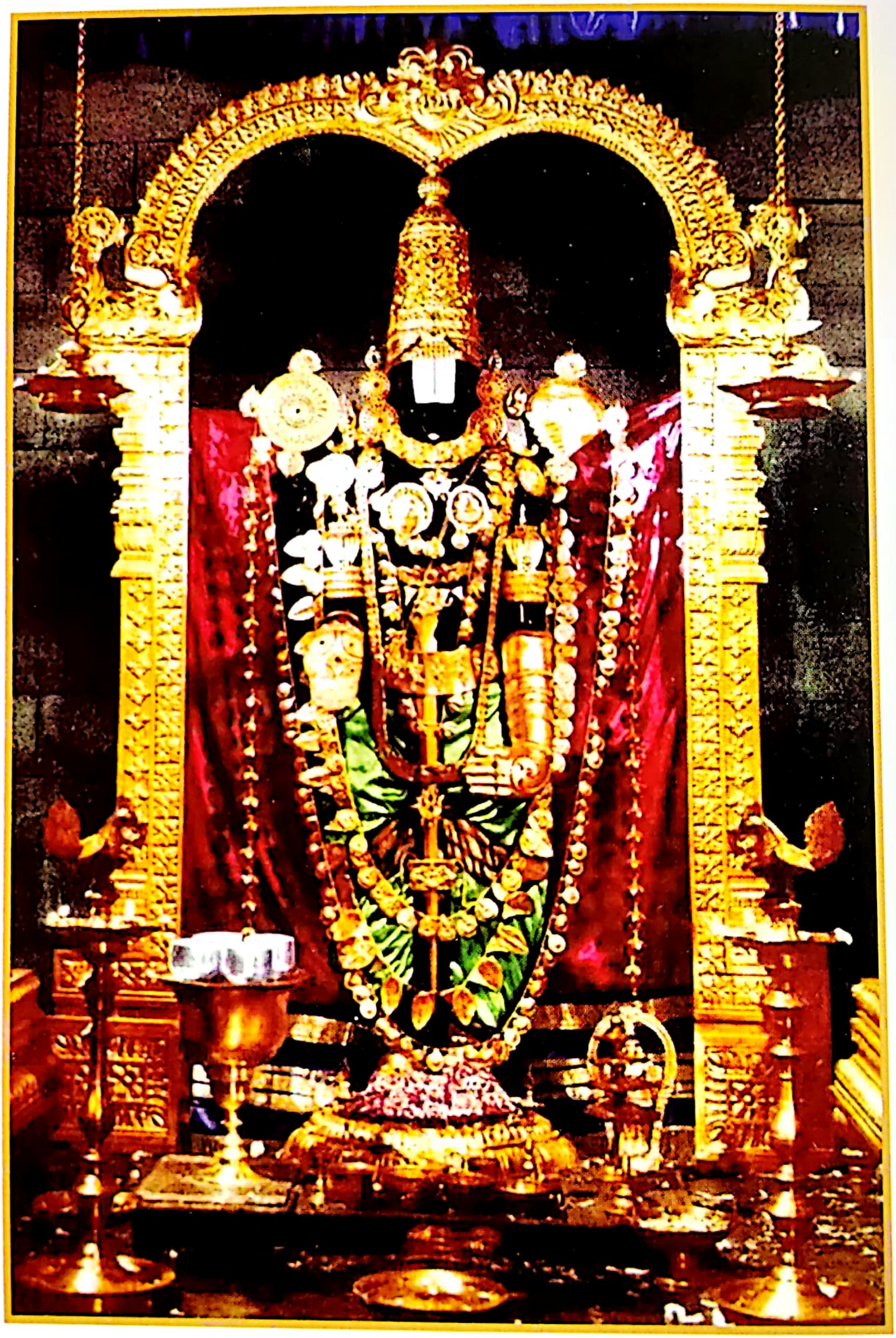
श्री गोविंदराज स्वामी (पृष्ठ 93)



स्वामि पुष्करिणी (पृष्ठ 73)



इस्कॉन तिरुपति में स्थित श्री श्री राधा गोविंद जी(पृष्ठ 98)



तिरुमला में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी (मूल विग्रह) (पृष्ठ 79)



तिरुचानूर में स्थित पद्मावती देवी (पृष्ठ 107)



वराह स्वामी (पृष्ठ 77)



वराह स्वामी मंदिर (पृष्ठ 77)



अलिपिरी में श्रीवारी पादालु
(वेंकटेश्वर स्वामी पाद चिह्न)
(पृष्ठ 106)



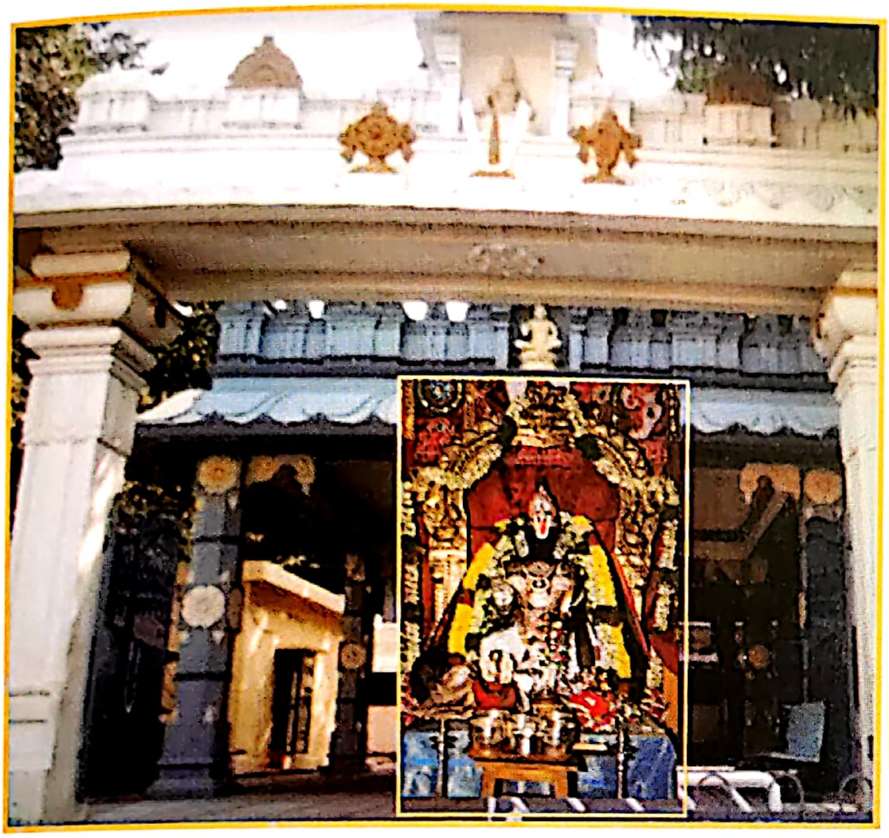
सीतारामलक्ष्मण उत्सव विग्रह
(पृष्ठ 43-44)



तुम्बुरु(गोना) तीर्थ (पृष्ठ 90)



पापनाशन तीर्थ (पृष्ठ 85)





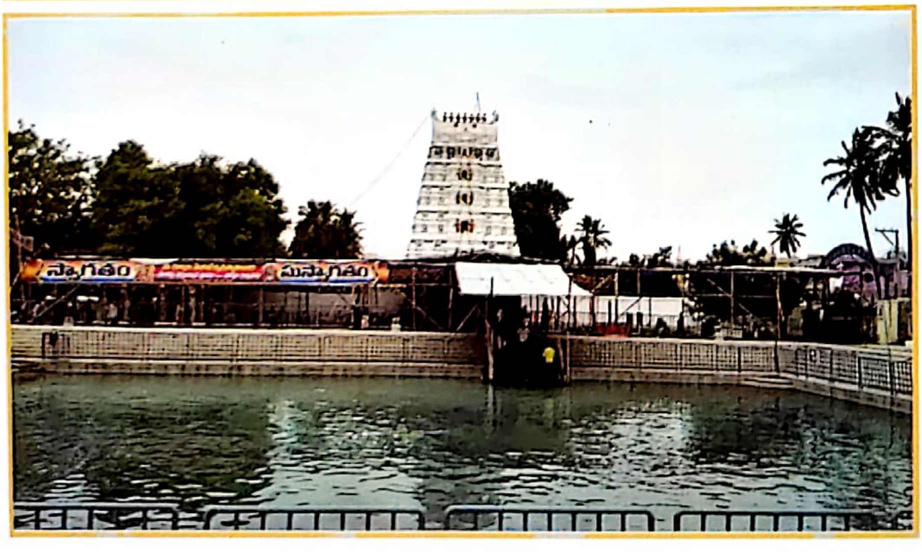
(बायीं ओर) तिरुमलानम्बि मंदिर (घर) (पृष्ठ 81, 130)
(दाईं ओर) श्री वेदांत देशिकन वेंकटेश्वर स्वामी के पूजा में प्रयोग होनेवाले घंट का अवतार है। (पृष्ठ 147)



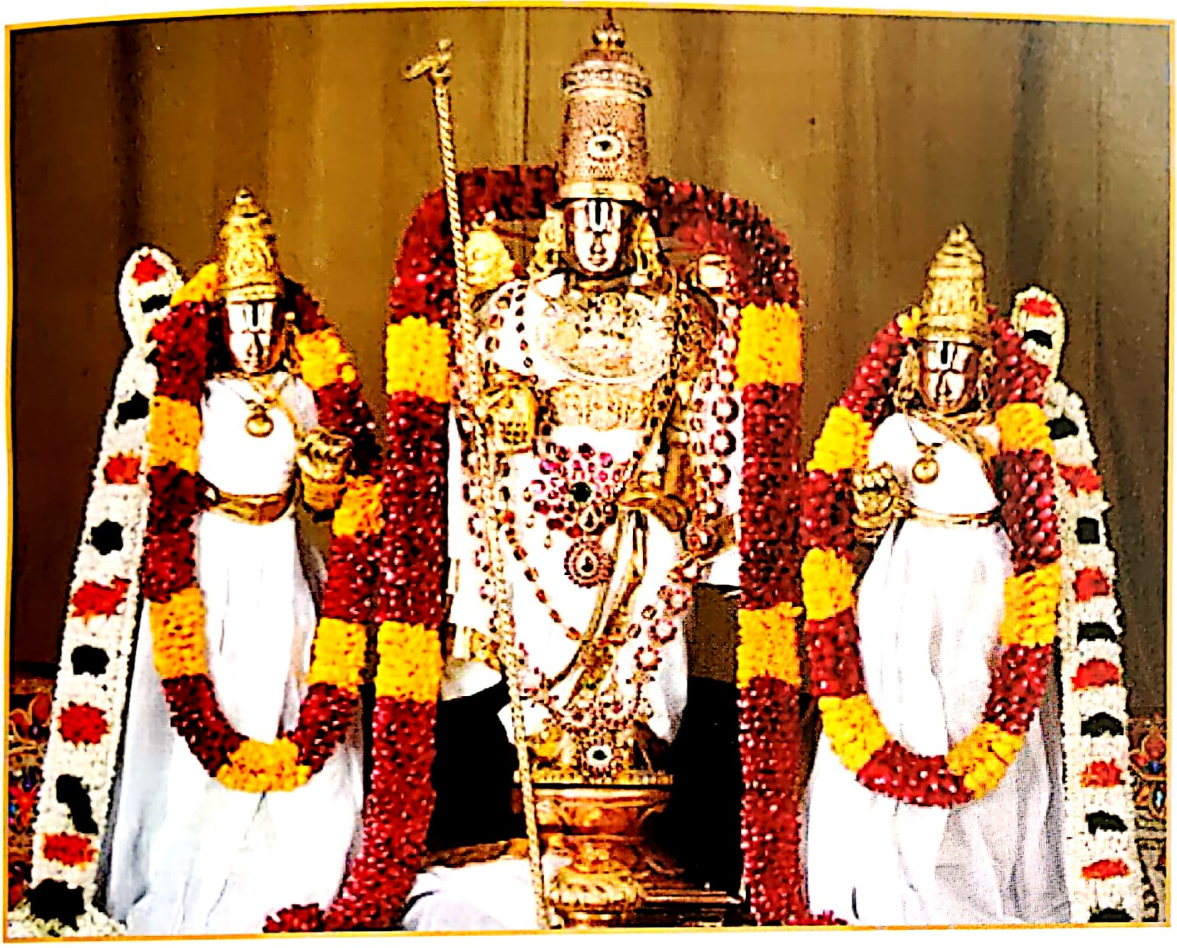
कपिल तीर्थ में स्थित कपिलेश्वर (पृष्ठ 97)



तिरुपति में स्थित कोदंडराम स्वामी मंदिर और सीतारामलक्ष्मण
(पृष्ठ 95)



श्रीनिवास मंगापुर में स्थित कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर
(पृष्ठ 110)



श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्रीमलयप्पस्वामी (पृष्ठ 38, 57-58)



अनंताचार्य बृन्दावन (समाधि) (पृष्ठ 82)



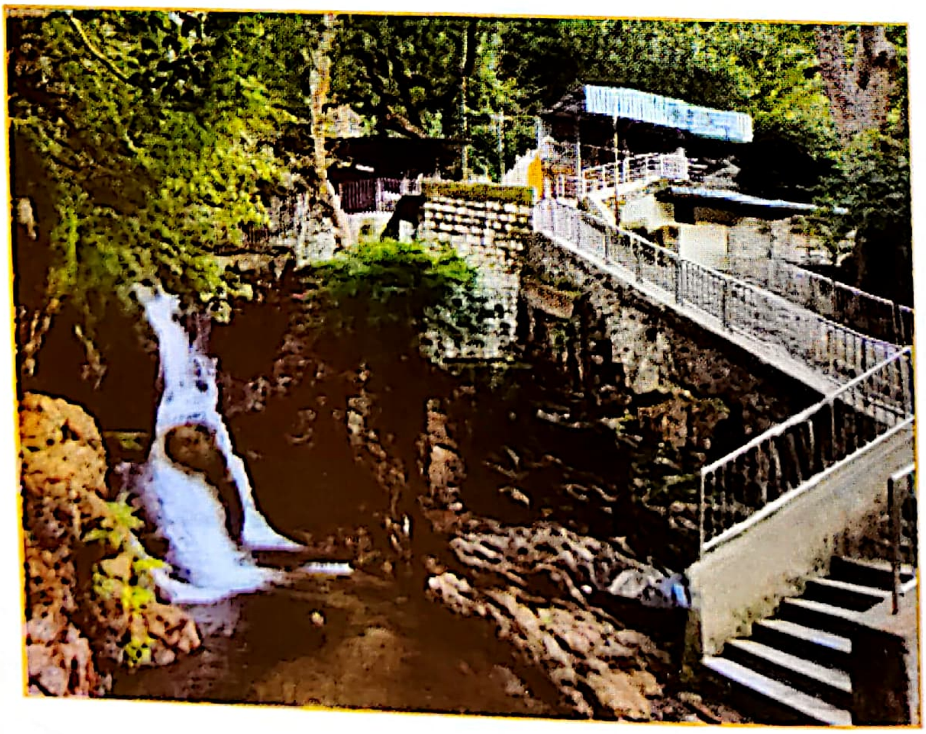
(बाएं ओर) हाथीराम बाबाजी बृन्दावन (समाधि) (पृष्ठ 83)



पांडव तीर्थ (पृष्ठ 85)



वेंगमांबा बृन्दावन (समाधि) (पृष्ठ 82)



आकाशगंगा तीर्थ (पृष्ठ 83)

2

श्री वेंकटेश्वर स्वामी लीला चरित - 2

स्कंदपुराण से

यह कथा स्कंदपुराण के द्वितीय वैष्णव खंड के श्रीवेंकटाचल माहात्म्य के प्रथम अध्याय से लेकर दसवें अध्याय तक के आधार पर संक्षेप में प्रस्तुत की गई है।

शिव ने स्कंद को जो बताया वही स्कंदपुराण है। इसे नैमिषारण्य में सूत गोस्वामी ने ऋषियों को बताया।

अब हम स्कंदपुराण से वेंकटेश्वर स्वामी की लीलाओं के बारे में जानेंगे। स्कंदपुराण की वेंकटेश्वर स्वामी की लीलाएँ और भविष्योत्तरपुराण की लीलाओं में कुछ भिन्नताएँ हैं। आचार्यों ने बताया है कि भगवान हर कल्प[1] में विभिन्न रूप में वैकुंठ से अवतीर्ण होकर विभिन्न लीलाएँ करते हैं। इसलिए, कभी-कभी भगवान की स्वतंत्र इच्छा से इन लीलाओं में भिन्नताएँ प्रगट हो सकती हैं, जिसे कल्पभेद कहा जाता है।

नारायण का वेंकटाचल आगमन

सूत गोस्वामी ने मुनियों को इस प्रकार बताया: हैहय वंश में शंख नामक एक राजा था। शंख ने नारायण के लिए अनेक यज्ञ किए। उन्होंने ब्राह्मणों को सोना, गायें और भूमि भी दान में दी। फिर भी, नारायण का दर्शन न प्राप्त होने के कारण वे दुःखी थे। तभी नारायण ने आकाशवाणी के रूप में यह बताया, "हे राजा! वृषभाचल[2] जाओ। वृषभाचल वैकुंठ के समान है। वृषभाचल में स्थित स्वामि पुष्करिणि के पास जाकर मेरे

(1) ब्रह्मा का एक दिन जिसमें एक हजार चतुर्युग (सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग) आतें है।

(2) वेंकटाचल का एक अन्य नाम

लिए तपस्या करो। मैं वहाँ तुम्हें दर्शन दूँगा।" नारायण ने यह भी कहा, "अगस्त्य मुनि ने एक बार ब्रह्माजी से पूछा कि नारायण का दर्शन कहाँ मिलेगा। ब्रह्माजी ने उन्हें वेंकटाचल पर्वत पर तपस्या करने के लिए कहा। इसलिए अगस्त्य मुनि वेंकटाचल पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं। मैं वेंकटाचल पर तुम्हें और अगस्त्य मुनि, दोनों को दर्शन दूँगा।" राजा शंख बहुत प्रसन्न हुए और अपने पुत्र वज्र को राज्य सौंपकर वेंकटाचल पर्वत पर आ गए। उन्होंने स्वामि पुष्करिणि में स्नान किया और नारायण के लिए तपस्या करने लगे।

एक बार इंद्र और अन्य देवताओं के साथ बृहस्पति ने ब्रह्माजी से पूछा कि नारायण का दर्शन कहाँ मिलेगा। ब्रह्माजी ने बताया, "वेंकटाचल पर्वत पर अगस्त्य मुनि और शंख नामक राजा, नारायण के लिए तपस्या कर रहे हैं। आप अगस्त्य मुनि के पास जाएँ। वहाँ आपको नारायण का दर्शन मिलेगा।" तब देवता वेंकटाचल आए और अगस्त्य मुनि से मिले और ब्रह्माजी का बताया हुआ विवरण समझाया। अगस्त्य मुनि देवताओं के साथ शंख राजा से मिले। शंख राजा ने मुनियों और देवताओं को प्रणाम कर अतिथि सत्कार किया।

शंख, अगस्त्य मुनि और देवताओं ने मिलकर नारायण के लिए प्रार्थनाएँ कीं। उनकी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर नारायण ने गरुड़ पर सवार होकर दर्शन दिए। सभी ने नारायण को प्रणाम कर स्तुति की। नारायण ने अगस्त्य मुनि से कहा, 'तुम्हें क्या वरदान चाहिए? 'अगस्त्य मुनि ने कहा, 'मुझे सदा आपकी भक्ति मिले और आप इस पर्वत पर रहकर सभी जीवों को दर्शन दें।' नारायण ने कहा, 'आपकी इच्छा के अनुसार, मैं यहाँ रहूँगा।' नारायण ने शंख से कहा, 'आपकी भक्ति और तपस्या से मैं प्रसन्न हूँ। तुम भी कोई वरदान माँगो।' शंख ने वरदान माँगा कि , "मुझे सदा आपकी भक्ति प्राप्त हो, ।" नारायण ने राजा शंख से कहा, "आपकी इच्छा पूरी होगी," और उन्हें वरदान दिया। अगस्त्य मुनि की इच्छा के अनुसार, नारायण वेंकटाचल में निवास करने लगे।

पद्मावती देवी का जन्म

नारायणपुर को शाख वंश के मित्रवर्मा नामक राजा शासित कर रहे थे। मित्रवर्मा की पत्नी का नाम मनोरमा था। उन्हें आकाशराज नामक पुत्र हुआ। आकाशराज की पत्नी का नाम धरणी देवी था। उनके पुत्र न होने के कारण, पुत्रकामेष्टि यज्ञ के लिए भूमि जोतते समय उन्हें एक कन्या मिली। आकाशराज ने उस कन्या को पद्मावती देवी नाम से पाला। उस कन्या की कृपा से आकाशराज को एक पुत्र भी प्राप्त हुआ, जिसका नाम वसुदास था।

एक दिन, पद्मावती देवी अपनी सखियों के साथ फूलों के बाग में विहार कर रही थीं, तभी नारद मुनि वहाँ आए। पद्मावती देवी और उनकी सखियों ने नारद मुनि को प्रणाम किया। नारद मुनि ने पद्मावती देवी से पूछा, "आप कौन हो?" पद्मावती देवी ने अपने बारे में बताया और उनसे अपनी ज्योतिषीय जानकारी बताने की विनती की। नारद मुनि ने कहा, "आप लक्ष्मी देवी जैसी हो। आपमें लक्ष्मी देवी के गुण हैं। नारायण आपसे विवाह करेंगे।" यह कहकर नारद मुनि वहाँ से चले गए।

वेंकटेश्वर स्वामी का पद्मावती देवी से मिलना

एक बार, वेंकटेश्वर स्वामी (नारायण) सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर वन्य जीवों का शिकार करते हुए पद्मावती देवी के फूलों के बाग में पहुँचे। वेंकटेश्वर स्वामी को देखकर बाग की सभी स्त्रियाँ आश्चर्यचकित हो गईं। वेंकटेश्वर स्वामी ने पद्मावती देवी की सखियों से पूछा, "क्या यहाँ कोई भेड़िया आया है?" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम धनुष धारण कर इस बाग में क्यों आए हो? यहाँ हिंसा का कोई स्थान नहीं है। यह बाग आकाशराज के संरक्षण में है। कृपया तुरंत यहाँ से चले जाओ!" वेंकटेश्वर स्वामी घोड़े से उतरकर स्त्रियों से पूछने लगे, "तुम सब कौन हो? विशेष रूप से, यह कमल जैसी आँखों वाली सुंदरी कौन है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हे सुंदर पुरुष! इस लड़की का नाम पद्मावती देवी

है। यह आकाशराज और धरणी देवी की पुत्री है। हम सब पद्मावती देवी की दासियाँ हैं।" उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो ? कहाँ रहते हो ?"

वेंकटेश्वर स्वामी ने उत्तर दिया, "मेरा नाम अनंत है। तपस्या करने वाले योगी मुझे कृष्ण कहते हैं। मेरे पास जो धनुष है, वह देवताओं के पास भी नहीं है। जो वेंकटाचल पर रहते हैं, वे मुझे वेंकटाचल स्वामी कहते हैं। मैं वन्य जीवों का शिकार करते हुए इस बाग में आया और इस सुंदरी को देखा। क्या यह सुंदरी मुझसे विवाह करेगी ?" यह सुनकर, सखियाँ क्रोधित हो गईं और वेंकटेश्वर स्वामी घोड़े पर सवार होकर वेंकटाचल की ओर चले गए।

पद्मावती देवी का पूर्वजन्म

वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा करने वाली वकुलमाता स्वामी के पास आकर बोलीं, "देवाधिदेव ! भोजन तैयार है, कृपया ग्रहण करें।" वेंकटेश्वर स्वामी ने वकुलमाता से कहा, "जब मैं राम अवतार में था और सीता के साथ वनवास में था, रावण सीता का अपहरण करने आया था। तब अग्नि देव ने सीता को अपनी पत्नी स्वाहा देवी के पास रखा और वेदवती को पर्णशाला (झोपडी) में रखा। रावण ने वेदवती को सीता समझकर अपहरण कर लिया।"

"जब मैंने रावण का संहार किया और सीता ने अग्नि प्रवेश किया, तब अग्नि देव अपनी पत्नी के साथ सीता को लेकर आए और मुझे सौंप दिया। उन्होंने कहा, 'हे श्रीराम ! यह वेदवती आपके लिए तपस्या कर रही थी। वह आपसे विवाह करना चाहती है, कृपया उसकी इच्छा पूरी करें।' सीता ने भी ऐसा ही कहा। तब मैंने उनसे कहा, 'इस अवतार में मैंने एक ही पत्नी को स्वीकार करने का वचन लिया है, इसलिए वेदवती से अब विवाह नहीं कर सकता।' फिर मैंने वेदवती से कहा, 'मैं तुमसे कलियुग में विवाह करूँगा। तब तक तुम ब्रह्म लोक में रहो।' पुत्रकामेष्टि यज्ञ करते समय आकाशराज को भूमि से मिली यह पद्मावती

वही वेदवती है। इसलिए, तुम जाओ और पद्मावती से विवाह के बारे में पूछो।" वकुलमाता ने वेंकटेश्वर स्वामी को प्रणाम किया और स्वामी के बताए मार्ग पर चल पड़ीं।

वकुलमाता का पद्मावती देवी की सखियों से मिलना

रास्ते में, अगस्त्येश्वर (शिव) के दर्शन करके, वकुलमाता विश्राम कर रही थीं, तभी पद्मावती देवी की सखियाँ वहाँ आईं। वकुलमाता उनके पास जाकर बोलीं, "हे सुंदर स्त्रियों! तुम कौन हो? कहाँ से आई हो? इस मंदिर में आपका क्या काम है?" उन स्त्रियों ने उत्तर दिया, "हम आकाशराज की पुत्री पद्मावती देवी की दासियाँ हैं। हम पद्मावती देवी के साथ फूलों के बाग में फूल तोड़ रही थीं, तभी एक सुंदर पुरुष सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर वन्य जीवों का शिकार करते हुए वहाँ आया। उसने पद्मावती देवी को देखकर कहा कि वह उनसे विवाह करेगा। जैसे ही हमने क्रोधित होकर उस पुरुष को देखा, वह चला गया। उसके जाते ही पद्मावती देवी मूर्छित होकर गिर पड़ीं।

"हम तुरंत पद्मावती देवी को राजा के पास ले गए। राजा ने ब्राह्मणों को बुलाया और पूछा, 'पद्मावती क्यों मूर्छित हो गई?' तब एक ब्राह्मण ने अपनी दिव्य दृष्टि से बाग में घटित घटना को देखा और बताया, 'हे राजा! पद्मावती देवी का विवाह उसी पुरुष के साथ होगा।' राजा ने ब्राह्मणों से कहा, 'शंकर के मंदिर में अभिषेक करें,' और हमें अभिषेक के लिए सामग्री तैयार करने का आदेश दिया। हम राजा की आज्ञा के अनुसार अभिषेक के लिए आवश्यक सामग्री मंदिर में ले आईं। अब आप बताएँ कि आप कौन हैं और कहाँ रहती हैं?" उन्होंने वकुलमाता से पूछा। वकुलमाता ने उत्तर दिया, "मैं वेंकटाचल पर रहती हूँ। वकुलमाता ने सखियों से कहा, "मैं वेंकटाचल पर नारायण की सेवा करती हूँ। मैं धरणी देवी से मिलने आई हूँ। क्या मुझे धरणी देवी का दर्शन मिलेगा?" सखियों ने उत्तर दिया, "आप हमारे साथ चलकर धरणी देवी से मिल सकती हो।" वकुलमाता उनके साथ चल पड़ीं।

जब वकुलमाता पद्मावती देवी की सखियों के साथ राजभवन आ रही थीं तब एक ओझा स्त्री नारायणपुर में सबको बता रही थी, "मुझे भूत-भविष्य सब ज्ञात है।" धरणी देवी ने उस ओझा स्त्री को बुलाया और जब वह नहीं देख रही थी, तब रंगीन पानी में एक मोती डालकर पूछा, "इसमें क्या है?" उस स्त्री ने बताया कि इसमें मोती है। धरणी देवी ने कहा, "यह सच है! इसे भूत-भविष्य की जानकारी है।" और फिर धरणी देवी उस ओझा स्त्री को पद्मावती देवी के पास ले गईं और अपनी पुत्री के बारे में बताने के लिए कहा। ओझा स्त्री ने पुष्पवाटिका में घटी घटनाओं को बताया और कहा, "वह पुरुष नारायण हैं। नारायण से अपनी पुत्री पद्मावती का विवाह कर दो। इससे आपकी पुत्री की मनोवेदना ठीक हो जाएगी," यह कहकर वह स्त्री चली गई।

वकुलमाता का धरणी देवी से मिलना

पद्मावती देवी की सखियों के साथ वकुलमाता नारायणपुर में धरणी देवी से मिलीं। धरणी देवी ने आतिथ्य सत्कार किया और पूछा, "आप कौन हैं? कहाँ रहती हैं? यहाँ आने का कारण क्या है?" वकुलमाता ने धरणी देवी को बताया, "मैं वेंकटाचल पर नारायण की सेवा करती हूँ।" उन्होंने नारायण और पद्मावती देवी के मिलने के बारे में भी बताया और कहा, "नारायण आपकी पुत्री से विवाह करना चाहते हैं। उन्होंने मुझे आपका अभिप्राय जानने के लिए भेजा है।"

धरणी देवी ने कहा कि वह अपने पति से पूछकर बताएँगी और आकाशराज के पास जाकर सब कुछ बताया। आकाशराज ने वकुलमाता से कहा, "नारायण का मेरी पुत्री से विवाह करना मेरी पुत्री का सौभाग्य है।" फिर उन्होंने मंत्रियों और ब्राह्मणों से पूछा, "पद्मावती देवी के विवाह के बारे में आपका क्या अभिप्राय है?" सभी ने सहमति जताई और बृहस्पति को बुलाकर विवाह का मुहूर्त तय करने को कहा। आकाशराज ने बृहस्पति से विवाह मुहूर्त देखने को कहा। बृहस्पति ने वैशाख मास में (अप्रैल-मई) आने वाले उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में विवाह मुहूर्त तय किया।

आकाशराज ने वकुलमाता से कहा, "बृहस्पति द्वारा निर्धारित मुहूर्त पर नारायण आएं और मेरी पुत्री से विवाह करें।" उन्होंने वकुलमाता को यह संदेश देने के लिए भेजा।

पद्मावती देवी और वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह

आकाशराज ने अपने पुत्र वसुदास को ब्रह्मा, शिव, इंद्र, चंद्र, सूर्य और अन्य चौदह लोकवासियों को विवाह में आमंत्रित करने के लिए भेजा। उन्होंने विश्वकर्मा को बुलाकर नगर को सजाने का आदेश दिया। विवाह में सभी देवता आए। आकाशराज ने चंद्र से कहा कि नारायण के प्रिय व्यंजन बनाए और अन्य देवताओं को अन्य कार्यों में नियुक्त किया।

विवाह के समय, वेंकटेश्वर स्वामी गरुड़ पर सवार होकर लक्ष्मी देवी के साथ आए। पद्मावती देवी हाथी पर सवार होकर अंत:पुर से बाहर आईं और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर प्रणाम किया। वेंकटेश्वर स्वामी ने अपनी माला पद्मावती देवी के गले में डाली। पद्मावती देवी ने उनके हाथों में रखी फूलों की माला वेंकटेश्वर स्वामी के गले में डाल दी। इसके बाद, दोनों ने अपने वाहनों से उतरकर विवाह मंडप में प्रवेश किया। ब्रह्माजी ने विवाह के मंत्र पढ़कर पद्मावती देवी और वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह संपन्न किया।

आकाशराज ने अपनी पुत्री पद्मावती देवी को कई उपहार दिए। इसके बाद, उन्होंने देवताओं से कहा, "आप सभी अपने-अपने लोकों को लौट जाएँ।" देवताओं ने वेंकटेश्वर स्वामी और पद्मावती देवी की स्तुति की और उनकी परिक्रमा तथा प्रणाम करके अपने-अपने लोकों को लौट गए। वेंकटेश्वर स्वामी वेंकटाचल पर पद्मावती देवी और लक्ष्मी देवी के साथ निवास करने लगे।

वसु और तोंडमान की कथा

वसु नामक निषाद जाति के नारायण भक्त वेंकटाचल पर रहते थे। वसु वेंकटाचल पर्वत और उसके वृक्षों की रक्षा करते थे। वे प्रतिदिन

भोजन बनाकर उसमें शहद मिलाकर वेंकटेश्वर स्वामी को नैवेद्य अर्पित करते थे। एक दिन, भोजन तैयार कर वे शहद लाने के लिए अपनी पत्नी के साथ वन में गए। उन्होंने अपने पुत्र वीरु से कहा, "भोजन की रक्षा करना।" वसु के जाने के कुछ समय बाद, वीरु ने कुछ भोजन अग्नि में समर्पित किया और कुछ भोजन वेंकटेश्वर स्वामी को पेड़ के नीचे अर्पित करके शेष भोजन स्वयं खा लिया। जब वसु शहद लेकर लौटे, तो वहाँ भोजन नहीं था। उन्होंने वीरु से पूछा, तो वीरु ने बताया कि उसने ही भोजन खा लिया है। वसु ने सोचा कि वीरु ने वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित किए बिना ही भोजन खा लिया है, और उन्होंने वीरु को मारने के लिए तलवार उठा ली। वेंकटेश्वर स्वामी ने पीछे से वसु का हाथ पकड़कर उसको शांत करते हुए ये वचन कहे, "तुम्हारा पुत्र तुमसे श्रेष्ठ भक्त है। उसने पेड़ के नीचे मेरे लिए भोजन अर्पित किया और फिर स्वयं शेष भोजन खाया।"

चंद्रवंश में तोंडमान नामक राजा थे। उनके पिता सुधीर और माता नंदिनी थीं। तोंडमान पांच वर्ष की आयु से ही नारायण के प्रति भक्ति रखते थे। उन्होंने पांड्य देश की राजकुमारी पद्मा से विवाह किया और स्वयंवर में सैकड़ों राजकुमारियों से विवाह करके नारायणपुर में रहने लगे। एक दिन, तोंडमान शिकार के लिए वेंकटाचल पर्वत पर एक हाथी का पीछा कर रहे थे, तभी उन्होंने पाँच रंगों का एक तोता देखा। उन्होंने तोते को पकड़ने का प्रयास किया, पर वह "श्रीनिवास श्रीनिवास" कहकर उड़ गया। तोंडमान तोते को खोजते हुए वेंकटाचल पर्वत की रक्षा करने वाले वसु के पास पहुंचे। तोंडमान ने वसु से तोते के बारे में बताते हुए पूछा, "क्या तुमने ऐसा तोता देखा है ?"

वसु ने कहा, "उस तोते को लक्ष्मी देवी ने पाला है। वह तोता लक्ष्मी और वेंकटेश्वर स्वामी के लिए बहुत प्रिय है और हमेशा स्वामि पुष्करिणि के पास रहता है।" उन्होंने कहा, "वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा का समय हो गया है। मैं स्वामी की पूजा करके वापस आता हूँ, तब तक आप यहीं

रुकें।" तोंडमान ने कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ चलकर वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करूँगा।" वसु सहमत हुए और उन्हें वेंकटेश्वर स्वामी के पास ले गए। दोनों ने वेंकटेश्वर स्वामी को प्रणाम किया। वसु द्वारा समर्पित भोजन को वेंकटेश्वर स्वामी ने स्वीकार किया। तोंडमान ने वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति की और फिर अपने राज्य लौट गए। उस समय से, तोंडमान वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन और सेवा कर रहे हैं।

वीरशर्मा नामक ब्राह्मण अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ गंगा स्नान के लिए यात्रा कर रहे थे। गर्भवती होने के कारण उनकी पत्नी चलने में असमर्थ थी। वीरशर्मा तोंडमान के पास जाकर अपनी स्थिति बताते हुए बोले, "मैं गंगा नदी में स्नान करके छह महीने में लौट आऊँगा। तब तक आप मेरी पत्नी लक्ष्मी को आश्रय दें।" तोंडमान ने सहमति जताई और ब्राह्मण की पत्नी के लिए एक कमरे में निवास की व्यवस्था की तथा छह महीने के लिए पर्याप्त अनाज भी उपलब्ध कराया। वीरशर्मा गंगा स्नान के लिए गए और वहाँ से काशी, अयोध्या, बद्रिकाश्रम जैसे तीर्थों की यात्रा करते हुए दो साल बाद लौटे। वीरशर्मा ने तोंडमान को अपनी तीर्थ यात्राओं का विवरण दिया और अपनी पत्नी के बारे में पूछा। तोंडमान ने कहा, "आप यहाँ रुकें।" उन्होंने ब्राह्मण स्त्री के कमरे में जाकर देखा तो वह अपने पुत्र के साथ मृत पड़ी थी। तोंडमान सुरंग मार्ग से वेंकटेश्वर स्वामी के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना की। वेंकटेश्वर स्वामी ने कहा, "वीरशर्मा की पत्नी लक्ष्मी को पालकी में बेठाकर, आपकी पत्नियों के द्वारा उठाकर यहाँ लेकर आओ और उसे वेंकटाचल के अस्ती सरोवर में स्नान कराओ, तो वह जीवित हो जाएगी।" तोंडमान ने वैसा ही किया और लक्ष्मी तथा उनके पुत्र जीवित हो गए। तोंडमान ने उन्हें लेकर वीरशर्मा को सौंप दिया।

भक्त भीम

तोंडमान वेंकटेश्वर स्वामी के आदेश अनुसार स्वर्ण पद्म बनाकर स्वामी की पूजा कर रहे थे। उसी समय, कुरुम नामक गाँव में रहने वाले कुम्हार भीम ने वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर मुक्ति की प्रार्थना की।

वेंकटेश्वर स्वामी ने भीम से कहा, “प्रतिदिन भक्ति से मेरी पूजा करो। जब तोंडमान तुमसे मिलेंगे, तभी तुम्हें मुक्ति मिलेगी।” कुम्हार भीम ने अपने घर में मिट्टी से वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति बनाई और मिट्टी से पद्म और तुलसी दल बनाकर पूजा करने लगे। एक दिन तोंडमान ने देखा कि मिट्टी से बने फूल और तुलसी दल वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों पर गिरे पड़े हैं। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी से पूछा, “स्वामी! किसने इन मिट्टी के फूलों और तुलसी दलों से आपकी पूजा की है ?” वेंकटेश्वर स्वामी ने भक्त भीम के बारे में बताया। तोंडमान भीम के घर गए और उन्हें प्रणाम कर सारी घटना बताई। उस समय भगवान वेंकटेश्वर देवी लक्ष्मी के साथ गरुड़ पर आए और भीम को दर्शन दिए और उन्हें उनकी पत्नी सहित वैकुंठ ले गए। तोंडमान ने अपना राज्य अपने पुत्र श्रीनिवास को सौंप दिया और वेंकटाचल चले गए और वहाँ जीवनभर भगवान वेंकटेश्वर की सेवा की और फिर वैकुंठ चले गए।

तोंडमान का पूर्वजन्म

तोंडमान का पूर्वजन्म रंगदासु नामक भक्त के रूप में हुआ था। रंगदासु तीर्थयात्राएँ करते हुए वेंकटाचल जा रहे थे, तब उनकी मुलाकात वैखानस नामक ब्राह्मण से हुई। दोनों वेंकटाचल पहुँचे और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर वहीं सेवा करने लगे। रंगदासु ने फूलों के पौधों के लिए एक कुआँ खोदा, जिसे फूलों का कुआँ कहा गया। उस पानी से उन्होंने मल्लिका, कनेर, आजा, कुंदा, मंदार, मालती, कमल, गुलाब, मोगरा जैसे सुगंधित फूलों के बाग और तुलसी का बाग भी लगाया। रंगदासु प्रतिदिन फूलों की मालाएँ और तुलसी की मालाएँ बनाकर वैखानस ब्राह्मण को देते थे, जो उन्हें वेंकटेश्वर स्वामी, लक्ष्मी देवी और पद्मावती देवी को अर्पित करते थे।

एक दिन, एक गंधर्व अपनी पत्नियों के साथ वेंकटाचल आया और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर पूजा की। बाद में, वह अपनी पत्नियों के साथ वहाँ के कोनेरु में स्नान कर रहा था, तब रंगदासु ने उन्हें कामुक

दृष्टि से देखा। बाद में, उन्होंने अपने मन को स्थिर किया और फूलों की मालाएँ बनाकर वैखानस को दीं। वैखानस ने पूछा, "इतनी देर क्यों हुई?" रंगदासु ने कोई उत्तर नहीं दिया। वेंकटेश्वर स्वामी ने वैखानस को कोनेरु पर हुई घटना बताई और रंगदासु से कहा, "तुम मेरी माया के कारण इस जन्म में मेरी सेवा करोगे और अगले जन्म में राजा बनकर इंद्रिय भोगों का अनुभव करने के बाद मेरी भक्ति साधना कर वैकुंठ जाओगे।" रंगदासु ने वेंकटेश्वर स्वामी की सौ वर्षों तक सेवा की और फिर अपने शरीर का त्याग करने के बाद, चंद्र वंश में सुधीर और नंदिनी के पुत्र तोंडमान के रूप में जन्म लिया।

3

वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की सेवाएँ और दर्शनीय स्थल

मुख्य गोपुरम

मंदिर का मुख्य गोपुरम 50 फीट ऊँचा है। इसे पडीकावली, सिंहद्वार और मुखद्वार भी कहा जाता है। इस गोपुरम के बाहर से वेंकटेश्वर स्वामी की परिक्रमा की जाती है, जिसे महा परिक्रमा कहा जाता है। इस परिक्रमा मार्ग में तिरुमलनंबि मंदिर (घर), अनंताचार्य समाधि, घर, फूलों का कुआँ, वराह स्वामी मंदिर और स्वामि पुष्करिणि आते हैं। इस परिक्रमा मार्ग में वेंकटेश्वर स्वामी के उत्सव और शोभायात्रायें होती हैं। इस परिक्रमा मार्ग का क्षेत्रफल 16 एकड़ है।

इस गोपुरम से वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए और बाहर जाने का मार्ग होता है। यहाँ स्थित प्रतिमाओं को 'शंखनिधि' और 'पद्मनिधि' कहा जाता है। एक के हाथ में शंख और दूसरे के हाथ में पद्म होने के कारण उन्हें ये नाम मिले। अनंताचार्य द्वारा वेंकटेश्वर स्वामी पर फेंकी गई सब्बल(1) को गोपुरम की दीवार पर लटका दिया गया। भक्त जब वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए जाते हैं, तो दाईं ओर 'अनंताचार्य का कुदाल' लिखा हुआ दिखाई देता है। इस सब्बल को आज भी देखा जा सकता है।

मुख्य गोपुरम के भीतर से वेंकटेश्वर स्वामी की परिक्रमा की जाती है। इस परिक्रमा मार्ग में संपंगी का पेड़ होता था, इसलिए इसे 'संपंगी परिक्रमा' कहा जाता है। संपंगी परिक्रमा मार्ग में लड्डू बनाने के लिए चीनी, चने की दाल, चने का आटा, गुड़, कपूर, चंदन, काजू और

---

(1) लोहे का मोटा सरिया जिसका एक सिरा चपटी धार वाला तथा दूसरा गोल नोंक वाला होता है, यह खोदने तथा पत्थर फोड़ने के काम आता है

किशमिश आदि का संग्रह किया जाता है। यहाँ ही लड्डू बनाने की रसोई भी स्थित है। रसोई के पास एक कुआँ है, जिसका पानी रसोई के लिए उपयोग किया जाता है। दर्पण मंडप, श्रीरंग मंडप, तिरुमलराय मंडप, कल्याण मंडप, ध्वज स्तंभ और फूलों का कुआँ इस संपंगी परिक्रमा मार्ग में दिखाई देते हैं।

दर्पण (अद्दाल) मंडप

दर्पण मंडप में दोपहर 12 बजे श्रीदेवी और भूदेवी के साथ श्रीमलयप्प स्वामी को पालने में बिराजमान कराया जाता है। फिर पालना झुलाया जाता है। इसे 'डोलोत्सव' कहा जाता है। पालना झुलाते समय पुजारियों द्वारा वेदों का पाठ किया जाता है। इसके बाद, पंचदारा (चीनी), नारियल, घी और तिल या काजू से बने 'पंच कज्ञायम' नामक मिठाई का नैवेद्य अर्पित किया जाता है। अन्तमें आरती की जाती है।

श्रीरंग मंडप

मुगलों के हमले के डर से 1320 से 1360 तक श्रीरंगम के श्रीरंगनाथ की उत्सव मूर्ति को वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में ही रखकर पूजा की जाती थी। श्रीरंगनाथ स्वामी को रखकर पूजा करने के कारण इस मंडप का नाम 'श्रीरंग मंडप' पड़ा। दीपावली के समय एक महीने तक श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की उत्सव मूर्ति की , श्रीमलयप्प स्वामी और श्रीदेवी-भूदेवी के साथ श्रीरंग मंडप में रखकर पूजा की जाती है।

तिरुमलराय मंडप

यह मंडप श्रीरंग मंडप के बगल में स्थित है। इस मंडप को तिरुमलराय ने बनवाया था, इसलिए इसका नाम तिरुमलराय मंडप है। ब्रह्मोत्सव के दौरान श्रीमलयप्प स्वामी श्रीदेवी-भूदेवी के साथ यहाँ आकर सेवा स्वीकार करते हैं। प्रतिदिन वेंकटेश्वर स्वामी के लिए सुबह 6 बजे से 6:30 बजे तक और शाम 5:30 बजे से 6 बजे तक यहाँ मंगल-वाद्य बजते हैं।

कल्याण मंडप

प्रत्येक दिन दोपहर 12 बजे से लगभग एक घंटे तक वेंकटेश्वर स्वामी का कल्याणोत्सव इसी मंडप में होता है। इसे 'नित्यकल्याणम' कहा जाता है। इसी मंडप में वर्ष में एक बार पवित्रोत्सव, पुष्पयाग और ज्येष्ठाभिषेक जैसे उत्सव भी होते हैं।

फूलों का कक्ष (फूलगदि)

वेंकटेश्वर स्वामी के लिए प्रतिदिन अर्पित की जाने वाली फूलों की मालाएँ इसी कक्ष में बनाई जाती हैं। स्वामी को प्रतिदिन 14 फूलों की मालाएँ अर्पित की जाती हैं। सुबह अर्पित की गई फूलों की मालाएँ शाम को हटा कर नई मालाएँ अर्पित की जाती हैं।

स्वामी को प्रतिदिन अर्पित की जाने वाली 14 फूलों की मालाएँ:

1. किरीट से लेकर दोनों भुजाओं तक सजाई जाने वाली आठ हाथ मालाएँ।
2. स्वामी की भुजाओं से दोनों ओर पैरों तक लटकती सालिग्राम की मालाओं के साथ सजाई जाने वाली चार हाथ की दो मालाएँ।
3. गले से दोनों भुजाओं तक सजाई जाने वाली तीन और आधी हाथ की माला।
4. स्वामी के वक्षस्थल पर श्रीदेवी-भूदेवी के लिए एक और आधी हाथ की दो मालाएँ।
5. स्वामी के हाथों में शंख चक्र के लिए एक हाथ की दो मालाएँ।
6. स्वामी के कमर पर नंदक खड्ग के लिए दो हाथ की माला।
7. कमर से पैरों तक लटकने वाली तीन माप की मालाएँ: तीन हाथ, तीन और आधी हाथ, और चार हाथ
8. स्वामी के पैरों के चारों ओर सजाई जाने वाली दो हाथ की दो मालाएँ।
9. गले से घुटनों तक एक माला और तुलसी माला।

प्रत्येक गुरुवार शाम को होने वाली 'फूलांगी' (पुष्प) सेवा में स्वामी के सभी आभूषण हटा कर उपरोक्त मालाओं के साथ, स्वामी को विशेष रूप से फूलों की मालाओं से सजाया जाता है।

इसी कमरे में वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सवमूर्तियों और मंदिर में स्थित विभिन्न अर्चामूर्तियों के लिए भी फूलों की मालाएँ बनाई जाती हैं।

संपंगी वृक्ष और इमली(चिंत) वृक्ष

रामानुजाचार्य ने इन पेड़ों की पूजा की थी। अनंताचार्य - द्वारा लिखित 'श्री वेंकटेश्वर इतिहास माला' में संपंगी पेड़ के फूलों को वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा में उपयोग करने का उल्लेख है। तोंडमान ने वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की प्राचीर बनाते समय संपंगी वृक्ष और इमली पेड़ को न हटाने का निर्देश दिया था। हालाँकि, तीर्थयात्रियों की भीड़ के कारण अब इन वृक्षों को देवस्थानम ने हटा दिया है। वेंकटेश्वर स्वामी ने वैकुंठ से लक्ष्मी देवी की खोज करते हुए पृथ्वी पर आकर इस इमली वृक्ष के नीचे स्थित वल्मीक में बहुत समय बिताया था।

फूलों का कुआँ (पुँल बावि)

फूलों का कुआँ दर्पण मंडप के पास स्थित है। इस कुएँ को रंगदासु ने खोदा था। यह वही रंगदासु है जिसने तोंडमान के रूप में पुनर्जन्म लेकर इस कुएँ का पुनर्निर्माण किया।

ध्वज स्तंभ और बलि पीठ

ध्वज स्तंभ लकड़ी से बना है। ध्वज स्तंभ और बलि पीठ को स्वर्ण पर्त से मढ़ा गया है। ध्वज स्तंभ पर गरुड़, हनुमान, कालियामर्दन प्रतिमाएँ और शंखचक्र के चिह्न अंकित हैं। ब्रह्मोत्सव ध्वजारोहण से शुरू होता है। ध्वजारोहण के दिन गरुड़ के ध्वज को ध्वज स्तंभ पर फहराया जाता है। वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित नैवेद्य को, मंदिर के चारों ओर स्थित आठ बलि पीठों पर रखा जाता है और शेष को ध्वज स्तंभ के पास

स्थित बलि पीठ पर रखा जाता है। इन बलि पीठों पर देवताओं के लिए प्रसाद अर्पित किया जाता है।

वर्तमान ध्वज स्तंभ को 1982 में बदला गया था। 1417 से पहले ध्वज स्तंभ वेंकटेश्वर स्वामी के सामने गरुड़ की प्रतिमा के पीछे स्थित था। तीर्थयात्रियों की भीड़ के कारण इसे वहाँ से बदलकर दूसरे गोपुरम के बाहर वर्तमान स्थान पर स्थापित कर दिया गया था।

दूसरा गोपुरम

दूसरे गोपुरम के भीतर से वेंकटेश्वर स्वामी की परिक्रमा की जाती है, जिसे 'विमान प्रदक्षिणा' या 'अंग प्रदक्षिणा' कहते हैं। प्रातःकाल श्रद्धालु स्वामि पुष्करिणि में स्नान करके गीले वस्त्रों में इस मार्ग पर लेटकर परिक्रमा करते हैं, इसलिए इसे 'अंग प्रदक्षिणा मार्ग' कहा जाता है।

इस मार्ग में वरदराज स्वामी मंदिर, गरुड़ मंदिर, यज्ञशाला, वकुलमाता मंदिर, चरणामृत वितरण स्थल, दान राशि गिनने का कक्ष (परकामणी), चंदन कक्ष, विमान वेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन (गर्भगृह के ऊपर स्थित वेंकटेश्वर स्वामी), संकीर्तन आर (ताल्लपाका अन्नमाचार्य के भजन संग्रह), रामानुजाचार्य की मूर्ति, योग नरसिंह की मूर्ति, श्रीवारी हुंडी, विष्वक्सेन मंदिर और स्वर्ण कुआं (बंगारू बावी) स्थित हैं। बंगारू बावी के पास अंकुरार्पण मंडप स्थित है। इस मंडप में हनुमान, सुग्रीव, विष्वक्सेन, गरुड़, आदिशेष और अंगद जैसे उत्सव विग्रह हैं।

वरदराज स्वामी मंदिर

दूसरे गोपुरम से गुजरते ही बाईं ओर 'वरदराज स्वामी मंदिर' स्थित है। वरदराजस्वामी की प्रतिमा पाँच फीट ऊँची है। वरदराजस्वामी को प्रतिदिन तीन बार नैवेद्य और आरती अर्पित की जाती है। कांचीपुरम में वरदराजस्वामी के प्रकट होने के दिन, इस वरदराजस्वामी की विशेष रूप से अभिषेक और आरती की जाती है।

विष्वक्सेन मंदिर

'विष्वक्सेन मंदिर' हुंडी के पास स्थित है। वैखानस आगम में विष्वक्सेन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैष्णव कार्यक्रमों और मंदिर के अनुष्ठानों में, विष्वक्सेन की पहले पूजा की जाती है, और उत्सवों में पहले विष्वक्सेन की शोभायात्रा होती है। विष्वक्सेन वैकुंठ में नारायण की सेना के प्रमुख हैं।

वेंकटेश्वर स्वामी का रसोई घर (वंटशाला)

यह वंटशाला वरदराजस्वामी मंदिर के पास स्थित है, और यहीं पर वेंकटेश्वर स्वामी के लिए भोजन तैयार किया जाता है। इस रसोई में न केवल वेंकटेश्वर स्वामी के लिए, बल्कि वराह स्वामी के लिए भी भोजन तैयार किया जाता है। 'वकुलमाता मंदिर' भी यहाँ पर स्थित है। यहाँ वकुलमाता वेंकटेश्वर स्वामी और वराह स्वामी के लिए भोजन पकाकर अर्पित करती थीं।

गरुड़ मंदिर

दूसरे गोपुरम से गुजरते ही 'गरुड़ मंदिर' स्थित है। गरुड़ वेंकटेश्वर स्वामी के सामने स्थित हैं। गरुड़ छह फीट ऊँचे हैं, अपने पंख फैलाए हुए और दोनों हाथों से प्रणाम करते हुए खड़े हैं।

जय विजय

गरुड़ के सामने जय विजय स्थित हैं। इन जय विजय की पंचधातु की प्रतिमाओं को रामानुजाचार्य ने स्थापित किया था।

घंटा मंडप

गरुड़ और जय विजय के बीच स्थित मंडप में दो बड़ी घंटियाँ हैं। इसलिए इस मंडप को 'घंटा मंडप' कहा जाता है। जब वेंकटेश्वर स्वामी को नैवेद्य अर्पित किया जाता है, तो इन घंटियों को बजाया जाता है। इसी

घंटा मंडप में प्रतिदिन वेंकटेश्वर स्वामी के लिए सुबह तीन बजे सुप्रभात का पाठ किया जाता है। सुप्रभात के बाद उस दिन की वार, तिथि, नक्षत्र, वर्ष और हुंडी में प्राप्त आय की जानकारी भी दी जाती है। प्रत्येक बुधवार को सुबह भोग श्रीनिवास, श्रीमलयप्प स्वामी और विष्वक्सेन के लिए 'सहस्त्रकलशाभिषेक' किया जाता है। श्रीरामनवमी के दिन श्रीसीताराम लक्ष्मण हनुमान और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्रीरुक्मिणीकृष्ण की पूजा की जाती है।

स्नपन मंडप

जय विजय को पार करने के बाद 'स्नपन मंडप' स्थित है। इस मंडप में वेंकटेश्वर स्वामी के आभूषण और हुंडी में आए धन के भंडार को सुरक्षित रखा जाता है।

रामुल वारी मेड

स्नपन मंडप के बाद आने वाले मंडप को 'रामुलवारी मेड' कहा जाता है। एक समय में इस मंडप में सीता, राम, और लक्ष्मण की प्रतिमाएँ थीं, इसलिए इसे 'रामुलवारी मेड' कहा गया। अब उन प्रतिमाओं को वेंकटेश्वर स्वामी के गर्भगृह में स्थानांतरित कर दिया गया है। रामानुजाचार्य जब तिरुपति में तिरुमलनंबि से रामायण सुन रहे थे, तब एक ब्राह्मण ने उन्हें ये सीता, राम, और लक्ष्मण की प्रतिमाएँ भेंट की थीं। रामानुजाचार्य ने इन प्रतिमाओं को तिरुमलनंबि को भेंट किया, जिन्होंने उन्हें रामुलवारी मेड में रखकर पूजा की। इन प्रतिमाओं के अलावा हनुमान, सुग्रीव, अंगद, आदिशेष, गरुड़ और विष्वक्सेन की प्रतिमाएँ भी थीं। इन प्रतिमाओं को अंकुरार्पण मंडप में स्थानांतरित कर दिया गया है।

शयन मंडप

रामुलवारी मेड के बाद 'शयन मंडप' स्थित है। शयन मंडप में वेद मंत्र और पुरुषसूक्त का पाठ किया जाता है। रात्रि में वेंकटेश्वर स्वामी की

उत्सव मूर्ति (भोग श्रीनिवास मूर्ति) को यहाँ स्वर्ण पालने में शयन करा कर एकांत सेवा की जाती है।

इसी शयन मंडप में वेंकटेश्वर स्वामी को नैवेद्य अर्पित किए जाते हैं। विशेष नैवेद्य गर्भगृह में अर्पित किए जाते हैं। प्रतिदिन होने वाली सुप्रभात सेवा, पुष्पसेवा, सहस्त्रनामार्चन सेवा, बुधवार को सहस्त्रकलशाभिषेक सेवा, गुरुवार को तिरुप्पावड सेवा, और शुक्रवार को अभिषेक सेवा में भाग लेने वाले भक्तों को ही शयन मंडप में खड़े होकर स्वामी के दर्शन का अवसर मिलता है।

कुलशेखर पड़ी (दहलीज़)

शयन मंडप से आगे बढ़ने पर वेंकटेश्वर स्वामी का गर्भगृह आता है। गर्भगृह में प्रवेश करने के लिए दहलीज को पार करना होता है। इसे 'कुलशेखर पड़ी' कहा जाता है, क्योंकि कुलशेखर महाराज ने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की थी, "स्वामी! यदि मैं आपकी दहलीज बन जाऊँ, तो मैं आपको सदा देख सकता हूँ।" इसलिए इस दहलीज को 'कुलशेखर पड़ी' कहा गया है।

गर्भगृह

तेरह फीट के गर्भगृह में वेंकटेश्वर स्वामी शालिग्राम मूर्ति के रूप में आठ फीट के आकार में विराजमान हैं। इस गर्भगृह में सुदर्शन, सीता-राम-लक्ष्मण, और रुक्मिणी-कृष्ण की उत्सव मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त, वेंकटेश्वर स्वामी की चार उत्सव मूर्तियाँ भी हैं: 1. भोग श्रीनिवास मूर्ति 2. कोलुवु श्रीनिवास मूर्ति 3. उग्र श्रीनिवास मूर्ति 4. मलयप्प स्वामी। इन उत्सव मूर्तियों का प्रतिदिन अभिषेक किया जाता है और इन्हें वस्त्र, आभूषण, और फूलमालाओं से सजाया जाता है। यहाँ शालिग्राम और अखंड दीप भी हैं।

भगवान को सुबह पुष्प अर्पित करते समय दिव्यप्रबंध (आलवारों की स्तुतियाँ) गाई जाती हैं। दोपहर में पद्मपुराण से वेंकटेश्वर सहस्त्रनाम का

पाठ करते हुए तुलसी दल अर्पित किए जाते हैं। धनुर्मास में तुलसी की जगह बेलपत्र चढ़ाए जाते हैं। भगवान की पूजा वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार होती है। गर्भगृह के ऊपर स्थित शिखर को 'आनंद निलय' कहते हैं, जिसे गरुड़ ने वैकुंठ से लाकर स्थापित किया था।

दर्शन विधि

प्रथम बार श्री वेंकटेश्वर के दर्शन करने वाले ग्वालों के वंशज प्रतिदिन सुबह सबसे पहले भगवान का दर्शन करते हैं। सुबह 3 बजे, श्रीवैष्णव आचार्य, अन्नमाचार्य के वंशज, मंदिर के अधिकारी और सेवक घंटा मंडप में एकत्र होते हैं। ग्वाला 'बंगारु वाकिली' (स्वर्ण द्वार) का ताला खोलकर दीप प्रज्वलित करता है और भगवान के दर्शन करता है। इसके बाद पुजारी 'प्रतिवादि भयंकर अण्णन' द्वारा रचित ...

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥

"हे कौसल्या के सुपुत्र राम, पूर्व दिशा में सुबह हो रही है। हे श्रेष्ठ पुरुष, संध्यावंदन (सुबह की पूजा) का समय हो गया है, जागिए।"

यह श्लोक 'वाल्मीकि रामायण' से है। जब विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जा रहे थे, तब पहले दिन की सुबह उन्होंने इस श्लोक के साथ राम और लक्ष्मण को जगाया था।

प्रतिवादि भयंकर अण्णा ने इस श्लोक को वेंकटेश्वर स्वामी को निद्रा से जगाने के लिए रचित अपने सुप्रभात स्तोत्र का पहला श्लोक बनाया।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकांत त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु॥

"हे गोविन्द! जागिए। गरुड़ ध्वज धारक देव! जागिए। लक्ष्मी देवी के प्रियतम! जागिए। तीनों लोकों को शुभ प्रदान करो।" (2)

इस श्लोक से नारायण के मंदिर में स्थित विष्णु, श्रीकृष्ण, श्रीराम आदि अर्चा विग्रहों को निद्रा से जगाया जाता है।

मातः समस्त जगतां मधुकैटभारे वक्षो विहारिणि मनोहर दिव्यमूर्ते।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रिय दानशील श्री वेंकटेश दयिते तव सुप्रभातम्॥

"समस्त लोकों की माता, वेंकटेश्वर स्वामी के वक्षस्थल पर विहार करने वाली, मनोहर दिव्य स्वरूप वाली, जगदीश्वरी, आश्रितों की इच्छाएँ पूर्ण करने वाली, श्री वेंकटेश्वर की पत्नी, हे लक्ष्मी देवी! आपको सुप्रभात हो। (पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए!)" (3)

तव सुप्रभातमरविंद लोचने भवतु प्रसन्न मुखचंद्रमंडले।
विधिशंकरेंद्र वनिताभिरर्चिते वृषशैलनाथ दयिते दयानिधे॥

"कमल पुष्प जैसे नेत्रों वाली, चंद्र के समान मुख वाली, हे लक्ष्मी देवी! आप सरस्वती, पार्वती और शची देवी द्वारा पूजित हैं। श्री वेंकटेश्वर की पत्नी, दयानिधि, हे देवी! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए।" (4)

प्रतिवादि भयंकर अण्णन यहाँ वेंकटेश्वर स्वामी के हृदय में स्थित लक्ष्मी देवी को निद्रा से जगा रहे हैं। इसके बाद वेंकटेश्वर स्वामी को इस प्रकार जगाया जाता है:

"अत्रि आदि सप्तमहर्षि अपनी संध्यावंदन समाप्त कर आकाशगंगा से कमल पुष्प लाकर आपके पद्म चरणों की पूजा करने हेतु आ रहे हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (5)

"हे शेषाचलपति! शिव, ब्रह्मा, कुमारस्वामी, इंद्र आदि देवता आपके वामन, (नरसिंह, राम, कृष्ण) आदि अवतारों का कीर्तन कर रहे हैं। बृहस्पति आज की तिथि और समय का फल पढ़ रहे हैं। पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (6)

"नवविकसित कमल, नारियल, और अन्य फूलों की सुगंध से हवा धीरे-धीरे बह रही है। हे वेंकटेश्वर, शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (7)

"हे शेषाचलपति! सुंदर पिंजरों में पाले हुए तोते थोड़ा खाना खाने के बाद बचे हुए केले और पायसम को खाकर मधुर गीत गा रहे हैं। हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (8)

"हे अनंता! नारद भी मधुर ध्वनि करती अपनी वीणा के तारों को बजाते हुए, नृत्य करते हुए, आपके दिव्य चरित का गायन कर रहे हैं। हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (9)

"मधुमक्खियाँ सरोवरों में स्थित कमल के फूलों से मधु का सेवन कर आपकी स्तुति करने आ रही हैं। हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (10)

"हे शेषाद्रिनाथ वेंकटेश्वर! ग्वालों की गोपियाँ दही मथ रही हैं और उस मथनी की ध्वनि दिशाओं में प्रतिध्वनित हो रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि ध्वनि और प्रतिध्वनि के कारण दही के मटके और दिशाएँ आपस में झगड़ रहे हैं। हे देव! हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (11)

"सूर्य के मित्र कमल के फूलों पर स्थित भौंरे, अपनी देह की चमक से नीलकमल की काली आभा को अपहृत करने हेतु भेरी की ध्वनि कर रहे हैं। हे शेषाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (12)

"हे श्रीमान देव! आप वर देने वाले हैं। आप सभी लोकों के बंधु हैं। हे वेंकटाचलपति श्रीनिवास! आप सभी लोकों में महासागर जैसी कृपा के धनी हैं। आप लक्ष्मी देवी के वक्षस्थल का निवास स्थान हैं। आप दिव्य स्वरूप वाले हैं। हे वेंकटेश्वर! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (13)

“ब्रह्मा, शिव और सनंदन, पवित्र पुष्करिणि में स्नान कर शुद्ध हो चुके हैं और द्वारपालों द्वारा सिर पर डंडे मारने की परवाह किए बिना आपके लिए इंतजार कर रहे हैं। ओ शेषाचलपति! पूर्व में दिन निकल रहा है, जागिए। (14)

“हे वेंकटेश्वर! आपके निवास इस पर्वत को सभी लोग शेषशैल, गरूडाचल, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि जैसे नामों से प्रतिदिन पुकारते हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (15)

“ईशान, इंद्र, अग्नि, यम, निरृति, वरुण, वायु, कुबेर आदि अष्टदक्पाल अपने सिर पर हाथ रखकर आपको प्रणाम कर आपकी सेवा के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (16)

“हे देव! गरुड़, मृगराज, आदिशेष, गजेंद्र और अश्वराज अपनी-अपनी शक्ति दिखाने के लिए आपके अनुमोदन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (17)

“सूर्य, चंद्रमा, अंगारक, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतू जैसे नवग्रह आपके दासों के दास बनकर आपकी सेवा करते हैं। हे वेंकटाचलपति! पूरब में सुबह हो रही है, जागिए। (18)

“हे स्वामी! आपके समीप, आपकी चरणधूलि से अपने सिर को पवित्र करने वाले लोग स्वर्ग या मुक्ति की इच्छा नहीं करते। वे इस चिंता में रहते हैं कि इस कल्प के समाप्त होने के बाद आने वाले कल्प में उन्हें आपकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (19)

“स्वर्ग या मुक्ति की ओर जाते हुए लोग मार्ग में आपके मंदिर, गोपुरम और शिखर देखकर आनंदित होकर स्वर्ग या मुक्ति की इच्छा

छोड़कर आपके दर्शन के लिए वहीं रुक जाते हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (20)

"हे देवाधिदेव! आप श्रीदेवी और भूदेवी के पति हैं, दया जैसे गुणों के सागर हैं, सभी लोकों के एकमात्र शरणदाता हैं और अनंत तथा गरुड़ आपके चरणों की सेवा करते हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (21)

"हे वेंकटेश्वर! आप कमल जैसी नाभि वाले हैं। आप पुरुषोत्तम, वासुदेव, वैकुंठ और माधव हैं। आप लोगों के रक्षक है, हाथ में चक्र धारण करने वाले है और श्रीवत्स चिह्न से सुशोभित हैं।आप शरण में आए लोगों को कल्पवृक्ष की तरह सुरक्षित रखते हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (22)

" हे देव! जो कामदेव का घमंड चूर कर देने वाले दिव्य रूप वाले हों , आपकी दृष्टि कमल की कली जैसी युवा कन्याओं के उरोजों पर घूमती रहती है। आप कीर्ति के स्वामी हो। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (23)

"हे वेंकटेश्वर! आपने मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, बलराम, श्रीकृष्ण और कल्कि रूप धारण किए हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (24)

"हे देव! वैदिक भक्त इलायची और पच्चाई कपूर से सुगंधित पवित्र गंगा जल को स्वर्ण कलश में भरकर खुशी-खुशी आपकी सेवा के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (25)

"हे देव! सूर्य उदित हो रहा है। कमल खिल रहे हैं। पक्षियों की चहचहाहट से दिशाएँ गूंज रही हैं। श्रीवैष्णव आपके समक्ष शुभकामनाएँ माँगते हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (26)

"हे देव! ब्रह्मा आदि देवता, महर्षि सनंदन जैसे सत्पुरुष और योगी, पूजा की मंगल सामग्री लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (27)

"हे देव! आप लक्ष्मी देवी के निवास स्थान हैं। आप सद्गुणों का समुद्र हैं, संसार सागर को पार करने के लिए उपयुक्त सेतु हैं, वेदांतों द्वारा समझे जाने वाले महिमावान हैं और भक्तों के वश में रहने वाले हैं। हे वेंकटाचलपति! पूर्व दिशा में सुबह हो रही है, जागिए। (28)

"जो लोग इस सुप्रभात स्तोत्र को प्रतिदिन भक्ति से पढ़ते हैं, और इस प्रकार वेंकटेश्वर का स्मरण करते हैं, उन्हें मुक्ति सरलता से प्राप्त होती है।" (29)

इस प्रकार पुजारी सुप्रभातम् स्तोत्र का पाठ करते हुए अपने सिर को वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों पर रखते हैं और प्रणाम करते हैं। इसके बाद, पुजारी शयन मंडप में स्वर्ण पालने में स्थित भोग-श्रीनिवास के पास जाकर ताली बजाकर उन्हें नींद से जगाते हैं, उनके चरणों को स्पर्श कर प्रणाम करते हैं और गर्भगृह में ले जाते हैं।

फिर वेंकटेश्वर स्वामी को दंतधावन (मंजन) और आचमन कराते हैं, गौ दुग्ध अर्पित करते हैं और आरती करते हैं। इसके बाद स्वर्ण वाकिली (स्वर्ण द्वार) के ताले पूरी तरह से खोल दिए जाते हैं। उस समय बाहर से सुप्रभात स्तोत्र का पाठ कर रहे पुजारी, सुप्रभात टिकट लिए हुए श्रद्धालु, और अन्नमाचार्य वंश के लोग वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हैं। ब्रह्माजी द्वारा रात्रि में वेंकटेश्वर स्वामी के लिए रखे गए तीर्थम् (चरणामृत) और शठारी (भगवान के चरणकमल) को पुजारी पहले ग्रहण करते हैं और फिर शेष पुजारियों और वहाँ उपस्थित भक्तों को देते हैं।

प्रत्येक गुरुवार को वेंकटेश्वर स्वामी को बिना फूलहार, आभूषणों और बड़े तिलक के स्थान पर छोटा तिलक करके केवल धोती और

उत्तरीय पहनाकर सजाया जाता है। इस सज्जा को 'गोपाल वेश' कहा जाता है।

अन्नमाचार्य ने नेत्रोत्सव दर्शन शुक्रवार को देखकर वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की थी : "शुक्रवार सुबह अलमेलुमंगम्मा को वक्षस्थल में धारण करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। आभूषणों के बिना, केवल धोती और उत्तरीय में अलंकृत वेंकटेश्वर स्वामी को देखा।"

अभिषेक

तिरुमलनंबि वंश के लोग आकाशगंगा तीर्थ से लाए गए पवित्र जल से वेंकटेश्वर स्वामी के उत्सव विग्रहों का अभिषेक करते हैं और उन्हें वस्त्राभूषण से सजाते हैं। प्रत्येक शुक्रवार को वेंकटेश्वर स्वामी का अभिषेक पचाई-कर्पूर, पुनुगु, चंदन, जव्वा आदि सुगंधित द्रव्यों को मिलाकर किया जाता है। वक्षस्थल पर स्थित लक्ष्मी देवी को हल्दी भी लगाई जाती है। फिर सोलह तोले हरे कपूर और डेढ़ तोले कस्तूरी से तिलक किया जाता है, चौबीस हाथ की लंबाई और चार हाथ की चौड़ाई की रेशमी धोती, और बारह हाथ की लंबाई और दो हाथ की चौड़ाई की रेशमी उत्तरीय पहनाई जाती है। वेंकटेश्वर स्वामी को चौदह फूलों की मालाएँ, तुलसी मालाएँ, और उन्तालिस आभूषण पहनाकर सहस्रनाम कीर्तन करते हुए तुलसी दल अर्पित किये जाते हैं।

शयन आरती

तरिगोंड वेंगमांबा रात में मंदिर बंद करने के समय वेंकटेश्वर स्वामी को आरती देती थीं। आज भी उसी प्रकार वेंकटेश्वर स्वामी को आरती देकर भोग श्रीनिवास को स्वर्ण पालने में सुलाया जाता है। अन्नमाचार्य ने एकांत सेवा में कई कीर्तनों का गायन किया, जिनमें से दो कीर्तन का भाव इस प्रकार है,

"हे मुकुंद! हे गोविन्द! हे अनंत-आनंद देने वाले! हे मदन (प्रद्युम्न) के जन्मदाता मैं सुंदर सोने के बर्तन में दूध लाया हूँ, यहाँ आओ! गोपिकाएँ कह रही हैं कि आप चोर हो। यहाँ, मेरे सामने आओ! देवकी पुत्र, आपने गोवर्धन को छत्र के रूप में उठाया। कंस के अहंकार को तोड़कर, मथुरा नगर को जीतकर, शान से घूमने वाले मुकुंद! यहाँ आओ! सम्पूर्ण समृद्धि प्रदान करने वाले मुकुंद! आपका मंगल हो।"

"हे वेंकटरमण! सोलह हजार गोपिकाएँ अपनी प्रेममयी दृष्टि से आपको देखते हुए झूला झुला रही हैं। विश्वविख्यात गोप रक्षक! अच्युत! अनंत! आप सोने के भवन में विश्राम करें। भक्तगण आपकी स्तुति कर रहे हैं। श्रीदेवी और भूदेवी आपके चरणों की सेवा कर रही हैं। अब आप सुखपूर्वक विश्राम करें।"

नैवेद्य (भोग)

सुप्रभात के समय स्वामी को मक्खन, दूध और चीनी अर्पित की जाती है। सुप्रभात के बाद गुड़ मिलाकर तिल का चूरा अर्पित किया जाता है। इसके बाद सहस्रनामार्चन होता है जिसके पश्चात् पुलिहोरा (इमली-भात), पोंगल, चीनी-पोंगल, लड्डू, वड़ा, अप्पम अर्पित किए जाते हैं। ये सब व्यंजन गर्भगृह के बाहर अर्पित किये जाते है और इसी समय गर्भगृह में मिट्टी की टूटी हांडी में दही-चावल अर्पित किया जाता है। दोपहर में अष्टोत्तर शतनामार्चन के बाद पुलिहोरा, पोंगल, दही-चावल, चीनी पोंगल, लड्डू, वड़ा, अप्पम, शुद्ध चावल, अलग-अलग चावल, सीरा, पायसम, केसरी भात, खीर और कदंबम अर्पित किए जाते हैं। शाम को अष्टोत्तर शतनामार्चन के बाद चीनी पोंगल, पोंगल, पुलिहोरा, और कदंबम अर्पित किए जाते हैं। एकांत सेवा के बाद दूध, फल, खजूर और चीनी से बने मेवे का नैवेद्य अर्पित किया जाता है। शोभायात्रा और उत्सवों में अनेकों नैवेद्य अर्पित किए जाते हैं। विशेष पूजा के समय विशेष भोग भी अर्पित किए जाते हैं।

श्रीकृष्ण के नाम

श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के लिए सुबह होने वाली सहस्त्रनामार्चन और दोपहर तथा शाम की अष्टोत्तर शतनामार्चन में निम्नलिखित श्रीकृष्ण के नाम शामिल होते हैं: ॐ देवकी गर्भ संभूताय नमः। ॐ यशोदैक्षण ललिताय नमः। ॐ वसुदेव कृत स्तोत्राय नमः। ॐ नंद गोपमनोहराय नमः। ॐ नीलकुंतलाय नमः। ॐ तृणावर्त विनाशाय नमः। ॐ गर्ग रोहित नामांकिताय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ गोपिका स्तन्यपायिने नमः। ॐ बलभद्रानुजाय नमः। ॐ वत्सजित नमः। ॐ नवनीतापहर्त्रे नमः। ॐ वत्सान्तकाय नमः। ॐ बकद्वेषिणे नमः। ॐ महाजगर चंडाग्नये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ कृष्ण सखाय नमः।

ग्वाला वंश

वेंकटेश्वर स्वामी के पहले दर्शन करने वाले ग्वाला जाति के लोग अब भी प्रतिदिन सुबह सबसे पहले वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हैं। उत्सव मूर्तियों को गर्भगृह से उत्सवों के लिए बाहर ले जाने और वापिस लाने के समय वे दीपक लेकर "श्रीवारी को रास्ता दीजिए" कहते हुए आगे चलते हैं। पुजारियों को घर से सेवा में लेकर आने की सेवा भी ग्वाला जाति के लोगों की ही है।

रामानुजाचार्य की मूर्ति

रामानुजाचार्य श्रीरंगम में 'जीव समाधि' में लीन हो गए थे। इस बात को जानकर अनंताचार्य अत्यंत दुःखी हो गए। इस दुःख के कारण उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी की फूल सेवा नहीं की, और स्वामी के दर्शन के लिए भी नहीं गए। वेंकटेश्वर स्वामी अनंताचार्य के पास आकर बोले, "तुम मेरे लिए फूलों की माला और तुलसी माला क्यों नहीं बना रहे हो, और मेरे दर्शन के लिए क्यों नहीं आ रहे हो?" अनंताचार्य ने उत्तर दिया, "हमारे गुरु रामानुजाचार्य वैकुंठ चले गए हैं। उस पीड़ा के कारण मैं आपकी सेवा नहीं कर पा रहा हूँ।"

वेंकटेश्वर स्वामी ने अनंताचार्य से कहा, "मेरे भक्त अपनी इच्छा के अनुसार अपने शरीर का त्याग करते हैं। इसी तरह, रामानुजाचार्य ने भी अपनी इच्छा के अनुसार शरीर का त्याग किया। रामानुजाचार्य केवल तुम्हारे गुरु नहीं हैं, वे मेरे भी गुरु हैं! उन्होंने मुझे शंख और चक्र धारण कराए। रामानुजाचार्य के वैकुंठ गमन से जितना तुम दुःखी हो, उतना ही मैं भी दुःखी हूँ। तुमने रामानुजाचार्य की मूर्ति बनवाई है। यदि तुम वह मूर्ति मुझे दें दोंगे, तो मैं उसे अपने मंदिर में प्रतिष्ठित करूँगा।" अनंताचार्य ने कहा कि आप मूर्ति को ले जा सकते हैं। स्वामी ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि अनंताचार्य के पास रामानुजाचार्य की मूर्ति है, उसे मेरी हुंडी के सामने स्थापित करो। राजा ने ऐसा ही किया। अब भी रामानुजाचार्य का विग्रह स्वामी की हुंडी के सामने स्थापित है और हम उसका दर्शन कर सकते हैं।

यह मूर्ति भाष्य लिखते हुए प्रतीत होती है, इसलिए इस विग्रह को 'भाष्यकार' कहा जाता है। अन्नमाचार्य ने रामानुजाचार्य के इस विग्रह की इस प्रकार स्तुति की:

"इन भाष्यकार ने कुछ भी न जानने वाले अज्ञानियों को आचार्य पदवी देकर महान बनाया। ब्रह्मदेव को खोए हुए वेदों को वापिस देने वाले श्रीहरि की कृपा से इन्होंने सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया और कलियुग में अवतरित होकर इन शास्त्रों के ज्ञान को सभी तक पहुँचाया।"

"जब पूरी भूमि जलप्रवाह में डूब रही थी, तब आदिनारायण ने देवताओं को अपने में ही आश्रय दिया और वटपत्रशायी (शिशु रूप में एक पीपल के पत्ते पर तैरते हुए, आदिनारायण) से कृपा लेकर शास्त्र विरुद्ध मतों को उड़ाते हुए इन भाष्यकार ने मुक्ति का मार्ग दिखाया।"

"कमल के समान कोमल अपने हाथों से अपने पादचिन्ह दिखाते हुए मुक्ति मार्ग दिखाने वाले श्रीवेंकटेश्वर की करुणा से ये भाष्यकार अवतरित हुए। नारायण मंत्र के प्रभाव से इन भाष्यकार ने हमारे पापों को मिटा दिया।"

श्री योग नरसिंहस्वामी

योग नरसिंहस्वामी की मूर्ति रामानुजाचार्य की मूर्ति के पास स्थित है। तिरुमला पहाड़ियों पर स्थित इस योग नरसिंहस्वामी को रामानुजाचार्य ने लाकर मंदिर में स्थापित किया। एक नरसिंह चतुर्दशी के दिन अन्नमाचार्य ने योग नरसिंहस्वामी की अर्चामूर्ति की इस प्रकार स्तुति की:

"वह नरहरि, समस्त संपदाओं की मूल लक्ष्मी देवी को अपने जंघा पर बैठाकर, दर्शन दे रहे हैं और मधुर मुस्कान बिखेर रहे हैं। शेषनाग के फन पर मणियों से जटित होकर बैठे, लक्ष्मीनरसिंह अपने शरणागतों को वरदान दे रहे हैं।

"स्वर्ण महलों में शेष के बिस्तर पर विराजमान नरहरि, अप्सराओं के नृत्य का आनंद लेते हुए अपनी भव्यता प्रकट कर रहे हैं। शोभनीय और सौंदर्य से अलंकृत, राजसी वैभव का प्रदर्शन करते हुए, लक्ष्मीनरसिंह हमारे निकट स्थित हैं।"

"नरसिंह स्वामी की यह मुद्रा भी विशेष है, जिसमें वह लक्ष्मी को अपने बाएँ जंघा पर बैठाए हुए हैं। उन्होंने स्वर्ण कंगन पहन रखे हैं, और अपना एक पैर नीचे फैलाकर और दूसरा मुड़ा हुआ रखकर पूजा स्वीकार कर रहे हैं। वह लक्ष्मीनरसिंह स्वामी, सात पहाड़ियों के वेंकटाद्रि और अहोबिल क्षेत्र में गौरव से शोभित हो रहे हैं।"

कटाह तीर्थ की महिमा

कटाह तीर्थ हुंडी के सामने स्थित है। वेंकटेश्वर स्वामी का अभिषेक करने के बाद पानी एक कुंड में आता है, जिसे 'कटाह तीर्थ' कहते हैं। "कटाह तीर्थ की महानता शिवजी के अलावा किसी को नहीं पता। गंगा, यमुना जैसी सभी तीर्थ नदियाँ आकर कटाह तीर्थ की सेवा करती हैं। इस तीर्थ में स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और मुक्ति की प्राप्ति होती है," इस प्रकार सूत गोस्वामी ने मुनियों को कटाह तीर्थ की महिमा बताई और आगे केशव की कथा सुनाई:

"तुंगभद्रा नदी के तट पर पद्मनाभ का एक पुत्र था जिसका नाम केशव था। केशव शराब, मांस, व्यभिचार और जुए जैसे दुष्कर्मों में समय व्यतीत करता था। एक दिन उसने धन के लिए एक ब्राह्मण का वध कर दिया। इस कारण उसे ब्रह्महत्या का पाप लगा। केशव अपने पिता पद्मनाभ के पास जाकर अपनी स्थिति बताकर प्रार्थना करने लगा। पद्मनाभ, भारद्वाज मुनि के पास गए और अपने पुत्र के उद्धार के लिए प्रार्थना की। मुनि ने कहा, "सुवर्णमुखारी नदी के तट पर वेंकटाचल पर्वत पर कटाह तीर्थ स्थित है। उस तीर्थ में स्नान कराओ।" पद्मनाभ ने ऐसा ही किया और अपने पुत्र को पापों से मुक्त किया।

उपरोक्त उपमंदिरों के अलावा श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में कई अन्य उपमंदिर भी हैं।

4

श्री वेंकटेश्वर स्वामी उत्सव

वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में साल भर में 433 उत्सव मनाए जाते हैं। इनमें निम्नलिखित प्रमुख उत्सव शामिल हैं: नित्य कल्याणम, विशिष्ट पूजा, अष्टदल पाद पद्माराधना, सहस्त्र कलशाभिषेकम, तिरुप्पावड सेवा, पूलांगी सेवा, शुक्रवार अभिषेकम, आकाशगंगा तीर्थ से अभिषेक, निज पाद दर्शनम, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्रीराम नवमी, वराह द्वादशी, वरदराजस्वामी आविर्भावम्, ब्रह्मोत्सवम, डोलोत्सवम, सहस्त्र दीपालंकरणम्, रथ सप्तमी, वैकुंठ एकादशी, पुष्प यागम, पद्मावती परिणयम, पवित्रोत्सवम, ऊंजल सेवा, ज्येष्ठाभिषेकम, वसंतोत्सवम, अभिदया अभिषेकम, पुप्पि पल्लड़ी, कोइल आल्वार तिरुमंजनम, पूराभिषेकम और तेप्पोत्सवम।

कई उत्सवों का विवरण नीचे दिया गया है:

ज्येष्ठाभिषेकमः ग्रीष्म ऋतु की तपन कम करने और आगामी वर्षा ऋतु में पर्याप्त वर्षा हेतु वैष्णव मंदिरों में ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठा नक्षत्र के दौरान यह उत्सव मनाया जाता है, जिसमें विशेष अभिषेक किया जाता है। इस अभिषेक में 108 कलशों (घड़ों) में भरे जल से प्रतिदिन तीन घंटे, तीन दिनों तक अभिषेक होता है। ज्येष्ठ माह में होने वाले उत्सव के कारण इसे 'ज्येष्ठाभिषेकम' कहा जाता है। अभिषेक के बाद भगवान को सजाकर शोभायात्रा भी निकाली जाती है।

वसंतोत्सवम्ः श्रीदेवी भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामी को समर्पित वसंत ऋतु में आनेवाले ये उत्सव को 'वसंतोत्सवम' कहा जाता है। गर्मियों के ताप से राहत पाने के लिए आयोजित इस उत्सव को 'उपशमनोत्सवम्' भी कहा जाता है। इस उत्सव में सुगंधित पुष्पों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के मधुर फलों का नैवेद्य भी अर्पित किया जाता है।

इस वसंतोत्सव को अन्नमाचार्य ने इस प्रकार वर्णित किया: "वे तीर्थ मार्ग चाँदनी से चमक रहे हैं। बिना कोई ठंडी हवा के ही फूलों की वर्षा हो रही है। कुछ लोग नृत्य कर रहे हैं, कुछ मधुर स्वर में गा रहे हैं। तब स्वामी हल्का भोजन लेकर तांबूल ग्रहण करते हैं और चंदन की सुगंध को स्वीकार करते हैं। स्वामी और देवी के सिर पर स्त्रियाँ सुगंधित जल डाल रही हैं। इस प्रकार श्रीवेंकटेश्वर इतने सुंदर नजारों के बीच वसंत का आनंद ले रहे हैं, तो उन पर प्रेम जागृत होना स्वाभाविक है! स्वामी इस प्रकार अनेक भोगों का आनंद ले रहे हैं। श्रीवेंकटेश्वर अलमेलुमंग (लक्ष्मी देवी) के साथ कुशलता से वसंतोत्सव मनाते हुए विहार कर रहे हैं।"

विशिष्ट पूजा: हर सोमवार सुबह 6 बजे होने वाली मुख्य सेवा विशिष्ट पूजा है। यह सेवा संपंगी परिक्रमा के कल्याण मंडप में श्रीदेवी-भूदेवी के साथ श्री मलयप्पस्वामी को अर्पित की जाती है।

सहस्र कलशाभिषेकम: हर बुधवार सुबह 6 बजे तिरुमला में स्वर्ण वाकिली के सामने होने वाली मुख्य सेवा सहस्र कलशाभिषेकम है। भोग श्रीनिवासमूर्ति के साथ श्रीदेवी-भूदेवी के साथ श्री मलयप्पस्वामी का पंचामृत के साथ-साथ हजार कलशों के जल से अभिषेक किया जाता है। इसे सहस्र कलशाभिषेकम कहा जाता है।

तिरुप्पावड सेवा (अन्नकूट उत्सव): गुरुवार सुबह 6 बजे वेंकटेश्वर स्वामी (मूलविराट) के सभी आभूषणों को हटा दिया जाता है और तिलक को पतला कर दिया जाता है ताकि उनके नेत्र स्पष्ट दिख सकें। इसके बाद, स्वामी के सामने द्वार पर एक बड़े शिखर की तरह पुलिहोरा (इमली चावल) का ढेर सजाया जाता है। पुलिहोरा के साथ जलेबी, चकली, नारियल, चंदन लेप, कुमकुम और दीपक को भी सुंदरता से सजाया जाता है। पुलिहोरा के ढेर को सीधे गर्भगृह में वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित किया जाता है। इसके बाद, वेदपंडित वेदपाठ और श्रीनिवास गद्यम का पाठ करते हैं।

पूलांगी सेवा: प्रत्येक गुरुवार रात 8 बजे वेंकटेश्वर स्वामी के लिए होने वाली पुष्प सेवा को 'पूलांगी सेवा' कहा जाता है। यह सेवा पूरी तरह एकांत में होती है। पुजारी फूलों की मालाओं से वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति को पूरी तरह सजाते हैं। पूलांगी सेवा के बाद भक्त फूलों की सजावट में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर सकते हैं।

अष्टदल पाद पद्माराधना सेवा: यह सेवा 1984 से चल रही है। हर मंगलवार सुबह 9:30 बजे 108 अष्टदल (आठ पंखुड़ी) स्वर्ण कमल पुष्पों से स्वामी की सेवा की जाती है। प्रत्येक पुष्प स्वर्ण से निर्मित होता है और कीमती रत्नों से अलंकृत होता है।

तेप्पोत्सवम (नौका उत्सव): प्रतिवर्ष पाँच दिनों तक स्वामि पुष्करिणिमें नौका पर उत्सव होते हैं। इन्हें 'तेप्पोत्सवम' कहा जाता है। पहले दिन एकादशी को सीता, श्रीराम, और लक्ष्मण, दूसरे दिन द्वादशी को रुक्मिणी और श्रीकृष्ण, और अंतिम तीन दिनों में श्रीदेवी-भूदेवी के साथ श्री मलयप्प स्वामी नौका उत्सव में भाग लेते हैं। अन्नमाचार्य ने इस नौका उत्सव के बारे में कई कीर्तनों का गायन किया। उनमें से एक कीर्तन का भाव इस प्रकार है:

"आपके अनेक प्रकार के नौका उत्सव होते हैं। दूध के समुद्र में सर्प को नौका बनाकर नौका उत्सव मनाया, प्रलय के समय समुद्र में वटपत्र पर तैरते रहे, क्षीरसागर मंथन के दौरान मंदर पर्वत को तैराया, यमुना नदी में कालिया नाग के फन पर नृत्य करते हुए तैरे, सोलह हजार गोपिकाओं के श्रम और परिश्रम के पसीने से बनी नौकाओं पर आप विहार करते हैं और आज स्वामि पुष्करिणि में नौका उत्सव मना रहे हो। हे स्वामी! कृपया यह बताइए कि इनमें से कौन सा तेप्पोत्सव (नौका उत्सव) आपको सबसे प्रिय है?"

ब्रह्मोत्सवम: ब्रह्माजी ने देवताओं के साथ वेंकटाचल में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर उत्सव मनाए। इन उत्सवों को 'ब्रह्मोत्सवम' कहा

जाता है। ब्रह्माजी ने वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में दीप प्रज्ज्वलित किया, जो आज तक निरंतर जलता आ रहा है, इसलिए इसे 'अखंड दीप' कहा जाता है। वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सव मूर्ति श्री मलयप्प स्वामी को श्रीदेवी-भूदेवी के साथ शेष वाहन, हंस वाहन, सिंह वाहन, मोती की पालकी, सर्वभूपाल वाहन, गरुड़ वाहन, हनुमंत वाहन, गज वाहन, सूर्यप्रभ वाहन, चंद्रप्रभ वाहन, और अश्व वाहन पर शोभायात्रा की जाती है। अंतिम दिन, सुदर्शन चक्र को स्वामि पुष्करिणि में स्नान कराया जाता है, जिसे 'चक्रस्नान' कहा जाता है। ब्रह्मोत्सवम में प्रतिदिन श्री मलयप्प स्वामी और श्रीदेवी-भूदेवी से पहले सुदर्शन की शोभायात्रा होती है। अन्नमाचार्य ने इस ब्रह्मोत्सव की इस प्रकार स्तुति की:

"जो वेंकटेश्वर स्वामी आनंदपूर्वक अपने वाहन पर शोभायमान हैं, उनकी स्तुति कीजिए। स्वर्ण रथ पर गरुड़ ध्वज के साथ, वे श्रीदेवी और भूदेवी के मध्य विराजमान हैं। हे भक्तों! आगे बढ़िए और रथ को खींचिए। अप्सराएँ नृत्य कर रही हैं, गंधर्व गा रहे हैं, और विष्वक्सेन अपने सेनापति के रूप में मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।"

"ब्रह्मोत्सव वर्षाकाल में ही आता है। इस यात्रा को एक व्रत मानते हुए लोग दूर-दूर से, सभी दिशाओं से अपने परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों के साथ वर्षाकाल में भी आते हैं। गठरी, थैले, टोकरियों , उत्तम आभूषण, हाथी, घोड़े और अपनी पत्नियों के साथ चलते हैं। राजा, मंडलपति, जगदेकपति और चतुर लोग सभी धन-धान्य के साथ वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए वर्षा की परवाह किए बिना आते हैं।"

"अप्सराएँ उल्लास के साथ नृत्य और गान कर रही हैं। गरुड़वाहन स्वर्ण रथ पर सड़कों पर विचरण कर रहे हैं, देवता और मुनि प्रेम से सिर हिला रहे हैं। धरती का भार सहने वाले हरि, इंद्र के रथ पर दिशाओं को जीत रहे हैं, शेषाद्रि, ब्रह्मा और शिव स्वामी की सेवा कर रहे हैं। अलमेलुमंग के साथ वेंकटेश्वर रथ पर आ रहे हैं, नारदादि मुनि स्वामी की स्तुति कर रहे हैं।"

“इतने विविध प्रकार के वाहनों की सवारी कैसे सीखी, स्वामी! इसलिए हम आपकी इतनी स्तुति करते हैं। पारिजात अपहरण के लिए गरुड़ की सवारी की, ब्राह्मण कन्याओं का उद्धार करने के लिए रथ पर सवार हुए, सीता देवी के साथ अयोध्या लौटते समय कुबेर के पुष्पक विमान की सवारी की, वानर सेनापतियों के सामने हनुमान पर सवार होकर रावण पर आक्रमण किया, कल्कि अवतार में अधर्म का नाश करने के लिए घोड़े की सवारी की और अब वेंकटाद्रि पर पालकी की सवारी की।”

“हम जैसे लोगों की इच्छाएँ पूरी करने के लिए देवताओं के देवता दिव्य रथ की सवारी कर रहे हैं। ब्राह्मण पुत्रों को जीवित करने के लिए एक ही दिन में रजत रथ पर सवार होकर समुद्रों को पार किया। श्रीराम बनकर अत्यधिक क्रोध में देवेन्द्र के रथ पर सवार होकर रावण पर आक्रमण किया। दिशाओं को खोजते हुए सीता देवी के साथ पुष्पक रथ पर अयोध्या लौटे। विष्णु ने रथ की सवारी की और आकाश को हिलाकर रख देने वाले नर्कासुर पर आक्रमण किया। शत्रुओं को परास्त करके रुक्मिणी देवी के साथ विवाह रथ की सवारी की। वेंकटगिरि पर वेंकटेश्वर अलमेलुमंग के साथ रथ पर विचरण कर रहे हैं।”

“ब्रह्मोत्सवम में स्वामी सबसे पहले बड़े शेष वाहन पर श्रीदेवी और भूदेवी के साथ आते हैं। अगले दिन सुबह छोटे शेष वाहन पर आते हैं। हज़ार फनों वाले आदिशेष का सिर वज्र के समान चमकता है। हजार फनों पर माणिक्य से सजा आदिशेष हरि के साथ उनका साया बनकर रहता है। आदिशेष अपनी हजार जीभों से हरि की स्तुति करने में बहुत निपुण हैं। देवता जब भी प्रार्थना करने जाते हैं, तो वे आदिशेष पर विश्राम कर रहे नारायण के पास ही जाते हैं। देवता पहले आदिशेष को प्रणाम करते हैं। आदिशेष ही वेंकटपति और अलमेलुमंग के लिए बिस्तर बने हैं।”

"धर्म से भटक चुके राक्षसों को नष्ट करने वाले चक्र! हरि चक्र! पाताल में छिपे हिरण्याक्ष को चीरने वाले चक्र! स्वामी के हाथ को न छोड़कर इस जगत की रक्षा करो, वेंकटाचल की सड़कों पर चमकते हुए घूमने वाले, हे चक्र! आपको हमारा प्रणाम।

"हरि-रथ के आगे मशालें दिखाई दे रही हैं। गरुड़ ध्वज की घंटियाँ, घूमते हुए स्वर्ण चक्र, सफ़ेद छतरियाँ, रथ पर बंधी तोरणें और रथ का सारथी, दिव्य घोड़ो से जुड़ा वह रथ मेरु पर्वत की तरह चमक रहा है। हरि-रथ के दोनों ओर ब्रह्मा आदि वेदों का पाठ कर रहे हैं, और श्रीरमण (स्वामी) चमक रहे हैं। अप्सराएँ नृत्य और कीर्तन कर रही हैं, श्रीवेंकटेश्वर अलमेलुमंग के साथ सड़कों पर कोटि-कोटि दासों की इच्छाएँ पूरी करने आ रहे हैं। उन श्रीवेंकटेश्वर को प्रणाम करो।

"ब्रह्मोत्सवम में आए शिव, ब्रह्मा आदि देवता और मुनि बहुत थक गए हैं। वेंकटेश्वर उन्हें विदा देते हुए कहते हैं, 'हे यम! जाओ! हे दिक्पालकों! अपने-अपने दिशा में जाओ। हे नारद, सनक, सनंदन आदि! जाओ और फिर आओ। आनंदोत्सव के साथ आप सभी ने सेवा की है और थक गए हो। अगले ब्रह्मोत्सवम में फिर से आना।'"

कल्याणोत्सवम्: प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से लगभग एक घंटे तक वेंकटेश्वर स्वामी का कल्याणोत्सव होता है। इस उत्सव को 'नित्य कल्याणम' कहा जाता है।

अन्नमाचार्य ने नित्य कल्याणोत्सवम् के दौरान पद्मावती और वेंकटेश्वर के विवाह की विधि का कई कीर्तनों में वर्णन किया है। उनमें से कुछ कीर्तनों का भाव इस प्रकार है:

"हे सौभाग्यवतियों! सभी दिशाओं से भगवान के विवाह के लिए आओ। वेंकटेश्वर स्वामी और श्रीमहालक्ष्मी का विवाह मुहूर्त आज है। देवताओं! भेरी बज रही है, गरुड़ ध्वज लहरा रहा है। भगवान के विवाह में सभी आओ। आज मनमथ के पिता और कमला देवी का विवाह हो

रहा है। मुनियों! आकर चंदन लो। वेद पाठ करने वाले सभी आओ, ये दंपति आपको वरदान देंगे।"

"अलमेलुमंग और वेंकटेश्वर विवाह के लिए बेताब हैं। दंपति को बसिकम बाँधिए। उनके हाथों में तांबूल अर्पित कीजिए। हे सौभाग्यवतियों! शुभ गीत गाइए। मुहूर्त पहले ही पूछ कर जान लीजिए। जल्दी से मंगलाष्टक पढ़िए। दूल्हा-दुल्हन के बीच पर्दा रखिए और चोरी से एक दूसरे को देखिए। अब पर्दा हटाइए। दोनों का गठबंधन कीजिए। दोनों को कंकण दारा बाँधकर विवाह मंडप में बैठाइए। श्रीवेंकटेश और अलमेलुमंग को आशीर्वाद दीजिए।"

"विवाह का उत्साह और आनंद अद्वितीय होता है, विशेषकर तालांब्रा की रस्म। शर्मीली दुल्हन तांबूल लेकर किनारे से मुस्कुराती है। प्रसिद्ध दुल्हन के गले में बड़े मोतियों की माला है। वह अपने होने वाले पति का नाम बताने में हिचकिचा रही है। मंगलसूत्र धारण करते समय दुल्हन उत्साहित है। सिर पर फूलों की माला पहने हुए, वह श्रीवेंकटपति के आलिंगन में स्वामी के हृदय तक पहुँच जाती है।"

"हे अप्सराओ! आज उल्लासपूर्वक नृत्य और गान करो। ये तांबूल ग्रहण करो। श्रीरमणा के विवाह के लिए उड़ती हुई गरुड़ ध्वज देखो! दिव्य दुदुंभी बज रहे हैं। देवताओ! ध्यान दो। लक्ष्मी विभु का विवाह हो रहा है। श्रीवैष्णवों! गंधाक्षत ग्रहण करो। श्रीसती और श्रीवेंकटनाथ ने एक दूसरे के ऊपर तालांब्रा (चावल और हल्दी पावडर) अर्पित किया। तीर्थ निवासी! भेंट लाओ।"

"वैभव की पूजनीय मूर्ति को शुभ मंगल। नरकासुर द्वारा बंधक बनाई गई सोलह हजार युवतियों से विवाह करने वाले श्रीकृष्ण को शुभ मंगल। शिशुपाल द्वारा विवाह की इच्छा रखने वाली रुक्मिणी से स्वयं विवाह करने वाले श्रीकृष्ण को शुभ मंगल। देवता और दानवों के समुद्र मंथन के समय श्रीमहालक्ष्मी से विवाह करने वाले श्रीवेंकटगिरि श्रीनिधि को जय मंगल, नित्य शुभ मंगल।"

"सही मुहूर्त में श्रीपति और श्रीदेवी ने फूलों की माला बदली। सौभाग्यवतियों ने विवाह गीत गाए तथा हरि और श्री का विवाह संपन्न हुआ। देव दुदुंभी बजने के साथ-साथ उन्होंने बसिकम (शादी के दिन वर-वधू के सिर पर धारण किये जानेवाला शृंगार) सिर पर धारण किया। मुनियों ने मंगलाष्टक पढ़े और दोनों ने तांबूल अर्पित किए। देव कन्याओं ने आरती की और श्रीवेंकटेश्वर अलमेलुमंग के साथ सभी को वरदान दे रहे हैं।"

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी: श्रीकृष्ण के जन्मदिन की रात को वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में रुक्मिणी और श्रीकृष्ण की उत्सव मूर्तियों को घंटा मंडप में लाकर पर्दे से घेरकर अभिषेक किया जाता है और वस्त्राभरणों से सजाया जाता है। इस दौरान दिव्य प्रबंध का पाठ किया जाता है। अलंकरण समाप्त होते ही भक्त रुक्मिणी और श्रीकृष्ण के दर्शन करते हैं। इस समय भागवत में वर्णित श्रीकृष्ण की अवतार लीलाओं का पाठ करते हुए नैवेद्य अर्पित किया जाता है। नैवेद्य समाप्त होते ही रुक्मिणी और श्रीकृष्ण को वेंकटेश्वर स्वामी के गर्भगृह में ले जाया जाता है।

सूर्योदय के बाद, रुक्मिणी और कृष्ण की मूर्तियों को वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के चारों ओर शोभायात्रा कराई जाती है और फिर मंदिर में नैवेद्य अर्पित किया जाता है। दोपहर में, एक पालकी में श्रीदेवी-भूदेवी के साथ मलयप्प स्वामी और दूसरी पालकी में रुक्मिणी और श्रीकृष्ण की शोभायात्रा होती है।

5

वेंकटाचल पर्वत (तिरुमला पर्वत)

स्कंद पुराण से

वेंकटाचल पर्वत पर कई तीर्थ स्थान हैं। वसिष्ठ, कपिल, भारद्वाज, गौतम आदि कई मुनियों के आश्रम यहाँ स्थित हैं। ब्रह्मा, शिव, गणेश, कार्तिकेय, इंद्र और कुबेर जैसे देवता अपने परिवार सहित वेंकटाचल में निवास करते हैं और वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा करते हैं। जिस प्रकार गायों में कामधेनु, नागों में शेष, पक्षियों में गरुड़, देवताओं में विष्णु, कुलों में ब्राह्मण कुल, वृक्षों में कल्पवृक्ष (इच्छाएँ पूरी करने वाला वृक्ष), तीर्थों में गंगा, रोशनी देने वालों में सूर्य, हथियारों में वज्र, धातुओं में सोना, वैष्णवों में रुद्र और रत्नों में कौस्तुभ श्रेष्ठ माने जाते हैं, उसी प्रकार पर्वतों में वेंकटाचल पर्वत श्रेष्ठ माने जाते हैं।

वेंकटाचल पर्वत सात योजन (91 किलोमीटर) लंबा और एक योजन (13 किलोमीटर) ऊँचा है। वेंकटाचल पर्वत को किसी भी दिशा से प्रणाम करने पर पाप नष्ट होते हैं और लोग वैकुंठ को जाते हैं। इस पर्वत पर 66 करोड़ तीर्थ स्थान हैं। वेंकटाचल का अर्थ है पापों को नष्ट करने वाला पर्वत। वेंकटाचल पर्वत वैकुंठ के समान, समस्त तीर्थों के समान और नारायण के समान है। पूर्व काल में, नारायण ने वराह रूप धारण कर इसी वेंकटाचल पर निवास किया था।

दशवर्षैस्तु यत्पुण्यं क्रियते तु कृतेयुगे।
त्रेतायामेकवर्षेण तत्पुण्यं साध्यते नृभिः॥
द्वापरे पंचमासेना तद्दिनेन कलौ युगे।
तातफलं कोटिगुणितं निमिषेनिमिषे नृणाम्॥

सत्य युग में दस वर्षों तक पुण्य कर्म करने का फल, त्रेता युग में एक वर्ष में ही प्राप्त होता है, द्वापर युग में पाँच महीनों में और कलियुग

में पाँच दिनों में ही प्राप्त होता है। कलियुग में वेंकटाचल स्थित वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने से व्यक्ति का पुण्य करोड़ों गुणा बढ़ जाता है। (स्कन्द पुराण, भाग २, वेंकटाचल माहात्म्य, अध्याय ८, श्लोक ३-४)

वेंकटाचल स्थित वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने से काशी, प्रयाग जैसे तीर्थ स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं होती। इंद्र, ब्रह्मा, शिव आदि देवताओं के दर्शन की भी आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे सभी अपने परिवार सहित वेंकटाचल में निवास करते हैं और वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा करते हैं।

वेंकटाचल पर्वत पर चढ़ते समय इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए: "हे स्वर्ण पर्वत! पर्वतों में श्रेष्ठ पर्वत! देवताओं द्वारा पूजित पर्वत! आपके शिखर पर स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के लिए मैं अपने पांव आप पर रख रहा हूँ, कृपया मुझे क्षमा करें।"

अंजनाद्रि की कथा

तुंगभद्रा नदी के तट पर केसरी और अंजना देवी नामक दंपति रहते थे। उन्हें संतान नहीं थी, इसलिए अंजना देवी पुत्र की प्राप्ति के लिए तपस्या कर रही थीं। एक दिन, मतंग मुनि ने अंजना देवी से तपस्या का कारण पूछा, तो अंजना देवी ने बताया: "मेरे पिता केसरी ने, जो एक राक्षस थे, संतान न होने के कारण शिव की तपस्या की। शिव ने दर्शन देकर कहा, 'पूर्वजन्म के पापों के कारण तुम्हें संतान नहीं हो रही है। लेकिन मेरे लिए की गई आपकी तपस्या के फलस्वरूप तुम्हें एक पुत्री प्राप्त होगी, और उस पुत्री से एक पुत्र होगा, जिसकी कीर्ति चौदह लोकों में फैलेगी।' शिव के वरदान से मेरा जन्म हुआ।

"वानर केसरी मेरे पिता केसरी के पास आए और मुझसे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। मेरे पिता ने सहमति दी और हमारा विवाह संपन्न हुआ। मेरे पिता ने विवाह के उपहार स्वरूप एक करोड़ गायें, एक लाख हाथी, करोड़ों रथ, घोड़े, कई आभूषण, रत्न और दासियाँ दीं। हे मुनिवर!

मैं अपने पति केसरी के साथ किष्किन्धा में आ गई। विवाह के कई वर्षों के बाद भी मुझे संतान नहीं हुई। संतान प्राप्ति के लिए मैंने कई व्रत, यज्ञ और दान किए, लेकिन कोई फल नहीं मिला, इसलिए अब मैं संतान की प्राप्ति के लिए तपस्या कर रही हूँ।"

मतंग मुनि ने अंजना देवी से कहा, "आप वेंकटाचल पर्वत पर जाओ, वहाँ स्वामि पुष्करिणि में और आकाशगंगा तीर्थ में स्नान कर उसका जल पियो, और वहाँ वायु देवता के लिए तपस्या करो, आपकी इच्छा पूरी होगी।" अंजना देवी ने मतंग मुनि के निर्देशों का पालन किया और आकाशगंगा तीर्थ पर तपस्या करने लगीं। वायु देवता ने दर्शन देकर कहा, "मेरे कारण तुम्हें एक पुत्र होगा। उस पुत्र की कीर्ति चौदह लोकों में फैलेगी।" वायु देवता के वरदान से अंजना देवी से हनुमान का जन्म हुआ। अंजना देवी ने वेंकटाचल पर्वत पर तपस्या की थी, इसलिए इस पर्वत को अंजनाद्रि कहा गया।

वराह पुराण से

दशरथ महाराज की कथा

दशरथ महाराज के संतान न होने के कारण उन्होंने वसिष्ठ मुनि से संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। वसिष्ठ मुनि ने उन्हें वेंकटाचल पर्वत पर नारायण की तपस्या करने का सुझाव दिया। महाराज दशरथ ने वसिष्ठ मुनि के निर्देशों का पालन करते हुए स्वामि पुष्करिणि में स्नान किया और नारायण की तपस्या की। नारायण ने दर्शन देकर वरदान माँगने के लिए कहा। महाराज ने नारायण की परिक्रमा और नमस्कार करके स्तुति की और पुत्र प्राप्ति का वरदान माँगा। नारायण ने कहा, "तुम्हारे पूर्वजन्म के पाप कर्मों के कारण तुम्हें संतान नहीं है।" तब महाराज दशरथ ने नारायण से कहा, "जिस स्थान पर सूर्य है, वहाँ अंधकार कैसे हो सकता है ? उसी प्रकार, आपके दर्शन के बाद भी मेरे पाप मेरे पास कैसे रह सकते हैं ?" नारायण महाराज के वचनों से प्रसन्न हुए और बोले, "तुमने

मेरे दर्शन करके चार श्लोकों से मेरी स्तुति की है। इसलिए मैं ही तुम्हारे चार पुत्रों के रूप में जन्म लूँगा और रावणासुर तथा अन्य राक्षसों का संहार करूँगा।"

श्रीराम

सीता देवी और लक्ष्मण के साथ वनवास करते समय रावणासुर सीता का अपहरण कर उन्हें लंका ले गया। श्रीराम, वानरों के साथ सीता को खोजते हुए वेंकटाचल पर्वत पर गए और विभिन्न तीर्थों में स्नान किया। तब अंजना देवी आई और श्रीराम की अतिथि सेवा की। वेंकटाचल पर्वत पर निवास करने वाले सभी ऋषियों ने श्रीराम की अतिथि सेवा की।

वृषभाचल

कृतयुग में वृषभासुर नामक असुर ने देवताओं को परास्त कर ब्राह्मणों और मुनियों को परेशान करना शुरू किया था। ब्राह्मणों, मुनियों और देवताओं ने नारायण से प्रार्थना की कि वे वृषभासुर से उनकी रक्षा करें। देवताओं की इच्छा के अनुसार नारायण ने वृषभासुर का संहार करने के लिए वेंकटाचल पर्वत (वैकुंठ पर्वत) पर वृषभासुर से युद्ध किया और सुदर्शन चक्र धारण किया। तब वृषभासुर ने नारायण से कहा, "हे नारायण! मैंने सुना है कि जिन राक्षसों का आपने संहार किया, उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई। मुझे भी मुक्ति प्रदान करें और इस पर्वत को वृषभाचल नाम दें।" नारायण ने उसकी इच्छा पूरी की और वृषभासुर का संहार कर उसे मुक्ति प्रदान की।

शेषाद्रि

एक बार नारायण ने आदिशेष से कहा, "यदि तुम पृथ्वी पर पर्वत बन जाओ, तो मैं तुम पर निवास करूँगा।" आदिशेष सहमत हुए और सुवर्णमुखारी नदी के तट पर पर्वत बन गए। उस पर्वत पर ही नारायण वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट हुए। इसलिए इस पर्वत को शेषाद्रि कहा गया।

भविष्योत्तरपुराण से

शेषाद्रि

द्वापर युग में एक बार नारायण ने आदिशेष को द्वारपाल नियुक्त किया और वे लक्ष्मी देवी के साथ विहार कर रहे थे। उसी समय वायु देवता नारायण के दर्शन के लिए आए। आदिशेष ने स्वर्ण छड़ी दिखाकर वायु देवता को अंदर जाने से रोक दिया। वायु देवता ने कहा, "मूर्ख! मुझे क्यों रोक रहे हो? मुझे नारायण से महत्त्वपूर्ण कार्य है, मुझे जल्दी से अंदर जाने दो!" आदिशेष ने कहा, "मैं केवल नारायण की आज्ञा का पालन करता हूँ, किसी और की नहीं। इसलिए मैं तुम्हें अंदर नहीं जाने दूँगा।"

वायु देवता ने आदिशेष से कहा, "बुद्धिहीन! द्वारपाल नियुक्त जय और विजय भी अहंकार के कारण मुनियों द्वारा श्रापित होकर रावण और कुम्भकर्ण जैसे राक्षस बने थे। क्या तुम यह बात भूल गए हो?" आदिशेष ने थोड़े गुस्से से कहा, "तुम बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो! क्या तुम्हें जीना नहीं है? सभी प्राणी अपने समीप खड़ी मृत्यु को नहीं पहचानते हैं। तुम भी उन सभी प्राणियों में से एक हो। मुझसे बल, ज्ञान और वैराग्य में कोई बराबरी नहीं कर सकता। मैं हमेशा नारायण के अंतःपुर में निवास करता हूँ, इसलिए मैं नारायण को सभी से प्रिय हूँ।" वायु देवता ने आदिशेष की बातें सुनकर कहा, "बिल्ली घर में घूमने से बाहर घूमने वाले हाथी के बराबर नहीं होती! रत्नाभूषण से सजे बिस्तर पर बैठा सेवक राजा के पैर दबाने से राजा का पुत्र नहीं बनता, उसी प्रकार, तुम नारायण के पास रहने से नारायण को मेरे समान प्रिय नहीं हो सकते।"

इस प्रकार वायु देवता और आदिशेष के बीच वाग्युद्ध हो रहा था, तब नारायण वहाँ आए। नारायण को देखते ही आदिशेष और वायु देवता ने उन्हें प्रणाम किया। इसके बाद, आदिशेष ने सारी घटना नारायण को बताई। नारायण ने कहा, "तुम दोनों अपनी शक्तियों की परीक्षा करो।" उन्होंने कहा, "आदिशेष! आनंदाद्रि (मेरु पुत्र) नामक पर्वत को पकड़ो।

अगर वायु देवता तुम्हें हिला पाएँगे तो वे बलवान होंगे, और यदि नहीं हिला पाए तो तुम बलवान होगे। " दोनों इस प्रस्ताव से सहमत हो गए। सभी देवता इसे देखने आए। आदिशेष ने आनंदाद्रि पर्वत को लपेट लिया। वायु देवता ने अत्यधिक बल से हवा चलाई, लेकिन न पर्वत को और न ही आदिशेष को हिला पाए। सभी जीवों को कठिनाई हो रही थी।

देवताओं ने वायु देवता से प्रार्थना की कि वे अपना क्रोध छोड़कर सभी जीवों की रक्षा करें, लेकिन वायु देवता ने नहीं सुना। तब देवताओं ने आदिशेष से प्रार्थना की कि वे अपना क्रोध छोड़कर जीवों की रक्षा करें। आदिशेष ने देवताओं की प्रार्थना सुनकर अपनी पकड़ छोड़ दी। हवा के वेग से आनंदाद्रि पर्वत आदिशेष के साथ सुवर्णमुखारी नदी के तट पर गिर पड़ा। वायु देवता ने अपनी गलती समझकर आदिशेष से क्षमा माँगी। यह आनंदाद्रि पर्वत आदिशेष के कारण आया और आनंदाद्रि पर्वत आदिशेष का ही अंश है इसलिए इसे शेषाद्रि कहा गया।

वेंकटाचल की कथा

कलियुग में तिरुपति के पास कालहस्ती नामक नगर में माधव नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक दिन, माधव अपनी पत्नी चंद्रलेखा के साथ दिन में मिलन करने की योजना बना रहा था। चंद्रलेखा ने उसे समझाया, "दिन के समय केवल पशु-पक्षी संगम करते हैं। मनुष्यों के लिए यह धर्मविरुद्ध और पाप है।" इस प्रकार, उसने माधव की इच्छा को रोका। बाद में, माधव फल और कंद के लिए जंगल में गया। वहाँ उसने एक वेश्या को देखा और उससे अपनी कामना पूरी करने का अनुरोध किया। वेश्या ने उसे समझाया, "आप ब्राह्मण हो। इस प्रकार के कार्यों से आप कुलभ्रष्ट हो जाओगे और पाप के भागी बनोगे।" लेकिन माधव ने अपनी कामना के वश में होकर उसे बलपूर्वक भोगा। वेश्या ने कहा, "आप ब्राह्मण कुल से पतित हो गए हो, इसलिए अब मेरे साथ रहो, शराब पियो और मांस खाओ।" माधव ने सहमति दी और वेश्या के साथ शराब पीते और मांस खाते हुए जीवन बिताने लगा।

बारह वर्षों के बाद, वेश्या की मृत्यु हो गई। माधव उसकी मृत्यु को सहन नहीं कर सका और पागल की तरह घूमने लगा। कुछ समय बाद, कुछ राजा वराह क्षेत्र (वेंकटाचल) की यात्रा पर जा रहे थे। माधव भी उनके साथ गया। जब वे 'वैकुंठाचल' पर पहुंचे, तो माधव के पाप नष्ट हो गए। इसलिए इस वैकुंठ पर्वत को 'वेंकटाचल' कहा गया। 'वेंकट' का अर्थ है पापों को नष्ट करने वाला।

भागवत से बलराम की कथा

कुरुक्षेत्र में पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध निश्चित हो गया था। कौरव और पांडव दोनों बलराम से सहायता माँगने आए। बलराम ने कहा, "तुम दोनों मेरे लिए समान हो, इसलिए मैं किसी की सहायता नहीं कर सकता।" श्रीकृष्ण के पांडवों की सहायता के लिए जाने की बात सुनकर बलराम ने द्वारका में न रहने का निर्णय लिया और तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने कौशिकी, सरयू, त्रिवेणी, गौतमी, गंडकी, विपाशा, शोना, गोदावरी, पंपा, भीमा, सुवर्णमुखारी और वेंकटाचल के तीर्थों का दर्शन किया, वहाँ स्नान किया और देवताओं के दर्शन कर ब्राह्मणों को गाय और सोने का दान दिया।

अन्नमाचार्य

अन्नमाचार्य ने तिरुमला पर्वत की महिमा का गुणगान करते हुए कई कीर्तनों की रचना की। उनमें से एक कीर्तन का भाव इस प्रकार है: "तिरुमला पर्वत दस हजार फनों वाले शेषनाग के समान है। यह ब्रह्मा आदि देवताओं को अद्भुत प्रतीत होता है। मुनियों और देवताओं के निवास के लिए यह उत्तम स्थान है। स्वर्ण शिखरों से युक्त वेंकटगिरि को नमन करें। तिरुमला क्षेत्र में जहाँ भी देखें, पवित्र तीर्थ हैं। वेंकटगिरि मुक्ति प्रदान करता है। वेंकटेश्वर के निवास से युक्त तिरुमला पर्वत वैकुंठ के समान है। वेंकटाद्रि की पगडंडियों के किनारे मुनियों के आश्रम हैं। जहाँ भी देखें, वहाँ पूजा होती है। इच्छाओं को पूर्ण करने वाले वृक्ष हैं। जहाँ भी देखें वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए जाने वाले भक्त, दिखाई देते हैं।"

वेंकटाचल पर्वत की स्तुति केवल अन्नमाचार्य ने ही नहीं की, बल्कि अनेक आचार्यों ने भी की है। आल्वारों द्वारा वेंकटाचल पर्वत की स्तुति का वर्णन आप आल्वारों की स्तुति नामक आठवें अध्याय में देख सकते हैं।

(श्रीनिवास मंगापुरम से तिरुमला पहुंचने के लिए 2400 सीढ़ियां हैं, जबकि अलिपिरी से 3550 सीढ़ियां हैं)

6

तिरुमला पर दर्शनीय स्थल

तिरुमला और तिरुपति में प्राय: सभी मंदिर भोग के समय छोड़कर सुबह 5 बजे से रात 8:30 बजे तक खुले रहते हैं।

स्वामि पुष्करिणि की महिमा

वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के पास, वराह स्वामी मंदिर के सामने स्थित इस कुंड को स्वामि पुष्करिणि कहते हैं। स्वामि पुष्करिणि की विस्तीर्णता डेढ़ एकड़ की है। वैकुंठ एकादशी के दिन सभी तीर्थ जल इस पुष्करिणि में आकर मिलते हैं, इसलिए इसे 'मुक्कोटी तीर्थ' कहते हैं। सभी पुष्करिणियों में यह सबसे प्रमुख है, इसलिए इसे 'स्वामि पुष्करिणि' भी कहा जाता है।

ब्रह्मांड पुराण से सरस्वती देवी

ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती देवी ने महान नदी बनने की इच्छा से सरस्वती नदी के रूप में अवतार लिया। एक बार, पुलस्त्य मुनि सरस्वती नदी के तट पर आकर तपस्या कर रहे थे। सरस्वती देवी ने उन्हें पूजा अर्पित नहीं की, क्योंकि वे उनके पुत्र समान थे। सरस्वती देवी द्वारा पूजा अर्पित नहीं किये जाने को अपमान मानते हुए पुलस्त्य मुनि ने सरस्वती देवी को श्राप दिया, "तुम्हारी जो इच्छा थी कि नदी के रूप में अवतरित होने पर तुम्हारा गौरव बढ़े, वह पूरी नहीं होगी, क्योंकि गंगा नदी जो विष्णु के चरणों से उत्पन्न हुई है, वह अधिक प्रसिद्ध होगी।"

इस श्राप के बाद सरस्वती देवी ने पुलस्त्य ऋषि को श्राप दिया कि "तुमने बिना कारण मुझे श्राप दिया, इसलिये अब तुम्हारे वंश में सभी लोग राक्षस होंगे।" लेकिन बाद में पुलस्त्य ऋषि ने अपनी गलती को समझते हुए सरस्वती देवी से क्षमा माँगी। तब सरस्वती देवी ने कहा,

"तुम्हारे वंश में एक विष्णु का भक्त, विभीषण नामक पुत्र उत्पन्न होगा, जो तुम्हारी कीर्ति को बढ़ाएगा।" सरस्वती देवी ने नदियों में सबसे प्रमुख नदी बनने की इच्छा से नारायण की तपस्या की। नारायण ने दर्शन देकर कहा, "पुलस्त्य मुनि के श्राप को मैं तिरस्कार नहीं करूँगा, परन्तु तुम्हारी इच्छा को भी अस्वीकार नहीं कर सकता। पुलस्त्य मुनि का श्राप नदियों पर लागू होता है, तीर्थों पर नहीं। इसलिए तुम वेंकटाचल में पुष्करिणि के रूप में अवतार लो। मैं कलियुग में उस पुष्करिणि के तट पर वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट होऊँगा। 33 करोड़ 50 लाख तीर्थ मेरे दर्शन के लिए आकर तुम्हारे में स्नान करेंगे और तुम्हारी स्तुति करेंगे। इस प्रकार तुम सभी तीर्थों में प्रमुख तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हो जाओगी।" सरस्वती देवी नारायण के निर्देशानुसार तीर्थ के रूप में अवतरित हुईं। उस तीर्थ को 'स्वामि पुष्करिणि' कहा गया।

कश्यप की कथा (स्कंद पुराण से)

पांडवों के वंशज परीक्षित महाराज धर्मपूर्वक राज्य का पालन कर रहे थे। एक दिन, शिकार के दौरान एक हिरण का पीछा करते हुए वह शमीक मुनि के आश्रम पहुंचे। परीक्षित महाराज ने शमीक मुनि को प्रणाम कर पूछा, "स्वामी! यहाँ से हिरण गुजरा है?" शमीक मुनि ध्यान में लीन थे और उत्तर नहीं दिया। परीक्षित महाराज, जो भूखे-प्यासे थे, उत्तर न मिलने से निराश हो गए और पास में मरे हुए साँप को उठा कर शमीक मुनि के गले में डालकर चले गए। जब शमीक मुनि के पुत्र शृंगी को यह पता चला, तो उसने परीक्षित महाराज को श्राप दिया, "सात दिनों में तक्षक नामक सर्प के काटने से आपकी मृत्यु होगी।"

यह जानकर धन्वंतरि के शिष्य कश्यप, परीक्षित महाराज को बचाने के लिए चल पड़े। तक्षक को यह ज्ञात हुआ और उसने कश्यप से कहा, "जो धन परीक्षित महाराज देंगे, वह मैं तुम्हें दूँगा," और उन्हें धन देकर वापस भेज दिया। इसके बाद, तक्षक ने परीक्षित महाराज को काटकर मार डाला। परीक्षित महाराज को न बचा पाने के कारण, उनके रिश्तेदारों,

ब्राह्मणों और मित्रों ने कश्यप को दोषी ठहराया। कश्यप इस दोष को सहन नहीं कर सका और शाकल्य मुनि के पास गया और सब कुछ बताया। शाकल्य मुनि ने कहा, "तुम्हारे पास महान कृष्ण भक्त और धर्मात्मा परीक्षित महाराज को बचाने की शक्ति थी, लेकिन तुमने उन्हें नहीं बचाया। एक वैद्य को रोगी की मृत्यु तक उपचार करना चाहिए और उसे बचाने का प्रयास करना चाहिए। यदि धन, क्रोध या ईर्ष्या से वह रोगी का उपचार नहीं करता, तो उसे ब्रह्महत्या के पाप के समान पाप लगता है। तुम्हारे पास परीक्षित महाराज को बचाने की शक्ति थी, लेकिन धन के लालच में तुमने उन्हें नहीं बचाया, इसलिए तुम्हें पाप लगा है।" कश्यप ने अपने पाप से मुक्ति का उपाय पूछा, तो शाकल्य मुनि ने कहा, "सुवर्णमुखारी नदी के तट पर वेंकटाचल पर्वत पर स्थित स्वामि पुष्करिणि में स्नान कर वराह स्वामी और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करो, तो तुम्हारा पाप नष्ट हो जाएगा।" कश्यप ने ऐसा ही किया और अपने पाप से मुक्त हो गया।

धर्मगुप्त की कथा

चंद्रवंश के राजा नंद ने अपने पुत्र धर्मगुप्त को राज्य सौंपकर तपस्या के लिए वन में प्रस्थान किया। एक दिन, धर्मगुप्त शिकार के लिए वन में गया। जब अंधेरा हो गया, तो वह एक पेड़ पर चढ़ गया। उसी पेड़ पर एक भालू था। अपनी जान बचाने के लिए वह पेड़ से उतरने वाला था, तभी पेड़ के नीचे एक सिंह आ गया। डरते हुए धर्मगुप्त से भालू ने कहा, "भय न करो, मैं तुम्हें नहीं खाऊँगा, बल्कि तुम्हारी रक्षा करूँगा।" उसने धर्मगुप्त को साहस देते हुए कहा, "तुम आधी रात तक मेरी जंघा पर सो जाओ, फिर मैं तुम्हारी जंघा पर सो जाऊँगा।" धर्मगुप्त ने इसे स्वीकार किया और सो गया। इस समय सिंह ने भालू से कहा, "यह राजा हम दोनों का शत्रु है, यदि तुम राजा को नीचे फेंको, तो मैं उसे खा कर चला जाऊँगा।" भालू ने सिंह से कहा, "मित्र का विश्वासघात करने से जो पाप लगता है वह दस हजार यज्ञों से भी नहीं मिटता। इसलिए मैं राजा को

धोखा नहीं दूँगा।" कुछ समय बाद, जब राजा की नींद टूटी, तो राजा की जंघा पर भालू सो गया। तब सिंह ने राजा से कहा, "यदि तुम भालू को नीचे फेंकोगे, तो मैं उसे खा कर तुम्हें छोड़ दूँगा।" राजा ने सिंह की बात मानकर भालू को नीचे गिराया, लेकिन भालू ने पेड़ की डाल पकड़ कर अपनी जान बचाई और राजा से कहा, "हे राजा! मैं भृगु वंश का ब्राह्मण 'ध्याननिष्ठ' हूँ। अपनी इच्छा से मैं अन्य जीवों का रूप धारण करता हूँ। तुमने मुझसे विश्वासघात किया है। इसलिए मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि तुम पागल हो जाओगे।"

फिर उसने शेर से कहा, "हे शेर पिछले जीवन में तुम यक्ष थे, एक बार तुम और तुम्हारी पत्नी जंगल में नग्न होकर घूमते हुए गौतम मुनि के आश्रम में गए। तब ऋषि गौतम ने कहा, 'तुम यक्ष हो और फिर भी जानवर की तरह नग्न होकर घूमते हो, इसलिए शेर बन जाओ!' ऐसा कहकर उन्होंने श्राप दिया। उनके श्राप से तुम शेर बन गये।

यह सुनते ही शेर को श्राप से मुक्ति मिल गई और वह पुनः यक्ष के रूप में बदल गया। यक्ष ने भालू से कहा, "तुमने सत्य कहा। जब गौतम मुनि ने मुझे श्राप दिया था, तो मैंने उनसे श्राप विमोचन का उपाय पूछा था। मुनि ने बताया था, 'जब कोई भालू तुम्हें तुम्हारे पूर्वजन्म की कथा सुनाएगा, तब तुम्हारा श्राप समाप्त होगा।' आज तुम्हारी कृपा से मेरा श्राप समाप्त हो गया है।" यह कहकर यक्ष ने भालू को प्रणाम किया और अपने लोक को लौट गया।

धर्मगुप्त पागल होकर अपने राज्य में घूम रहा था। उसकी इस अवस्था को देखकर मंत्रियों ने उसे वन में ले जाकर उसके पिता नंद के पास पहुँचा दिया। उन्होंने नंद से कहा, "आपके पुत्र धर्मगुप्त पागल हो गए हैं।" नंद अपने पुत्र को लेकर जैमिनी मुनि के पास गए और उनसे धर्मगुप्त के पागलपन का कारण पूछा। जैमिनी मुनि ने पूरे घटनाक्रम को समझाते हुए बताया कि धर्मगुप्त ने भालू के साथ विश्वासघात किया था, जिसके कारण उसे श्राप मिला है। नंद ने मुनि से पूछा, "हे मुनिवर,

कृपया यह बताएँ कि मेरे पुत्र के पाप और श्राप से मुक्ति का उपाय क्या है?" जैमिनी मुनि ने उत्तर दिया, "विष्णु के निवास वेंकटाचल पर्वत पर स्थित स्वामि पुष्करिणि तीर्थ में स्नान करने से तुम्हारे पुत्र का पाप और श्राप दोनों समाप्त हो जाएँगे।" नंद ने मुनि की आज्ञानुसार अपने पुत्र धर्मगुप्त को स्वामि पुष्करिणि में स्नान कराया। स्नान करने के बाद धर्मगुप्त को अपने पाप और श्राप से मुक्ति मिल गई।

सुमति

महाराष्ट्र देश में सुमति नामक एक ब्राह्मण, कुसंगति के प्रभाव से वेश्याओं के साथ रहकर, मद्यपान और चोरी जैसे दुष्कर्मों में लिप्त था। एक दिन सुमति धन के लोभ में चोरी करने गया और एक ब्राह्मण की हत्या कर दी। इस अपराध के कारण सुमति पर ब्राह्मणहत्या का महापाप लग गया। सुमति ने अपनी इस दीन स्थिति के बारे में अपने पिता यज्ञदेव को बताया। यज्ञदेव अपने पुत्र को लेकर दुर्वासा मुनि के पास पहुँचे और सुमति को उसके पापों से मुक्त करने के लिए प्रार्थना की। दुर्वासा मुनि ने कहा, "सुमति को वेंकटाचल पर्वत पर स्थित स्वामि पुष्करिणि तीर्थ में स्नान कराएँ।"यज्ञदेव ने मुनि की आज्ञा का पालन किया और अपने पुत्र को स्वामि पुष्करिणि में स्नान कराया। स्नान के पश्चात सुमति ब्राह्मणहत्या के पाप से मुक्त हो गया।

वराह स्वामी मंदिर

(भविष्योत्तरपुराण से)

वराह स्वामी द्वारा हिरण्याक्ष का वध किये जाने के पश्चात, मुनियों ने उनसे प्रार्थना की, "हे स्वामी! आप पृथ्वी पर निवास करते हुए हमें रक्षित करें और दूसरों को दर्शन प्रदान करें।" वराह स्वामी ने कहा, "मैं आपकी इच्छा पूर्ण करूँगा," और वे वेंकटाचल पर निवास करने लगे।

भृगु महर्षि द्वारा नारायण की परीक्षा के पश्चात, लक्ष्मी देवी वैकुंठ को छोड़कर चली गईं। लक्ष्मी देवी के बिना वैकुंठ में निवास असंभव

जानकर नारायण वेंकटाचल पर आए और वराह स्वामी के दर्शन किए। वराह स्वामी ने पूछा, "वेंकटाचल पर आने का कारण क्या है ?" नारायण ने पूरी घटना का वर्णन किया और उनसे वेंकटाचल पर कलियुग के अंत तक निवास करने की अनुमति माँगी।

वराह स्वामी ने कहा, "यदि उपयुक्त मूल्य (धन) देंगे, तो मैं आपको स्थान दूँगा।" इस पर नारायण ने उत्तर दिया, "इस समय मेरे पास लक्ष्मी देवी (धन) नहीं हैं, इसलिए मैं धन स्वरूप कुछ नहीं दे सकता। परंतु आने वाले कलियुग में मेरे दर्शन हेतु आने वाले भक्त सबसे पहले आपके दर्शन करेंगे। मेरे पूर्व आपकी पूजा, अभिषेक, नैवेद्य और आरती संपन्न होगी। यही मेरा आपको दिया जाने वाला धन होगा।"वराह स्वामी इस प्रस्ताव से सहमत हो गए और नारायण को 100 गज भूमि प्रदान की। (इसलिए आज भी भक्त सबसे पहले वराह स्वामी के दर्शन करते हैं। वराह स्वामी को वेंकटेश्वर स्वामी से पहले नैवेद्य, पूजा और आरती समर्पित की जाती है।)

स्कंदपुराण से

वेंकटाचल पर्वत पर निवास करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी के एक भक्त वसु, एक दिन नारायणपुर के शासक तोंडमान के पास गए और उनसे कहा: "हे राजन! एक दिन, जब एक सफ़ेद वराह (सूअर) धान की फसल नष्ट कर रहा था, तब मैंने उसे मारने का प्रयास किया। वह वराह पुष्करिणि के पास स्थित एक वल्मीक (गुहा) में घुस गया। जब मैं उस वल्मीक को खोदने लगा, तो चेतना खो बैठा और अचेत होकर गिर पड़ा। मेरे पुत्र ने मेरी दशा देखकर वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की। उसी समय, वह वराह मुझमें प्रवेश कर गया और मेरे पुत्र से कहा: 'निषादराज! तुम तोंडमान के पास जाओ और यह संदेश दो। हे राजन! यदि तुम उस वल्मीक का काली गाय के दूध से अभिषेक करोगे, तो वहाँ से एक सुंदर शिला (पत्थर) प्रकट होगी। उस शिला से मेरा विग्रह (मूर्ति) तैयार कराओ। मेरी मूर्ति में वराह का मुख हो, मैं खड़ा रहूँ, और

मेरी बाईं जंघा पर भूमि देवी विराजमान हों।'जब मैं होश में आया, तो मेरे पुत्र ने मुझे वह सारी बातें बताईं जो वराह स्वामी ने कही थीं।"

तोंडमान ने वसु से कहा, "मैं तुम्हारे बताए अनुसार सब कुछ करूँगा।" फिर उन्होंने अपने मंत्री को आदेश दिया, "हमारी काली गायों को वेंकटाचल पर्वत पर ले जाओ।"तोंडमान ने यह सारी घटना अपने अंत:पुर की रानियों को बताई और सो गए। उसी रात, तोंडमान ने स्वप्न में देखा कि उनके अंत:पुर से स्वामि पुष्करिणि तक एक सुरंग मार्ग है। सुबह उठकर उन्होंने देखा, वास्तव में वह सुरंग वहाँ थी। तोंडमान उस सुरंग मार्ग से स्वामि पुष्करिणि पहुंचे और वराह स्वामी के निर्देशानुसार, काली गायों के दूध से वल्मीक का अभिषेक किया। अभिषेक के पश्चात एक सुंदर काली शिला प्रकट हुई। उस शिला से भूमि देवी सहित वराह स्वामी की मूर्ति बनवाई गई और मंदिर का निर्माण कर मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई।

1900 के दशक में वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के महंत प्रयागदास ने जीर्ण-शीर्ण हो चुके वराह स्वामी मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। वर्तमान में इस वराह स्वामी मंदिर में मूल मूर्ति भूमि देवी सहित वराह स्वामी के अर्चा विग्रह, वेंकटेश्वर स्वामी के अर्चा विग्रह और शालिग्राम स्थापित हैं।

वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर की कथा

(भविष्योत्तरपुराण से)

वेंकटेश्वर स्वामी ने पद्मावती देवी से विवाह कर कुछ समय तक अगस्त्य मुनि के आश्रम में निवास किया। एक दिन, तोंडमान वेंकटेश्वर स्वामी के पास आए और प्रणाम किया। वेंकटेश्वर स्वामी ने उन्हें आलिंगन कर उनके आगमन का कारण पूछा। तोंडमान ने कहा, "स्वामी! आपके दर्शन से बढ़कर मेरे लिए कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। हे वेंकटेश्वर स्वामी! आप योगियों के अधिपति हैं। आप ही सृष्टि के कर्ता हैं। ब्रह्मा को नियुक्त करने वाले और लक्ष्मी देवी के साथ विहार करने वाले आप ही हैं।"

उन्होंने स्वामी की विविध प्रकार से स्तुति की और प्रार्थना की, "आपकी सेवा कर मैं अपने जीवन को सार्थक करना चाहता हूँ।" वेंकटेश्वर स्वामी ने कहा, "हे राजन! मैं वेंकटाचल पर निवास करने के लिए एक अद्भुत मंदिर की इच्छा करता हूँ। इस मंदिर में तीन प्राकार (परिक्रमा मार्ग), दो गोपुरम (द्वार मीनार), सात द्वार, पुष्प मालाओं को गूंथने का कक्ष, रसोईघर, यज्ञशाला, वस्त्रों का कक्ष, तेल रखने का कक्ष, भोजन कक्ष और आभूषण कक्ष हों। भव्यता से इसका निर्माण करो।"

मंदिर के निर्माण के दौरान वेंकटेश्वर स्वामी ने तोंडमाण से कहा, "मंदिर निर्माण की जगह पर स्थित इमली का वृक्ष मेरे निवास का स्थान है। चंपा का वृक्ष लक्ष्मी देवी का निवास स्थान है। इसलिए इन वृक्षों को मत हटाओ। मुनियों के साथ तुम भी इन वृक्षों की पूजा करो।" तोंडमान ने वेंकटेश्वर स्वामी के निर्देशानुसार मंदिर का निर्माण कराया।

उन्होंने (श्रीनिवास मंगापुरम से) मंदिर की सीढ़ियों का भी निर्माण कराया और स्वामी को समर्पित किया। वेंकटेश्वर स्वामी ने शुभ मुहूर्त में देवताओं समेत उस मंदिर में प्रवेश किया और पद्मावती को अपने वक्षस्थल पर स्थान दिया, अपने बाएँ हाथ को कमर पर रखा और अपने दाएँ हाथ से अपने चरणों का आश्रय स्वीकार करने का संकेत दिया और अर्चा मूर्ति बन गए।

गोल्ला मंडप

एक बार रामानुजाचार्य एक वर्ष तक कपिल तीर्थ में स्थित नम्मालवार मंदिर में रहे। उस समय, उन्होंने तिरुमल नंबि से 18 बार रामायण का श्रवण किया। उसी दौरान, तोंडुरुकोंडी नामक एक भक्त महिला प्रतिदिन रामानुजाचार्य को गाय का दूध लाकर देती थीं। जब रामानुजाचार्य श्रीरंगम लौटने लगे, तो उन्होंने तोंडुरुकोंडी की सेवा के बदले कुछ धन देने का प्रयास किया। तोंडुरुकोंडी ने कहा, "स्वामी! मुझे धन की आवश्यकता नहीं है। कृपया मुझे मुक्ति प्रदान करें।" रामानुजाचार्य ने उत्तर दिया,

"मुक्ति प्रदान करने की शक्ति केवल वेंकटेश्वर स्वामी के पास है। अतः तुम स्वामी से प्रार्थना करो।"

तोंडुरुकोंडी ने कहा, "स्वामी, मुझे यह नहीं पता कि वेंकटेश्वर स्वामी मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे या नहीं। अतः कृपया मेरे लिए स्वामी को एक पत्र लिख दें।" रामानुजाचार्य ने उनकी भक्ति से प्रभावित होकर वेंकटेश्वर स्वामी को एक पत्र लिखाः "हे वेंकटेश्वर स्वामी! इस भक्त ने प्रतिदिन मेरे लिए दूध लाकर मेरी सेवा की है। इसके बदले में वह मुक्ति की याचना करती है। कृपया उसे मुक्ति प्रदान करें।"

उन्होंने यह पत्र तोंडुरुकोंडी को दिया। तोंडुरुकोंडी वह पत्र लेकर तिरुमला गईं। वहाँ स्वामि पुष्करिणि में स्नान कर वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। फिर रामानुजाचार्य लिखित पत्र स्वामी के चरणों में रखकर मंदिर से बाहर आईं। इसके बाद, उन्होंने लकड़ियों से बनाई गई चिता में अग्नि प्रवेश कर अपने शरीर का त्याग कर दिया। तोंडुरुकोंडी की भक्ति और समर्पण से प्रसन्न होकर वेंकटेश्वर स्वामी उन्हें पुष्पक विमान से वैकुंठ ले गए। जिस स्थान पर तोंडुरुकोंडी ने देह त्याग किया था , वहाँ एक मंडप का निर्माण हुआ, जिसे "गोल्ल मंडपम" कहा जाता है। यह मंडप प्रथम गोपुरम् के सामने स्थित है।

तिरुमल नंबि मंदिर (आवास)

श्रीवैष्णवाचार्य परम्परा के एक प्रमुख संत, यामुनाचार्य, ने वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए अपने शिष्य तिरुमल नंबि को तिरुमला भेजा। तिरुमल नंबि, अपने गुरु के निर्देशानुसार, तिरुमला गए और जीवनपर्यंत वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा की। अपने अंतिम क्षणों में, उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "हे स्वामी! मैंने अपने गुरु यामुनाचार्य के आदेशानुसार आपकी सेवा की। अब मैं इस शरीर को त्यागने जा रहा हूँ। यदि मैंने सेवा में कोई त्रुटि की हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें।" तिरुमल नंबि ने उपस्थित भक्तों से भी कहा, "यदि मैंने आप लोगों के साथ किसी

प्रकार का अन्याय या अपराध किया हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें।" यह कहकर उन्होंने शरीर का त्याग कर दिया। भक्तों ने उनकी स्मृति को अमर रखने के लिए, वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के दाहिनी ओर स्थित उनके निवास स्थान में उनकी मूर्ति की स्थापना की। इसे "तिरुमल नंबि मंदिर" कहा जाता है।

अनंताचार्य वृंदावन (समाधि)

एक बार रामानुजाचार्य ने अपने शिष्यों से कहा, "वेंकटेश्वर स्वामी को पुष्पों से बहुत प्रेम है। यह बात नम्मालवार ने एक कीर्तन में लिखी है। क्या आप में से कोई तिरुमला जाकर स्वामी की सेवा में पुष्प अर्पित करेगा ?"

अनंताचार्य ने उत्तर दिया, "गुरुदेव, मैं तिरुमला जाकर स्वामी की पुष्प सेवा करूँगा।" रामानुजाचार्य ने प्रसन्न होकर उन्हें अनुमति दी। अनंताचार्य तिरुमला आए और वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के पीछे एक कुटिया बनाकर निवास करने लगे। उन्होंने एक कुआँ खोदा और वहाँ तुलसी तथा फूलों की एक सुंदर बगिया लगाई। जीवनभर उन्होंने स्वामी की पुष्प और तुलसी दल अर्पित करते हुए सेवा की। उनकी समाधि भी इसी स्थान पर स्थित है, जिसे "अनंताचार्य वृंदावन" के नाम से जाना जाता है।

तरिगोंड वेंगमांबा वृंदावन (समाधि)

तरिगोंड के कृष्णय्या ने पाँच पुत्रों की प्राप्ति के बाद तिरुमला जाकर वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "हे स्वामी, मुझे एक कन्या का आशीर्वाद दें।" स्वामी की कृपा से कृष्णय्या को एक पुत्री प्राप्त हुई।। इस कन्या का नाम "वेंकम्मा" रखा गया, जो आगे चलकर "वेंगमांबा" के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

वेंगमांबा का विवाह हुआ, किंतु उनके पति का अल्प समय में निधन हो गया। वे तिरुमला चली गईं और वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा में उन्होंने

अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने स्वामी के लिए पुष्पों और तुलसी की मालाएँ बनाने का संकल्प लिया और इसके लिए एक बगिया लगाने हेतु एक कुएँ की खुदाई शुरू कर दी। कुएँ की खुदाई के दौरान एक बड़ी शिला बाधा बन गई। वेंगमांबा ने उस शिला की पूजा की और गंगा देवी से प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना से शिला दो भागों में विभाजित हो गई और वहाँ से पानी बहने लगा। इस पानी से उन्होंने बगीचे की सिंचाई की और प्रतिदिन स्वामी के लिए पुष्प तथा तुलसी की माला तैयार कर अर्पित की। आज भी, तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् के सेवा भवन के सामने, वेंगमांबा द्वारा खुदवाए गए कुएँ को देखा जा सकता है।

जीवन के अंतिम चरण में, वेंगमांबा ने वराह स्वामी मंदिर के पास स्थित तुलसी बगिया में एक समाधि का निर्माण कराया और उसी में प्रवेश कर शरीर त्याग दिया। उनकी समाधि आज भी वहाँ स्थित है और भक्त श्रद्धा से वहाँ दर्शन करने जाते हैं।

हाथीराम बाबाजी वृंदावन (समाधि)

हाथीराम बाबाजी, अपने गुरु की अनुमति लेकर तीर्थयात्रा करते हुए तिरुमला पहुंचे। उनकी आध्यात्मिक ख्याति के कारण हजारों लोग उनके दर्शन के लिए आने लगे। भक्तों की इस भीड़ से अपनी साधना में बाधा होने की आशंका के कारण, हाथीराम बाबाजी ने पापनाशन तीर्थ जाने वाले मार्ग पर गोगर्भ तीर्थ और आकाशगंगा के बीच वेनुगोपाल स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया और वहीं रहने लगे। वेनुगोपाल स्वामी की सेवा करते हुए, दीपावली के एक दिन पहले, उन्होंने जीवित समाधि ले ली। उनकी समाधि के पास एक विशेष "राय" का वृक्ष है, जिसके पत्ते ही वे भोजन के रूप में ग्रहण करते थे। आज भी वह वृक्ष वहीं स्थित है।

आकाशगंगा तीर्थ माहात्म्य

तिरुमल नंबि प्रतिदिन पापनाशन तीर्थ से जल लेकर वेंकटेश्वर स्वामी का अभिषेक करते थे। एक दिन, वेंकटेश्वर स्वामी बालक के रूप में

उनके सामने प्रकट हुए और कहा, "दादा दादा" मुझे प्यास लगी है, कृपया मुझे पानी दें।" तिरुमल नंबि ने उत्तर दिया, "यह जल पापनाशन से वेंकटेश्वर स्वामी के अभिषेक के लिए लाया गया है। इसे देने से यह अपवित्र हो जाएगा। मैं पुनः जाकर जल ला सकता हूँ, किंतु उसमें विलंब होगा। इसलिए, आप पापनाशन जाकर जल ग्रहण करें।" बालक रूप में स्वामी ने तिरुमल नंबि के पीछे जाकर उनके जल के घड़े में बाण से छिद्र कर लिया और पानी पी लिया। इस घटना से दुःखी तिरुमल नंबि के सामने बालक ने पहाड़ पर बाण चलाकर एक जलधारा प्रकट की और कहा, "दादा! अब तुम्हें पापनाशन से जल लाने की आवश्यकता नहीं है। इस जलधारा का उपयोग वेंकटेश्वर स्वामी के अभिषेक के लिए करो।" यह कहते हुए बालक रूप में स्वामी अदृश्य हो गए।

तिरुमल नंबि समझ गये कि बालक रूप में स्वयं वेंकटेश्वर स्वामी पधारे थे। उस दिन से, उन्होंने उसी जल का उपयोग अभिषेक के लिए किया। इस जलधारा को "आकाशगंगा" कहा जाने लगा। आज भी, तिरुमल नंबि के वंशज आकाशगंगा से चांदी के कलश में जल भरकर, उसे हाथी पर रखकर वेंकटेश्वर स्वामी के अभिषेक के लिए लाते हैं। जिस दिन आकाशगंगा का प्राकट्य हुआ था, उस दिन वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सव मूर्ति को आकाशगंगा ले जाया जाता है और वहाँ उत्सव आयोजित किया जाता है।

जाबाली तीर्थ माहात्म्य

कावेरी नदी के किनारे एक दुराचारि नामक ब्राह्मण शराब पीने, चोरी करने और वेश्याओं के साथ जीवन व्यतीत करता था। एक दिन उसे एक राक्षस ने घेर लिया और उसे अपनी शरण में लिया। वह राक्षस विभिन्न देशों में भ्रमण करता हुआ वेंकटाचल पर्वत पर स्थित जाबाली तीर्थ में स्नान करने आया। जैसे ही उसने वहाँ स्नान किया, उसकी राक्षसी प्रवृतियाँ समाप्त हो गईं और वह वैकुंठ की ओर प्रस्थान कर गया। दुराचारि ने जाबाली मुनि से पूछा, "मैं कावेरी नदी के तट पर रहने

वाला एक पापी ब्राह्मण हूँ। मैं यहाँ कैसे आया ?" जाबाली मुनि ने उत्तर दिया, "तुम्हारा एक राक्षस ने आह्वान किया था और विभिन्न देशों से होते हुए वह तुम्हें इस वेंकटाचल पर्वत पर लाया। उसी राक्षस ने इस तीर्थ में स्नान किया, जिसके कारण वह राक्षसत्व से मुक्त होकर वैकुंठ चला गया। तुम भी इस तीर्थ में स्नान करके अपने सारे पापों से मुक्त हो गए हो।" दुराचारि ने जीवनभर वहीं रहकर जाबाली तीर्थ में स्नान करते हुए वेंकटेश्वर स्वामी की भक्ति की और अंत में वैकुंठ को प्राप्त हुआ।

स्कंदपुराण से विभिन्न तीर्थों का माहात्म्य

पापनाशन तीर्थ माहात्म्य

भद्रमति

भद्रमति नामक ब्राह्मण की छह पत्नियां और दो सौ संतानें थीं, लेकिन वे निर्धन होने के कारण सभी उपवासी थे। एक दिन उनकी छोटी पत्नी ने कहा, "स्वामी! सुवर्णमुखारी नदी के किनारे वेंकटाचल पर्वत पर एक तीर्थ है, जिसका नाम पापनाशन है। वहाँ स्नान करने से पूर्वजन्म के पाप समाप्त हो जाते हैं, जैसा कि नारद मुनि ने मेरे पिता से कहा था। हम सबको पापनाशन तीर्थ में स्नान करना चाहिए।" भद्रमति अपनी पत्नी के कहे अनुसार, अपने पूरी परिवार के साथ पापनाशन तीर्थ में स्नान करने गए और उनके जीवन की दरिद्रता समाप्त हो गई।

सुमति

दृढ़मति नामक एक शूद्र ने ब्राह्मणों के पास जाकर उनसे वेदों का ज्ञान माँगा। ब्राह्मणों ने कहा, "वेद कहते हैं कि शूद्र को वेद का ज्ञान नहीं देना चाहिए। इसलिए, तुम यहीं रहो और इन ब्राह्मणों की सेवा करो। इससे तुम्हारा शुभ होगा।" दृढ़मति ने ब्राह्मणों के उपदेशों को नहीं माना और जंगल में आश्रम बनाकर ब्राह्मण के समान नित्य कर्म, जप, हवन और तपस्या करने लगा।

एक बार सुमति नामक ब्राह्मण तीर्थयात्रा करते हुए दृढ़मति के आश्रम में आए। दृढ़मति ने उनका आतिथ्य किया और उनसे वेद का ज्ञान देने की प्रार्थना की। सुमति ने उसे वेद का ज्ञान दिया। शूद्र को वेद का ज्ञान देने के कारण, सुमति की मृत्यु के बाद उन्हें नर्क का अनुभव करना पड़ा, और उसके पश्चात् विभिन्न जानवरों के रूप में जन्म लेने के बाद शूद्र, वैश्य और क्षत्रिय के रूप में जन्म लिया, अंततः उनको ब्राह्मण कुल में जन्म लेने का अवसर मिला।

जब सुमति ने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया, तब उसे ब्रह्मराक्षस ने आक्रांत किया। सुमति ने अपनी समस्या अपने पिता को बताई। सुमति के पिता उसे अगस्त्य मुनि के पास ले गए और पूछा, "मेरे पुत्र ने कोई पाप नहीं किया, फिर भी उसे ब्रह्मराक्षस ने क्यों आक्रांत किया है?" अगस्त्य मुनि, जो सुमति के पूर्वजन्म के बारे में जानते थे, उन्होंने बताया, "शूद्र को वेद का ज्ञान देने के कारण उसे कई जन्मों का सामना करना पड़ा। इस ब्रह्मराक्षस को यम ने भेजा है। अगर तुम्हारा पुत्र वेंकटाचल पर पापनाशन तीर्थ में स्नान करेगा, तो वह शूद्र को वेद का ज्ञान देने के पाप और ब्रह्मराक्षस से मुक्त हो जाएगा।" सुमति के पिता ने ऐसा ही किया और उनके पुत्र को उसके पाप और ब्रह्मराक्षस के आक्रांत से मुक्त कराया।

हाथीराम बाबाजी की समाधि, जाबाली तीर्थ, आकाशगंगा तीर्थ और पापनाशन तीर्थ तिरुमला से सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं।

चक्र तीर्थ माहात्म्य

पद्मनाभ नामक एक ब्राह्मण वेंकटाचल पर्वत पर भगवान विष्णु की उपासना करते हुए तपस्या कर रहा था। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उसे दर्शन दिए। पद्मनाभ ने भगवान से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। इस पर भगवान विष्णु ने कहा, "तुम यहीं इस तीर्थ में स्नान करते हुए मेरी भक्ति साधना करते रहो। इससे तुम्हें जीवन के अंत में मुक्ति की प्राप्ति होगी।" ऐसा कहकर भगवान विष्णु अंतर्धान हो गए।

पद्मनाभ विष्णु की आज्ञा का पालन करते हुए वहीं तपस्या करने लगा। एक दिन, एक राक्षस पद्मनाभ को मारने के लिए आया। संकट में पड़ा पद्मनाभ भगवान विष्णु से रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगा। अपने भक्त की रक्षा के लिए भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र भेजा। सुदर्शन चक्र ने उस राक्षस का संहार करके पद्मनाभ की रक्षा की।

पद्मनाभ ने सुदर्शन चक्र की स्तुति की। सुदर्शन चक्र ने प्रसन्न होकर कहा, "मैं आज से इस तीर्थ में ही निवास करूँगा और तुम्हें तथा अन्य भक्तों को राक्षसों के प्रकोप से बचाऊँगा मेरे यहाँ निवास करने के कारण इस तीर्थ का नाम 'चक्र तीर्थ' होगा। जो भी यहाँ स्नान करेगा, वह पापमुक्त हो जाएगा।" ऐसा कहकर सुदर्शन चक्र सरोवर में प्रविष्ट हो गया।

पद्मनाभ को मारने आए राक्षस की कथा: पूर्वकाल में कुछ ऋषि श्रीरंगम में निवास करते हुए श्रीरंगनाथ जी की सेवा में लगे हुए थे। एक दिन, वसिष्ठ मुनि के साथ वे सभी मुनि दोपहर के समय कावेरी नदी में स्नान करने गए। उसी समय सुंदर नामक एक गंधर्व अपनी पत्नियों के साथ कावेरी नदी में नग्न स्नान कर रहा था। मुनियों को देखते ही उसकी पत्नियों ने तुरंत वस्त्र धारण कर लिए, परंतु सुंदर ने वस्त्र नहीं पहने।

यह देख वसिष्ठ मुनि ने सुंदर से कहा, "हमारे सामने वस्त्र न पहनने के कारण तुम राक्षस बनोगे।" सुंदर की पत्नियों ने अपने पति की, उस श्राप से मुक्ति कैसे होगी उसका उपाय पूछा। इस पर वसिष्ठ मुनि ने कहा, "जब यह राक्षस वेंकटाचल पर्वत पर तपस्या कर रहे पद्मनाभ का भक्षण करने जाएगा, तब पद्मनाभ भगवान नारायण से रक्षा की प्रार्थना करेगें। भगवान नारायण के भेजे गए सुदर्शन चक्र के द्वारा यह राक्षस मारा जाएगा और इसे श्राप से मुक्ति मिलेगी।"

इस प्रकार, गन्धर्व सुंदर अपनी श्राप-कथा कहकर पद्मनाभ और सुदर्शन चक्र को प्रणाम करके अपने लोक को चला गया।

श्रीवारी पादालू (वेंकटेश्वर स्वामी के पाद चिह्न)

भृगु महर्षि द्वारा नारायण की परीक्षा लेने के बाद, लक्ष्मी देवी वैकुंठ को छोड़कर चली गई थीं। लक्ष्मी देवी के बिना वैकुंठ में नारायण नहीं रह सके, इसलिए वे वेंकटाचल आ गए। जिस स्थान पर नारायण वेंकटाचल में उतरे, वहाँ उनके पादचिह्न रह गए। इन पादचिह्नों को 'श्रीवारी पादालू' कहा जाता है। जब ब्रह्मा आदि देवता वेंकटाचल तीर्थ में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए आते हैं, तो पहले वे श्रीवारी पादालू पर पहुँचते हैं और इन पादचिह्नों को प्रणाम करते हैं। चक्र तीर्थ और श्रीवारी पादम तिरुमला से छह किलोमीटर की दूरी पर हैं।

हाथीराम बाबाजी की समाधि, जाबाली तीर्थ, आकाशगंगा तीर्थ, पापनाशन तीर्थ, चक्र तीर्थ और श्रीवारी पादम के लिए तिरुमला देवस्थानम ने बस सेवा की व्यवस्था की है।

रामकृष्ण तीर्थ की महिमा

रामकृष्ण नाम के मुनि वेंकटाचल पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। स्नान के लिए उन्होंने एक सरोवर का निर्माण किया। जब वह विष्णु की तपस्या कर रहे थे, तब उनके शरीर पर वल्मीक का आवरण हो गया। उनकी तपस्या से डरकर इंद्र ने बारिश कराई, लेकिन उनकी तपस्या को भंग नहीं कर सका और चला गया। बाद में, विष्णु ने दर्शन देकर कहा, "तुम्हारे द्वारा खोदा गया यह सरोवर तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा। इसमें स्नान करने वालों के पाप नष्ट हो जाएँगे। जब तुम अपना शरीर त्याग दोगे, तो तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।"

पापनाशन से रामकृष्ण तीर्थ पांच किलोमीटर पैदल यात्रा करके पहुंचा जा सकता है। यह स्थान जंगल में स्थित होने के कारण यहाँ केवल जनवरी-फरवरी में आनेवाली माघ मास की पूर्णिमा के दिन ही जाने की अनुमति होती है।

कुमारधारा तीर्थ की महिमा

वृद्ध ब्राह्मण

एक बार, वेंकटेश्वर स्वामी बालक के रूप में वेंकटाचल पर्वत पर घूम रहे थे। उस समय, सौ साल का एक वृद्ध ब्राह्मण अपने खोए हुए पुत्र को पुकार रहा था, "कौंडिन्य! तुम कहाँ हो?" बालक रूप में वेंकटेश्वर स्वामी ने उस वृद्ध ब्राह्मण से पूछा, "यहाँ कोई नहीं है। आप किसे बुला रहे हैं?" वृद्ध ब्राह्मण ने दुःखी होकर और आगे विलाप किया, "हे पुत्र! तुम कहाँ चले गए? अब मैं आश्रम कैसे जाऊँगा? नित्य कर्म कैसे करूँगा? वेंकटेश्वर स्वामी ने कहा, "हे ब्राह्मण! आपका शरीर शिथिल हो चुका है, बाल सफ़ेद हो गए हैं, त्वचा में झुर्रियां पड़ गई हैं, दृष्टि मंद हो गई है। क्या फिर भी आप और जीवित रहना चाहते हो?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "मैंने अभी तक देव ऋण का भुगतान नहीं किया है, इसलिए मुझे जीवित रहना चाहिए।"इस उत्तर से वेंकटेश्वर स्वामी प्रसन्न हुए और वृद्ध ब्राह्मण का हाथ पकड़कर एक तीर्थ के पास ले जाकर उसमें स्नान करने को कहा। जैसे ही वृद्ध ब्राह्मण ने स्नान किया, वह युवा बन गया। बालक रूप में वेंकटेश्वर स्वामी ने अपना विष्णु रूप दिखाया और कहा, "अब तुम घर जाओ और नित्य कर्म करो।" वृद्ध ब्राह्मण युवा बनने के कारण इस तीर्थ को 'कुमारधारा तीर्थ' कहा गया।

कुमारस्वामी की कथा

देवताओं और राक्षसों के बीच हुए युद्ध में तारकासुर का वध करने के कारण कुमारस्वामी को ब्रह्महत्या का पाप लग गया। कुमारस्वामी इस पाप से मुक्ति पाने के लिए अपने पिता शिव के पास गए और उनसे मार्गदर्शन माँगा। शिव ने कहा, "नारायण के नाम का जाप करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिए, तुम सुवर्णमुखारी नदी के तट पर स्थित वेंकटाचल पर्वत पर जाओ। वहाँ कई तीर्थ स्थान हैं। तुम उन तीर्थों में स्नान करो और कुमारधारा तीर्थ में 'ॐ नमो वेंकटेशाय' मंत्र

का जाप करते हुए तपस्या करो।" देवताओं के सेनापति कुमारस्वामी ने शिव के निर्देशानुसार वेंकटाचल पहुँचकर विभिन्न तीर्थों में स्नान किया और कुमारधारा तीर्थ में प्रतिदिन तीन बार स्नान करते हुए 'ॐ नमो वेंकटेशाय' मंत्र का जाप करते हुए बारह वर्षों तक तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर नारायण ने दर्शन दिए और कहा, "तुमने अपने पिता की बात पर विश्वास करते हुए मेरी तपस्या की है। अब मुझसे वर माँगो।" कुमारस्वामी ने नारायण की परिक्रमा की और नमस्कार कर उनकी विभिन्न प्रकार से स्तुति की और कहा, "हे वेंकटाचलपति! हे नारायण! समस्त लोकों में व्याप्त रहने वाले प्रभु! भक्तों के दुःख हरने वाले स्वामी!" उन्होंने प्रार्थना की, "तारकासुर का वध करने के कारण मुझे ब्रह्महत्या का पाप लगा है। कृपया इस पाप का नाश करें।" नारायण ने कहा, "जो भी इस वेंकटाचल पर्वत के दर्शन करता है, उसके पाप नष्ट हो जाते हैं। तुमने मेरे लिए तपस्या की है, इसलिए तुम सभी पापों से मुक्त हो चुके हो। तुम कलियुग के अंत तक यहाँ रहकर मेरी सेवा करो।" इतना कहकर नारायण अदृश्य हो गए।

इस तीर्थ तक पहुँचने के लिए पापनाशन से छह किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। जंगल में स्थित होने के कारण, यहाँ केवल जनवरी-फरवरी के माघ मास की पूर्णिमा के दिन ही जाने की अनुमति होती है।

तुम्बुरु (गोन) तीर्थ की महिमा

एक बार नारद मुनि और तुम्बुरु अपनी वीणाओं के साथ नारायण की स्तुति करते हुए आकाश मार्ग में यात्रा कर रहे थे। नारद मुनि ने तुम्बुरु की रत्नों से जटित वीणा देखकर पूछा, "यह वीणा कहाँ से प्राप्त की?" तुम्बुरु ने उत्तर दिया, "मैंने प्राचीनबर्हि नामक राजा की स्तुति की थी। प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे यह वीणा उपहार में दी।" यह सुनकर नारद मुनि ने क्रोधित होकर श्राप दिया, "सज्जन लोग मनुष्य की स्तुति करने वाले को निंदनीय मानते हैं। इसलिए मैं ऐसे व्यक्ति से मित्रता नहीं रख सकता।

तुमने मनुष्य की स्तुति की है, इसलिए तुम पृथ्वी लोक में गिर जाओ।" नारद मुनि के श्राप से तुम्बुरु वेंकटाचल में गोन तीर्थ के पास गिर गए।

तुम्बुरु अपने लोक में वापस नहीं जा सकते थे, इसलिए वे गोन तीर्थ में स्नान करते हुए नारायण के लिए तपस्या करने लगे। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर नारायण ने तुम्बुरु को दर्शन दिया और वर माँगने के लिए कहा। तुम्बुरु ने कहा, "मैं नारद मुनि के श्राप से मुक्त होना चाहता हूँ और यह गोन तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध हो।" नारायण उनकी इच्छा पूर्ति का वरदान देकर अदृश्य हो गए। उस दिन से, गोन तीर्थ को 'तुम्बुरु तीर्थ' कहा जाने लगा।

तुम्बुरु तीर्थ तक पहुँचने के लिए पापनाशन से छह किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। यह स्थान जंगल में स्थित होने के कारण, यहाँ केवल जनवरी-फरवरी के माघ मास की पूर्णिमा के दिन ही जाने की अनुमति होती है।

पांडव तीर्थ की महिमा

वनवास के दौरान, पांडवों ने श्रीकृष्ण की इच्छा के अनुसार एक वर्ष तक वेंकटाचल में निवास किया। पांडवों द्वारा स्नान किए गए कुंड को 'पांडव तीर्थ' कहा जाता है। पांडव तीर्थ वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर से दो किलोमीटर की दूरी पर है और वहाँ सड़क की सुविधा है।

तिरुमला में ऊपर वर्णित तीर्थों के अतिरिक्त अनेक अन्य महत्त्वपूर्ण और पवित्र तीर्थ हैं, जिनके नाम निम्नलिखित हैं: इष्ट सिद्धि, कर्म सिद्धि, वट , औदुम्बर, गरुड़, गंधर्व, कुब्ज, दशप्राचेतस, शेष, वासुकी, देव, विष्णुवर्धन, कर्मकांड, कृष्ण, ऋणविमोचन, पर्जन्य, मेघ, संकर्षण, वासुदेव, नारायण, यक्ष, काल, गोमुख, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, पितृ, आर्षेय, वैश्वदेव, अस्थि, आंजनेय, शुद्धोदक, अष्टभैरव, बिल्व, विष्णु, सर्व, शारभ, ब्रह्म, इंद्र, फल्गुनी, भारद्वाज, आकाशगंगा, मेह, वरुण, सारस्वत,

कुमारिका, शक, अंग, ऋष्यश्रृंग, अष्टादश, दशावतार, हलायुध, सप्तर्षि, गजकोण, विष्वक्सेन, वायु, शिलातोरन, वज्र, पंचायुध, हलायुध, नरसिंह, कश्यप, मनमथ, अग्नि, गौतम, दैव, देवल, विश्वामित्र, भार्गव, भैरव, दुरारोहण, अष्टावक्र और क्षेत्रपाल शिला।

7

तिरुपति में दर्शनीय स्थल

गोविंदराज स्वामी मंदिर

पौराणिक कथा के अनुसार, कावेरी नदी के तट पर कण्व महर्षि ने भगवान नारायण के लिए तपस्या की। भगवान नारायण ने प्रसन्न होकर महर्षि को दर्शन दिए और वर माँगने को कहा। महर्षि ने विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि भगवान यहीं रहकर भक्तों को दर्शन दें। उनकी इच्छा पूरी करते हुए भगवान नारायण ने गोविंदराज स्वामी के रूप में अवतार लिया।

तमिलनाडु के चिदंबरम में नटराज स्वामी के नाम से पूजित शिव का एक प्रसिद्ध मंदिर है। इसी मंदिर में गोविंदराज स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई थी। उसके कुछ समय बाद, चिदंबरम पर कुलोत्तुंग नामक राजा का शासन आया। कुलोत्तुंग शिवभक्त था। उसने अपने मंत्री से कहा, "चूंकि विष्णु समुद्र में शयन करते हैं, इसलिए नटराज मंदिर में स्थित गोविंदराज की मूर्ति को समुद्र में फेंक दिया जाए।" मंत्री को कोई उपाय सूझा नहीं, इसलिए उसने यह बात सैनिकों को बताई। सैनिक गोविंदराज स्वामी की मूर्ति को समुद्र के पास ले जाने लगे। तभी गोविंदराज स्वामी के भक्तों ने सैनिकों को पाप और पुण्य का ज्ञान देते हुए उन्हें समझाया। भक्तों ने मूर्ति को तिरुपति ले जाकर वहाँ के घटनाक्रम के बारे में रामानुजाचार्य को सूचित किया।

रामानुजाचार्य ने तिरुपति में स्थित पार्थसारथी मंदिर के पास एक नया मंदिर बनवाया और 1130 में गोविंदराज स्वामी की मूर्ति स्थापित की। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा, नैवेद्य और उत्सव की तरह ही गोविंदराज स्वामी की भी पूजा, नैवेद्य और उत्सव का आयोजन किया। श्री वैष्णव परम्परा के अनुसार जो 108 दिव्य देशम् (तीर्थ स्थान)

स्वीकारें जाते है उसमें से एक गोविंदराज स्वामी का मंदिर भी है। तिरुपति का प्राचीन नाम श्रीपदपुरम था। रामानुजाचार्य द्वारा गोविंदराज स्वामी की स्थापना के बाद, श्रीपदपुरम का नाम बदलकर तिरुपति कर दिया गया। 'तिरु' का अर्थ है श्री, और 'पति' का अर्थ है पति। इस प्रकार, तिरुपति का अर्थ है लक्ष्मी देवी का पति।

अन्नमाचार्य ने तिरुपति में स्थित गोविंदराज स्वामी की कई कीर्तनों में स्तुति की है। उनमें से कुछ कीर्तनों का भाव इस प्रकार है:

"तिरुपति क्षेत्र में स्थित इस गोविंदराज स्वामी का रूप वटपत्रशायी के समान है। गोविंदराज स्वामी के चरणों में श्रीदेवी और भूदेवी स्थित हैं। नाभिकमल में ब्रह्मा विराजमान हैं। आदिशेष पर विराजकर वे भक्तों पर कृपा दृष्टि डाल रहे हैं। दो हाथों में शंख और चक्र, तीसरे हाथ में कमल धारण किए और चौथे हाथ को सिर के नीचे रखे वे शयन कर रहे हैं।"

"क्या आपने व्रेपल्ले (गोकुल) में बालक रूप में इसी प्रकार विश्राम कर दूध पिया था? जब गोपिकाएँ आपको झूले में लेटाकर लोरी गा रही थीं, क्या आप इसी प्रकार सोते हुए सुनते थे? क्या आप मथुरा में कुब्जा के घर इसी प्रकार विश्राम करते थे? क्या आप द्वारका में सत्यभामा के साथ इसी प्रकार बातें करते थे? आपने सोलह हजार पत्नियों के हृदय को तकिए के रूप में भोगा, और तिरुपति में श्रीदेवी और भूदेवी के साथ भोगविलास कर रहे हो?"

"क्या गोपिकाओं के साथ खेलकर थक गए हो? या वृंदावन में गायें चराकर? गोपबालकों के साथ खेलकर थक गए हो? या गोवर्धन पर्वत को उठाकर थक गए हो? इस गोविंदराज स्वामी के यहाँ सोने का कारण अज्ञात है। तिरुमला में खड़े वेंकटेश्वर स्वामी तिरुपति में विश्राम करते हुए दर्शन दे रहे हैं।"

जो गोविंदराज स्वामी की शरण में आते हैं, वे उन्हें रक्षा प्रदान करते हैं। भूदेवी और लक्ष्मी देवी के पति गोविंद की सेवा करें।

"गोविन्दराज स्वामी ने नन्दव्रज में गायों और गोपियों को इन्द्र की मूसलधार वर्षा से बचाने के लिए अपनी छोटी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर, उनके नीचे उन्हें सुरक्षित किया। यह गोविन्द वही हैं जिन्हें अनेक गोपिकाएँ प्रेम करती थीं। गोविन्द, जो गायों को चराते हुए प्रसिद्ध हुए, उन्होंने ही बाद में मथुरा नगर में आकर कंस का वध कर अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव को कारागृह से मुक्त किया।"

"जब क्रूर कालिया नामक सर्प ने यमुनाजी को विषैला कर दिया और प्राणों का संकट उत्पन्न कर दिया, तब गोविन्द ने उसे पराजित कर वहाँ से निकाल दिया और सभी को सुरक्षित किया। वीरता के प्रतीक सुदर्शन चक्र से उन्होंने शिशुपाल जैसे असुरों का नाश किया। अपने गुरु सांदीपनि और माता देवकी की इच्छापूर्ति हेतु उन्होंने समुद्र पार करके उनके मृतक पुत्रों को पुनः जीवित किया।"

इस पार्थसारथी मंदिर के पहले गोपुरम से प्रवेश करते ही वेदांत देशिक, मणवाल महामुनि, वरवर मुनि, आल्वार, रंगनाथ स्वामी, सीता-राम-लक्ष्मण, लक्ष्मी देवी, रामानुजाचार्य, अनंताचार्य, तिरुमला नंबि, गोदा देवी, कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी और नरसिंह स्वामी के मंदिर भी स्थित हैं। गोदा देवी और तिरुमला नंबि के मंदिरों की स्थापना रामानुजाचार्य ने की, जबकि रामानुजाचार्य मंदिर की स्थापना उनके शिष्यों ने की थी।

यह गोविंदराज स्वामी मंदिर तिरुपति रेलवे स्टेशन से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

कोदंडराम स्वामी मंदिर

कोदंडराम स्वामी मंदिर के विषय में स्थलपुराण से: श्रीराम, रावण का वध करने के बाद अयोध्या लौटते समय तिरुपति में कुछ समय के लिए रुके और तिरुमला स्थित स्वामि पुष्करिणि में स्नान किया। इस समय, जाम्बवंत ने तिरुपति में श्रीराम के विश्राम स्थल पर सीता,

श्रीराम, लक्ष्मण की मूर्तियों को स्थापित किया और पूजा की। जाम्बवंत ने सीता देवी को श्रीराम के दाहिनी ओर स्थापित किया, इसलिए आज भी श्रीराम की दाहिनी ओर सीता देवी और बाईं ओर लक्ष्मण होते हैं। मंदिर के सामने गरुड़जी की मूर्ति स्थापित की गई है। द्वापर युग में, जनमेजय महाराज ने इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया और श्रीराम की पूजा की।

अन्नमाचार्य ने कोदंडराम स्वामी की स्तुति में कई कीर्तनों की रचना की है जिसमें से एक कीर्तन का भाव इस प्रकार है: "श्रीराम, दशरथ महाराज के पुत्र होते हुए भी मुक्ति देने वाले नारायण हैं। श्रीराम, जो साधारण मानव के रूप में प्रकट हुए श्रीहरि हैं, उन्होंने धनुष तोड़ा। वे राजा होते हुए भी अपनी पाद धूल से पत्थर बनी अहल्या को स्त्री में बदलने वाले महानुभाव हैं। साधारण मानव के रूप में रहने के बावजूद, श्रीराम ने अद्भुत महिमा का प्रदर्शन किया। ऐसे श्रीराम के दर्शन करें।

"श्रीराम ने इस संसार में साधारण मानव के रूप में वसिष्ठ मुनि को गुरु बनाया। फिर उन्होंने जटायु को भी मुक्ति दी। सीता देवी के लिए वानरों की मदद से समुद्र पर पुल बनाकर रावण का वध किया। नारायण ने राक्षसों का संहार करने के लिए देवताओं को वानरों के रूप में जन्म लेने का आदेश दिया। फिर भी, नारायण (श्रीराम) ने राक्षस विभीषण को लंका का राजा बनाया। अब वही श्रीराम वेंकटाचल को अपना निवास बनाकर आए हैं। ऐसे श्रीराम के दर्शन करें।"

हाथीराम बाबाजी की शिष्य परम्परा में महंत धर्मदासु ने सीता, श्रीराम और लक्ष्मण के लिए चांदी के मुकुट और श्रीराम के लिए चांदी का धनुष प्रस्तुत किया, और ध्वज स्तंभ को स्वर्ण से मढ़वाया। महंत भगवन दासु ने सीता, श्रीराम और लक्ष्मण के लिए कई स्वर्ण आभूषण बनवाए। महंत प्रयाग दासु ने मंदिर परिसर को बहुत सुंदर रूप से सजाया।

जाम्बवंत ने हनुमान के विग्रह की प्रतिष्ठा नहीं की थी, इसलिए मुख्य गर्भगृह में हनुमान की मूर्ति नहीं है। कुछ समय बाद, भक्तों ने पहले

गोपुरम के बाहर हनुमान के लिए एक मंदिर बनाया और हनुमान की मूर्ति स्थापित की। हनुमान जयंती के दिन, सीतारामलक्ष्मण हनुमान के मंदिर जाकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं। वहाँ सीता, श्रीराम और लक्ष्मण पूजा और नैवेद्य ग्रहण करते हैं। अन्नमाचार्य ने हनुमान की इस प्रकार स्तुति की है:

"महान पराक्रम वाले हे हनुमान! अपनी पूँछ मोड़कर कदम बढ़ाता हुआ आपका रूप आश्चर्यचकित करने वाला है। आप राक्षसों का संहार कर सीता देवी को श्रीराम की अंगूठी देकर उन्हें सांत्वना देने वाले हो। आप भक्तों को अभय देने वाले हो। तिरुपति में स्थित होकर आप श्री वेंकटेश्वर की सेवा करने आने वाले भक्तों पर कृपादृष्टि डालते हो।"

कोदंडराम स्वामी मंदिर, गोविंदराज स्वामी मंदिर से आधा किलोमीटर और रेलवे स्टेशन से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

कपिल तीर्थ

वराह पुराण से

(एक बार भगवान शिव ने वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए, उनकी पूजा की, स्तुति की और प्रार्थना करते हुए कहा, "स्वामी! मुझे इस वेंकटाचल में निवास करने की अनुमति दें।" तब स्वामी ने शिवजी से कहा, "वेंकटाचल पर्वत के आग्नेय दिशा में नीचे निवास करो।") वेंकटाचल पर्वत के नीचे पाताल लोक में कपिल महर्षि शिवलिंग की पूजा करते थे। उसी शिवलिंग के पास कपिल तीर्थ भी स्थित है। (शिवजी की इच्छा अनुसार कपिल महर्षि द्वारा पूजित शिवलिंग और कपिल तीर्थ भूमि पर प्रकट हुए।) उस कपिल तीर्थ में देवताओं ने स्नान करके शिवजी की पूजा और स्तुति की। यह कपिलेश्वर ही तिरुमला धाम के क्षेत्रपाल हैं

इसी कपिल तीर्थ में नम्मालवार, वेणुगोपालस्वामी, नरसिंहस्वामी और लक्ष्मीनारायण के मंदिर स्थित हैं। नम्मालवार के मंदिर में रामानुजाचार्य एक वर्ष तक निवास करते रहे। उसी समय उन्होंने तिरुमलानंबि से 18 बार रामायण को सुना। गोविंदराजस्वामी के ब्रह्मोत्सवों के अंतिम दिन सुदर्शन के साथ श्रीदेवी, भूदेवी सहित गोविंदराजस्वामी को कपिल तीर्थ स्थित वेणुगोपालस्वामी मंदिर में लाया जाता है, जहाँ अभिषेक करके वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर नैवेद्य अर्पण कर पूजा की जाती है। अंत में सुदर्शन चक्र को कपिल तीर्थ में स्नान कराया जाता है। इसे ही 'चक्रस्नान' कहा जाता है। इसी प्रकार कोदंड रामस्वामी ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन सुदर्शन के साथ सीता और लक्ष्मण सहित कोदंडरामस्वामी को कपिल तीर्थ स्थित वेणुगोपालस्वामी मंदिर में लाया जाता है, जहाँ अभिषेक करके वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर नैवेद्य अर्पण कर पूजा की जाती है। अंत में सुदर्शन चक्र को कपिल तीर्थ में स्नान कराया जाता है।

यह कपिल तीर्थ रेलवे स्टेशन से तिरुमला जाने वाले मार्ग में तीन किलोमीटर की दूरी पर अलीपीरी में स्थित है।

इस्कॉन राधा गोविंद मंदिर

अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण चैतन्य संघ (इस्कॉन) के संस्थापक श्रील भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद ने 1974 में तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। उन्होंने तिरुमला की भव्य व्यवस्थाओं को देखकर अपने शिष्यों से कहा कि हमें भी ऐसे मंदिरों का निर्माण करना चाहिए, जैसे बालाजी (वेंकटेश्वर स्वामी) का मंदिर है तथा उसमें उत्कृष्ट सुविधाएँ हों और जो स्वर्ण गोपुरम से सुसज्जित हों।

श्रील प्रभुपाद के निर्देशानुसार, उनके शिष्यों ने अलिपिरी में इस्कॉन राधा गोविंद मंदिर का निर्माण किया। इस मंदिर में राधा गोविंद के साथ-साथ अष्ट सखियाँ भी स्थापित हैं। सभी इस्कॉन मंदिरों में भगवद गीता, भागवत, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ भी उपलब्ध हैं।

सभी इस्कॉन मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, राधाष्टमी, बलराम पूर्णिमा, श्रीराम नवमी, नृसिंह चतुर्दशी, गोवर्धन पूजा, गौर पूर्णिमा, नित्यानंद त्रयोदशी जैसे कई उत्सव मनाए जाते हैं।

प्रवचन समय- सुबह 8:30 बजे भागवत प्रवचन और शाम 8:00 बजे भगवद गीता प्रवचन होता है। पूजा समय- सुबह 4:30 बजे मंगल आरती, सुबह 7:30 बजे दर्शन आरती, दोपहर 12:30 बजे राजभोग आरती, शाम 4:00 बजे धूप आरती, शाम 7:00 बजे संध्या आरती, रात 8:30 बजे शयन आरती।

भोग समय- सुबह 4:15 बजे परमन्न और दूध से बनी खीर का भोग, 7:15 बजे फल और फलों के रस का भोग, 8:15 बजे चपाती, चावल, दाल, सब्जियाँ, दही और रसम का भोग, दोपहर 12:00 बजे 26 प्रकार के पकवान, जिनमें छह प्रकार के स्वाद (खारा, नमकीन, कड़वा, मीठा, तीखा और खट्टा) शामिल होते हैं। इसे राजभोग नैवेद्य कहा जाता है। दोपहर 3:30 बजे चपाती, चावल, दाल, दो प्रकार की सब्जियाँ, दही और रसम का भोग, शाम 6:30 बजे फल और फलों के रस का भोग, रात 8:20 बजे दो प्रकार के हल्के भोजन का भोग, रात 9:30 बजे दूध का भोग।

कीर्तन (भजन) समय- सुबह 4:30 बजे मंगल आरती में, सुबह 7:30 बजे दर्शन आरती में, शाम 7:00 बजे संध्या आरती में, भक्तगण एक साथ मिलकर 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे' महामंत्र का कीर्तन (भजन) करते हैं। मंगल आरती के बाद, भक्तगण तुलसी माला पर इस महामंत्र का दो घंटे तक जप करते हैं।

सभी इस्कोन मंदिर के भक्त राधा कृष्ण की भक्ति करने के अलावा अन्य नगरों, गाँवों और घरों में हरे कृष्ण संकीर्तन करते हैं और प्रवचन भी देते हैं। प्रवचनों में मुख्य विषय निम्नलिखित है:

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः।
ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीङ्गणा॥

ऐश्वर्य, बल, कीर्ति, सौंदर्य, ज्ञान, और वैराग्य–ये छह गुण जिनमें पूर्णता से विद्यमान होते हैं, वे ही भगवान कहलाते हैं।

(विष्णु पुराण 6.5.47)

इस श्लोक को व्यासदेव के पिता, पराशर महर्षि, ने विष्णु पुराण में बताया है। भगवान हर युग में अवतरित होते हैं। भगवान को अवतार लेने के लिए कोई आदेश नहीं देता, फिर भी वे इस भौतिक संसार में दुःखी जीवों पर दया दिखाने के लिए अवतार लेते हैं। विद्वान भी संदेह करते हैं कि भगवान इस पृथ्वी पर कैसे अवतरित होते हैं। श्रीकृष्ण भगवान ने भगवद गीता (4.7-8)में कहा, "धर्म की रक्षा के लिए, दुष्टों के संहार के लिए और साधुओं की रक्षा के लिए मैं हर युग में अवतार लेता हूँ।" शास्त्रों में भगवान के अवतारों के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है, और इनका समर्थन सभी मान्य आचार्यों ने किया है।

भगवान जितने शक्तिशाली हैं, भगवान का नाम भी उतना ही शक्तिशाली है। इसलिए बच्चों को अर्थहीन नाम देने की बजाय, भगवान के नाम देने चाहिए। जैसे श्रीनिवास, वेंकट, बालाजी, वेंकटेश्वर, श्रीराम, कृष्ण, लक्ष्मी, पद्मावती इत्यादि। किन्तु ऐसे भगवान के शक्तिशाली नाम का उपयोग लक्ष्मी वाइन्स, वेंकटेश्वर वाइन्स, वेंकटेश्वर मटन शॉप, बालाजी चिकन शॉप जैसे नामों के लिए करने से भगवान का अपराध होता है। इसलिए, भगवान के दिव्य नाम का उपयोग ऐसे कार्यों के लिए मत करो और अपने बच्चों को बिना अर्थ वाले नाम देने के बजाय भगवान के नाम रखें और इस प्रकार हमेशा भगवान का नाम जपने का अभ्यास करें ,

विशेष करके हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे' महामंत्र की प्रतिदिन १६ माला जप करें।

पाप कर्म होने पर पाप का फल केवल वही व्यक्ति नहीं भुगतता जिसने पाप किया है, बल्कि उसे सहायता करने वाले भी उस पाप के फल में भागीदार बनते हैं। उदाहरण के लिए, मद्यपान करने वाले के अलावा, उसे बनाने वाले, बेचने वाले और अनुमति देने वाले को भी पाप का फल भुगतना पड़ता है। शास्त्र में कहा गया है कि बच्चों को ठीक से नहीं पालने पर माता-पिता भी उस पाप में शामिल होते हैं। इसलिए शास्त्रवर्णित चार प्रकार के पाप कर्म से बचें और पाप कर्म करने वालों की सहायता न करें। ये पाप कर्म इस प्रकार है: नशा करना, जुआ खेलना, (आमिश आहार करना) मांस खाना और व्यभिचार करना।

दुर्भाग्यवश, वर्तमान कलियुग में कई लोग स्वयं को भगवान का अवतार घोषित कर रहे हैं। शास्त्रज्ञान न रखने वाले उनकी बातों पर आँख मूँद कर विश्वास कर लेते हैं और धोखा खाते हैं। यह देखना आवश्यक है कि जो व्यक्ति स्वयं को भगवान कह रहा है, उसके पास पराशर मुनि द्वारा वर्णित छह गुण हैं या नहीं। यदि वे छह गुण पूर्ण रूप से नहीं हैं, तो उसे धोखेबाज मानना चाहिए। इस प्रकार, यदि शास्त्रों के आधार पर भगवान के बारे में नहीं जान पाए, तो उस धोखेबाज के साथ-साथ हम भी नरक में जाने से नहीं बच सकते।

यदि हम शास्त्रों को न मानते हुए पाप कर्म करते हैं, तो लोग हमारी जीवित रहते हुए ही निंदा करेंगे और मृत्यु के बाद हमें नरक का अनुभव कर, कई बार पशु, पक्षी, और कीड़े-मकोड़ों के रूप में जन्म लेना पड़ेगा। श्री कृष्ण भगवान ने भगवद गीता के 16वें अध्याय के 23वें श्लोक में कहा है कि, "जो शास्त्रों का पालन नहीं करता, वह अपनी इच्छाओं के अनुसार जीता है और वह न तो इस जीवन में सफलता प्राप्त कर पाता है, न सुख, न उच्च जन्म (स्वर्ग, मुक्ति) पा सकता है।" भगवद गीता के चौथे अध्याय के 40वें श्लोक में भी श्री कृष्ण ने कहा है कि,

"जो शास्त्रों को नहीं मानते, वे अज्ञानी होते हैं और जो शास्त्रों के प्रति श्रद्धा नहीं रखते, वे भगवान के ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाते और पतन को प्राप्त होते हैं। वे न तो इस लोक में सुखी होते हैं, न ही परलोक में।" इसलिए, हमें जीवित रहते हुए शास्त्रों में बताए गए नियमों का पालन करके उच्च जन्म प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

भागवत (1.5.17) में नारद मुनि ने व्यासदेव से कहा, "भगवान की भक्ति का अनुसरण करने वाले लोग समय के साथ मुक्ति प्राप्त न कर सकें तो भी कोई हानि नहीं है, लेकिन जो लोग केवल पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करते हैं, उनके कार्य मृत्यु के साथ समाप्त हो जाते हैं। इसलिए ऐसे कार्यों से कोई लाभ नहीं होता।" इस दुनिया में कोई भी स्थायी रूप से एक साथ नहीं रह सकता। हम अपने शरीर में हमेशा के लिए नहीं रह सकते; हम सभी को एक दिन मरना होगा। मृत्यु के बाद पत्नी, बच्चों और अन्य रिश्तेदारों के साथ हमारा संबंध भी समाप्त हो जाता है। सभी अकेले जन्म लेते हैं और अकेले ही मरते हैं। मृत्यु के बाद, हमें अपने कर्मों के फल अकेले ही भोगना पड़ता है।

महाभारत के वनपर्व में भीम और द्रौपदी को समझाते हुए धर्मराज ने कहा, "भाई, पत्नी-पति, माता-पिता, रिश्तेदार आदि प्रेम में एकजुट होते हैं, लेकिन धन के लिए प्रेम संबंधों को तोड़कर शत्रु बन जाते हैं और एक-दूसरे का वध करते हैं।" जितना अधिक धन अर्जित किया जाता है, उतनी ही अधिक धन की इच्छा बढ़ती है। धन कमाने के समय तक ही किसी को सम्मान मिलता है; कमाई न होने पर कोई भी सम्मान नहीं करता। धनवान व्यक्ति को अपने बच्चों से भी भय होता है, दूसरों की तो बात ही क्या? धन से हिंसा, झूठ, कपट, वासना, क्रोध, चिंता, घमंड, झगड़ा, शत्रुता, अविश्वास, ईर्ष्या, व्यभिचार, जुआ, शराब पीने जैसी अनेक बुरी आदतें उत्पन्न होती हैं।

धन, जो इतनी सारी बुराइयों को उत्पन्न करता है, क्या उसे भगवान से माँगना उचित है? भागवत (10.60.53) में श्रीकृष्ण भगवान कहते

हैं, "व्रत, तपस्या और पूजा के माध्यम से मुझे प्राप्त करने के बाद भी जो लोग भगवद्धाम की इच्छा नहीं करते और पारिवारिक जीवन के लिए सांसारिक लाभ की इच्छाएँ माँगते हैं, वे दुर्भाग्यशाली हैं। ये सांसारिक लाभ तो नरक में भी मिल सकते हैं। ऐसे लोग इंद्रियों की तृप्ति में लिप्त रहते हैं, इसलिए नरक ही उनके लिए उपयुक्त स्थान है।"

इसी बात को श्रीमद्भागवत (3.30.3-5)में कपिल भगवान ने अपनी माता से कहा, "अज्ञानी व्यक्ति सोचता है कि उसका शरीर, परिवार के सदस्य, धन और घर स्थायी हैं। प्रत्येक जीव इंद्रिय सुखों का अनुभव कर रहा है, इसलिए वह अपने शरीर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। न केवल इस धरती पर, बल्कि नरक में यातना भोग रहे जीव भी अपने शरीर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते।"

श्रीमद्भागवत (10.51.20)में देवताओं ने मुचुकुंद महाराज से कहा, "मुक्ति के अलावा किसी अन्य वरदान की हमसे इच्छा कर सकते हो, मुक्ति केवल नारायण ही दे सकते हैं।" अम्बरीष महाराज, प्रह्लाद महाराज, ध्रुव महाराज, पृथु महाराज और भरत महाराज जैसे शुद्ध भक्तों ने, और रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, अनंताचार्य, चैतन्य महाप्रभु, नित्यानंद प्रभु और माधवेन्द्र पुरी जैसे आचार्यों ने भगवद्धाम और भगवान की भक्ति की कामना की, न कि धन और भौतिक इच्छाओं की। वे सभी हमारे आदर्श हैं, इसलिए हमें उनका पदानुसरण करते हुए भगवान से वो ही माँगना चाहिए जो उन्होंने माँगा था, अन्य प्रकार की भौतिक इच्छा नहीं करनी चाहिए।

महाभारत में यक्ष ने धर्मराज से कई प्रश्न पूछे। उनमें से एक प्रश्न था, "संपत्ति क्या है?" धर्मराज ने उत्तर दिया, "शास्त्र ज्ञान ही सच्ची संपत्ति है।" भगवद गीता (४.३६)में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा, "यदि तुम पापी भी हो, तो दिव्य ज्ञान की नौका में स्थित होकर संसार तर सकते हो." (भगवद्गीता ४.३७) "जैसे जलती हुई अग्नि लकड़ी को राख में बदल देती है, हे अर्जुन, वैसे ही ज्ञान की अग्नि सभी भौतिक कर्मों के फलों

को राख में बदल देती है।" (भगवद्गीता ४.३८) "इस संसार में ज्ञान से बढ़कर कुछ नहीं है। इस संसार में भगवान से संबंधित ज्ञान से अधिक पवित्र और उच्च कुछ भी नहीं है "" विनम्रता, दम्भहीनता , सहनशीलता, सरलता, प्रामाणिक गुरु का आश्रय लेना, इंद्रियों का नियंत्रण, अहंकार का अभाव, जन्म-रोग-बुढ़ापा-मृत्यु के बारे में सही समझ रखना, सुख-दु:ख को समान रूप से देखना, मुझमें अनन्य भक्ति, भक्तों के संग में रहना, सृष्टि के बारे में जानना - ये सभी ज्ञान हैं, और इनके विपरीत अज्ञान है। (भगवद्गीता १३.८-१२)"

भोजन करना, सोना, संतान प्राप्त करना, अपनी रक्षा करना - ये सभी काम जानवर और मनुष्य में समान हैं। मैं कौन हूँ? मैं जन्म लेने से पहले कहाँ था? मैं मरने के बाद कहाँ जाऊँगा? यह सृष्टि कैसे आई? सृष्टिकर्ता और मेरे बीच कोई संबंध है? इन प्रश्नों को समझने की बुद्धि केवल मनुष्यों में होती है, जानवरों में नहीं। ऐसे जिज्ञासु ही सच्चे मनुष्य हैं। जिनमें ऐसी जिज्ञासा नहीं होती, वे दो पैरों वाले जानवरों के समान हैं, यह हितोपदेश(२५) में कहा गया है। इसलिए इस मूल्यवान मानव जन्म को व्यर्थ न जाने दें।

"करोड़ों रुपये देकर भी गुजरा हुआ एक क्षण नहीं खरीदा जा सकता," ऐसा चाणक्य पंडित ने कहा। इसलिए समय की महत्ता को समझें। यदि मान लें कि हम 80 साल जीते हैं, तो 5 साल बचपन में, 15 साल पढ़ाई में, और बुढ़ापे में 5 साल बीत जाते हैं। बाकी जीवन में रोज 8 घंटे सोने में, 8 घंटे काम करने में, 2 घंटे काम पर जाने-आने में, 2 घंटे खाने में, और 1 घंटा स्नान में बीत जाते हैं। इस प्रकार 21 घंटे बीतते हैं और बचते हैं केवल 3 घंटे। ये 3 घंटे भी बीमारियों, खरीदारी, शादियों और उत्सवों में बीत जाते हैं। इस तरह 80 साल व्यर्थ ही चले जाते हैं। आइए जानते हैं कि इन व्यर्थ हो रहे 80 सालों का उपयोग कैसे करें।

भगवद गीता (३.९) में श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा, "हे कुन्तीपुत्र! भगवान विष्णु के लिए कर्म करो, इस प्रकार तुम कर्म बंधन

से मुक्त हो जाओगे।" इस श्लोक में श्रीकृष्ण भगवान अपने लिए कर्म करने के लिए कह रहे हैं। मात्र श्रीकृष्ण की पूजा करना ही भक्ति नहीं है। श्रीकृष्ण के आनंद के लिए किये गये सभी काम भक्ति है।

इसलिए, जब हम स्नान करके श्रीकृष्ण को प्रणाम करते हैं और अगरबत्तियाँ, दीपक, फूल और तुलसी दल अर्पित करते हैं, तो हमारा स्नान का समय भी भक्ति के रूप में गिना जाता है। इसी प्रकार, जब हम स्नान करके शुद्धता से भोजन तैयार करके भगवान को अर्पित करते हैं, तो भोजन बनाने का समय, बर्तन धोने का समय, सामग्री लाने का समय, श्रीकृष्ण को अर्पित किए भोजन को प्रसाद रूप में लेने का समय, भोजन सामग्री खरीदने का समय, धन कमाने का समय, और धन कमाने के लिए यात्रा का समय सभी भक्ति-युक्त सेवा बन जाते हैं। गृहस्थों को अपने अर्जित धन का प्रयोग कृष्णभावनामय जीवन व्यापन करने के लिए और कृष्णसेवा में सहायक होनेवाले शरीर तथा परिवार की ज़रूरतों को जितना हो सके न्यूनतम करना चाहिए।

इसलिए कृपया जागें और वर्तमान मानव जीवन के महत्त्व को समझने का प्रयास करें। सभी जीवों में भारतवर्ष में मिलने वाला मानव जन्म ही सर्वोत्तम है। श्री विष्णुपुराण (द्वितीय अंश तीसरा अध्याय श्लोक २३) में कहा गया है कि अनगिनत जन्मों के पुण्य से ही भारत में जन्म मिलता है। अन्य सभी जीवों की तरह मानव जन्म भी अस्थायी है, लेकिन इसमें भगवद्धाम प्राप्त करने का अवसर है। इसलिए, मृत्यु से पहले श्रीकृष्ण की भक्ति का अनुसरण करके,, जानवरों द्वारा प्राप्त न किए जा सकने वाले भगवद्धाम को प्राप्त करना चाहिए। यदि कोई इस प्रयास में विफल भी होता है और भगवद्धाम प्राप्त नहीं कर पाता , तो भी अगले जन्म में उसे भक्त परिवार में जन्म प्राप्त होता है वहाँ फिर से उसे भक्ति करने का अवसर मिलता है। (भगवद गीता ६.४१-४२)

सत्ययुग में विष्णु का ध्यान करके, त्रेतायुग में यज्ञ करके, और द्वापरयुग में भगवान के पाद पद्मों की सेवा करके जो फल प्राप्त होता था,

वह कलियुग में केवल हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करने से ही प्राप्त हो सकता है। भागवत(१२.३.५२)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

इस 16 नाम वाले हरे कृष्ण महामंत्र से कलियुग के सभी दोष दूर हो जाते हैं। चारों वेदों को जितना भी खोजें, इससे आसान मार्ग और कोई नहीं है।

इस प्रकार, इस्कोन मंदिर लोगों को भगवद गीता और भागवत के बारे में उपदेश देता है।

इस्कोन मंदिर के ऐसे प्रचार से, अनेक परिवार शराब, मांस, व्यभिचार, जुआ जैसे पाप कर्मों को छोड़कर मंदिर के भक्तों की तरह राधाकृष्ण भक्ति का अनुसरण कर रहे हैं।

तिरुपति इस्कॉन राधा गोविंद मंदिर जैसे इस्कॉन मंदिरों की संख्या दुनिया भर में एक हज़ार से ज़्यादा है, और हज़ारों प्रचार केंद्र हैं। इसलिए, मुझे आशा है कि आप भी अपने निकटतम इस्कॉन मंदिर में जाकर भक्तों के साथ भक्ति का अनुसरण करेंगे।

इस्कॉन राधा गोविंद मंदिर रेलवे स्टेशन से चार किलोमीटर और कपिल तीर्थ से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

अलिपिरी में श्रीवारी पादालु (वेंकटेश्वर स्वामी पाद चिह्न)

रामानुजाचार्य ने एक बार एक वर्ष तक तिरुपति के कपिलतीर्थ में निवास किया। उस समय तिरुमल नंबि प्रतिदिन सुबह भगवान वेंकटेश्वर की सेवा कर, तिरुमला से तिरुपति आते थे और रामानुजाचार्य को रामायण का ज्ञान प्रदान कर शाम तक पुनः तिरुमला लौट जाते थे।

मध्याह्न के समय भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन न कर पाने के कारण तिरुमल नंबि उदास रहने लगे। उनकी व्यथा को समझते हुए भगवान वेंकटेश्वर ने अलिपिरी में पर्वत पर चढ़ने वाली सीढ़ियों के पास अपने चरणों के चिन्ह प्रकट किए और तिरुमल नंबि से कहा, "इन पाद चिन्हों का दर्शन करना मेरे दर्शन के समान है।"इससे तिरुमल नंबि अत्यंत प्रसन्न हुए और प्रतिदिन दोपहर में उन पाद चिन्हों के दर्शन कर पूजा करने लगे।

अलिपिरी में श्रीवारी पादलु इस्कॉन मंदिर से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं और रेलवे स्टेशन से चार किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

पद्मावती देवी मंदिर - पद्म सरोवर

तिरुचानूर में अलमेलुमंग (लक्ष्मी देवी) मंदिर में स्थित देवी को स्थल पुराणों के अनुसार, शास्त्रों के अनुसार और अर्चना आदि आचारों के अनुसार लक्ष्मी देवी कहा गया है। अन्नमाचार्य ने भी अपनी कीर्तनों में अलमेलुमंग को श्रीमहालक्ष्मी के रूप में बार-बार वर्णित किया है। यह लक्ष्मी देवी पद्म सरोवर में कमल से प्रकट हुई थीं, इसलिए इन्हें पद्मावती देवी कहा जाता है। पद्मावती देवी चतुर्भुज के साथ होती हैं। उनके दो हाथों में कमल होता है, और अन्य दो हाथों में वरद और अभय मुद्रा होती है। तमिल में 'अलर' का अर्थ है फूल, 'मेल' का अर्थ है ऊपर, और 'मंगाई' का अर्थ है सुंदर स्त्री। अलमेलुमंग का अर्थ है "कमल में चमकती सुंदर स्त्री।"

पद्म सरोवरः पद्मावती देवी मंदिर के पीछे पद्म सरोवर स्थित है। भृगु महर्षि द्वारा नारायण के वक्षस्थल पर लात मारने के कारण लक्ष्मी देवी पाताल में स्थित कपिल महर्षि के आश्रम में चली गईं। वहाँ कपिल महर्षि लक्ष्मी देवी की पूजा करते थे। नारायण लक्ष्मी देवी की खोज में भूतल पर कोल्हापुर में अगस्त्य मुनि द्वारा स्थापित लक्ष्मी देवी के मंदिर में पहुंचे। वहाँ मुनियों के साथ-साथ नारायण भी लक्ष्मी देवी की पूजा करने लगे। इस प्रकार दस वर्ष बीत गए।

एक दिन, आकाशवाणी के रूप में लक्ष्मी देवी ने नारायण से कहा: दक्षिण दिशा में कृष्णा नदी के पास सुवर्णमुखारी नदी के किनारे एक सरोवर खोदकर स्वर्ग के स्वर्ण कमलों को उस सरोवर में डालकर लक्ष्मी देवी की पूजा करो। वहाँ लक्ष्मी देवी के दर्शन होंगे।

जैसे आकाशवाणी ने निर्देश दिया, नारायण ने कृष्णा नदी और सुवर्णमुखारी नदी में स्नान किया और शुकदेव के आश्रम के पास एक सरोवर खोदा। फिर नारायण ने वायु देवता को बुलाया और उनसे स्वर्ग से सुनहरे कमल लाने को कहा। नारायण के आदेश पर, वायु देवता स्वर्ग से सुनहरे कमल ले आए। उन कमलों को मुरझाने से बचाने के लिए, नारायण ने वहाँ सूर्य देवता(1) की स्थापना की। फिर नारायण ने उन सुनहरे कमलों को सरोवर में डालते हुए 12 वर्षों तक लक्ष्मी देवी की पूजा की। कार्तिक मास के शुक्रवार के दिन, लक्ष्मी देवी उस पद्म सरोवर से प्रकट हुईं। देवताओं ने अपने-अपने वाद्ययंत्र बजाते हुए लक्ष्मी देवी की स्तुति की। लक्ष्मी देवी ने अपने गले की फूलों की माला नारायण के गले में डालकर उन्हें गले लगाया। नारायण ने लक्ष्मी देवी के साथ वेंकटाचल की ओर जाते हुए पद्म सरोवर से कहा: "हे सरोवर! मैंने तुम्हारे किनारे पर लक्ष्मी देवी को पाया। तुम आज से पद्म सरोवर के रूप में प्रसिद्ध हो जाओगे। तुम लक्ष्मी देवी के प्रिय रहोगे। जो भी इसमें स्नान करेगा, उसके पाप नष्ट हो जाएँगे।" और नारायण वेंकटाचल चले गए।

लक्ष्मी देवी और वेंकटेश्वर स्वामी के वेंकटाचल जाते समय, देवताओं ने लक्ष्मी देवी से प्रार्थना की, "माँ! आपने यहाँ अवतार लिया है, कृपया इस स्थान पर अर्चा मूर्ति के रूप में रहकर भक्तों की इच्छाओं को पूरा करें।" लक्ष्मी देवी उनकी इच्छा के अनुसार अर्चा मूर्ति बन गईं।

पद्मावती देवी को प्रतिदिन सुप्रभात सेवा, सहस्र नामार्चना, कल्याणोत्सव, ऊँजल सेवा और एकांत सेवा की जाती है। सोमवार को अष्टदल पादपद्माराधना, शुक्रवार को अभिषेक और गुरुवार को

(1) आज भी वह सूर्य मंदिर पद्मावती देवी मंदिर के बगल में स्थित है।

तिरुप्पावड़ा सेवा जैसे उत्सव होते हैं। पद्मावती देवी के लिए ब्रह्मोत्सव और नवरात्रि उत्सव भी आयोजित किए जाते हैं। पद्मावती देवी के अवतरण दिवस, कार्तिक शुक्ल पंचमी के दिन, तिरुमला से गजवाहन पर आने वाले चक्रतालवार के साथ पद्मावती देवी का पद्म सरोवर में स्नान कराया जाता है। यह यहाँ की परम्परा है।

कार्तिक मास में पद्मावती देवी के लिए ब्रह्मोत्सव आयोजित किये जाते हैं। ब्रह्मोत्सव के एक दिन, श्री वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित की गई फूलों की माला, कुमकुम, हल्दी, सुगंधित पदार्थ, साड़ी, ब्लाउज, लड्डू, वड़ा आदि प्रसाद पद्मावती देवी को अर्पित किए जाते हैं।

अन्नमाचार्य ने श्री पद्मावती देवी की महिमा गाते हुए अनेक कीर्तनों की रचना की। इन कीर्तनों में से एक कीर्तन में वो गाते हैं कि , "पद्मावती देवी, महाराष्ट्र के कोल्हापुर में श्री महालक्ष्मी, नारायणपुर में श्री पद्मावती, तिरुचानूर में अलमेलुमंग, और तिरुमला क्षेत्र में श्रीनिवास के वक्षस्थल पर व्यूह लक्ष्मी के रूप में विराजमान हैं, और अपने दर्शनार्थियों की इच्छाओं को पूरा करती हैं। वह जगन्माता कई स्थानों पर कई नामों से जानी जाती हैं, लेकिन वह श्रीनिवास की पत्नी हैं। अलमेलुमंग के हृदय में नारायण विराजते हैं, और नारायण के हृदय में अलमेलुमंग रहती हैं। दोनों मेरे हृदय में निवास करें।"

कृष्ण बलराम उपमंदिर: पद्मावती देवी मंदिर में कृष्ण बलराम का उपमंदिर भी स्थित है। महाभारत युद्ध में भाग न लेकर, बलराम तीर्थ यात्रा कर रहे थे। युद्ध के बाद, कृष्ण बलराम को ढूँढते हुए शुकदेव के आश्रम में आए। शुकदेव ने कृष्ण की सेवा की और उन्हें बताया कि बलराम तीर्थ यात्रा करते हुए यहाँ आ सकते हैं, इसलिए आप यहाँ प्रतीक्षा करें। शुकदेव की प्रार्थना मानकर, कृष्ण वहाँ रुक गए। बलराम तीर्थ यात्रा करते हुए शुकदेव के आश्रम में आए। तब कृष्ण को बलराम मिल गए। कृष्ण और बलराम द्वारका लौटने के बाद, शुकदेव ने कृष्ण बलराम का मंदिर बनवाया।

सुंदरराज स्वामी (वेंकटेश्वर स्वामी) उपमंदिर: यह उपमंदिर कृष्ण-बलराम मंदिर के बगल में स्थित है। सुंदरराज स्वामी आठ फीट ऊँचे हैं और श्रीदेवी और भूदेवी के साथ विराजमान हैं। यहाँ सुंदरराज स्वामी, श्रीदेवी और भूदेवी की उत्सव मूर्तियाँ भी हैं।

यह पद्मावती देवी मंदिर तिरुपति रेलवे स्टेशन से छह किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

श्रीनिवास मंगापुरम

वेंकटेश्वर स्वामी और पद्मावती देवी का विवाह होने के बाद, वे अगस्त्य मुनि के आश्रम में छह महीने तक रहे। अब इस स्थान पर वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर है, जिसे कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी कहते हैं। यहाँ से दो किलोमीटर की दूरी पर अगस्त्य मुनि का आश्रम स्थित है। श्रीनिवास मंगापुरम से तिरुमला तक 2400 सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों का निर्माण तोंडमाण नामक सम्राट ने किया। वेंकटेश्वर स्वामी पद्मावती देवी के साथ इन्हीं सीढ़ियों से होकर वेंकटाचल पहुंचे।

यह श्रीनिवास मंगापुरम तिरुपति रेलवे स्टेशन से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

सुवर्णमुखारी नदी (स्वर्ण मुखी) नदी और अगस्त्येश्वर मंदिर

स्कंदपुराण के दूसरे वैष्णवखंड का श्रीवेंकटाचल माहात्म्य के अध्याय 29 पर आधारित

पांडव द्रौपदी से विवाह करके इंद्रप्रस्थपुर का शासन कर रहे थे। उस समय, एक बार नारद मुनि पांडवों के पास आए और सुंद-उपसुंद नामक भाइयों की कथा सुनाकर इस प्रकार बताया: "आपकी पत्नी द्रौपदी, प्रत्येक वर्ष एक-एक पांडव के साथ रहेगी। जब द्रौपदी अपने पति के

साथ अकेली हो, तो अन्य पांडवों को उनके पास नहीं जाना चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है, तो उसे एक वर्ष तक तीर्थयात्राएँ करने का नियम रखें।" पांडवों ने इस पर सहमति जताई।

एक बार, एक ब्राह्मण की गायों को चोरों ने चुरा लिया। वह ब्राह्मण अर्जुन के पास जाकर प्रार्थना करने लगा कि उसकी गायों को चोरों से बचाएँ। अर्जुन अपने हथियारों के लिए कक्ष में गया, उसी समय धर्मराज द्रौपदी के साथ उस कक्ष में थे। अर्जुन को नारद मुनि द्वारा बताए गए नियम की याद आई। फिर भी, ब्राह्मण की गायों को बचाने के लिए, अर्जुन ने हथियार लेकर चोरों का संहार किया और गायों को ब्राह्मण को वापस कर दिया। इसके बाद, अर्जुन ने धर्मराज से कहा, "नारद मुनि के बताए नियम के अनुसार, मैं एक वर्ष तक तीर्थयात्राएँ करूँगा।"

धर्मराज ने अर्जुन से कहा, "आप ब्राह्मण की गायों को बचाने के लिए कक्ष में आए थे। ब्राह्मणों के लिए किया गया झूठ भी सत्य होता है और पाप भी पुण्य हो जाता है। इसलिए, आपको तीर्थयात्राएँ करने की आवश्यकता नहीं है।" तब अर्जुन ने उत्तर दिया, "आपने ही कहा था कि किसी भी स्थिति में धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिए। कृपया मुझे तीर्थयात्राएँ करने की अनुमति दें।" धर्मराज ने अंततः सहमति दे दी।

अर्जुन ने अपनी तीर्थयात्रा के दौरान सुवर्णमुखारी नदी के तट पर पहुँचकर इस पवित्र नदी को प्रणाम किया, पूजन किया और उसमें स्नान किया। इसके पश्चात उन्होंने दान और धर्म के कार्य संपन्न किए। इसके उपरांत अर्जुन भारद्वाज मुनि के आश्रम पहुँचे, जहाँ उन्होंने मुनि को प्रणाम किया। भारद्वाज मुनि ने अर्जुन और उनके साथ आए लोगों का स्वागत किया और कामधेनु गाय के माध्यम से उन्हें आतिथ्य प्रदान किया। "हे मुनिवर! यह सुवर्णमुखारी नदी कैसे प्रकट हुई? कृपया इस नदी की महिमा बताइए।" तब भारद्वाज मुनि ने अर्जुन को इस प्रकार कथा सुनाई: भरद्वाज मुनि ने इस प्रकार बताया:

एक दिन महर्षि अगस्त्य अपने प्रात:कालीन नित्यकर्म से निवृत्त होकर भगवान शिव की उपासना के लिए जा रहे थे। उसी समय आकाशवाणी हुई: "हे मुनिवर! इस क्षेत्र में कोई नदी नहीं है। यहाँ के निवासियों के कल्याण के लिए एक नदी का प्रबंध करें।"

आकाशवाणी सुनकर महर्षि अगस्त्य ने ब्रह्मा जी की घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी प्रकट हुए और वर माँगने को कहा। महर्षि अगस्त्य ने प्रार्थना की, "हे ब्रह्मदेव! इस स्थान पर किसी नदी का प्रवाह नहीं है। कृपया यहाँ के लोगों के उद्धार के लिए एक नदी प्रदान करें।" ब्रह्मा जी ने गंगा देवी का स्मरण किया। गंगा देवी प्रकट हुईं। ब्रह्मा जी ने गंगा देवी को महर्षि अगस्त्य के साथ इस स्थान पर जाने का आदेश दिया। गंगा देवी ने ब्रह्मा जी के आदेश का पालन किया और महर्षि अगस्त्य के पीछे-पीछे चल पड़ीं। मार्ग में, क्षेत्र के निवासियों ने गंगा देवी का आदरपूर्वक स्वागत किया और उनकी पूजा की। यह देखकर वायु देवता ने कहा: "जिस प्रकार मनुष्यों को सुवर्ण (सोना) प्राप्त होने पर अपार आनंद होता है, उसी प्रकार इस क्षेत्र के लोगों को गंगा का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। अत: इस गंगा का नाम सुवर्णमुखारी होगा।"

इस प्रकार इस नदी का नाम सुवर्णमुखारी पड़ा। सुवर्णमुखारी नदी में मिलने वाली अन्य नदियाँ हैं: महानदी, आग्रापथ, काल्वा नदी। काल्वा नदी वेंकटाचल पर्वत से आती है (यह पवित्र नदी श्रीनिवास मंगापुरम के समीप बहती है। इसी नदी के तट पर महर्षि अगस्त्य का आश्रम और अगस्त्येश्वर शिवालय स्थित हैं।)।

यह सुवर्णमुखारी नदी श्रीनिवास मंगापुरम से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित अगस्त्येश्वर शिवालय के पास है।

8

आलवारों द्वारा रचित वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुतियाँ

आल्वार का अर्थ है, "भगवान के दिव्य गुणों में लीन शुद्ध भक्त आचार्य।" आल्वार बारह हैं। इनमें से दस आल्वारों ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर इस प्रकार स्तुति की:

श्री पोयीगै आल्वार

पोयीगै आल्वार ने कांचीपुरम के पास एक छोटे सरोवर में अवतार लिया। वे महाविष्णु के शंख पांचजन्य के अवतार माने जाते हैं। उन्होंने श्री वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

संपत्ति चाहने वालों के पाप और महाविष्णु की पूजा करने वाले भक्तों के पाप तिरुमला क्षेत्र में पलभर में नष्ट हो जाते हैं। घर, पत्नी, बच्चे, धन-संपत्ति और पद जैसे अस्थायी सुख देने वाले देवता तथा वेदज्ञान से संपन्न ब्राह्मण प्रतिदिन धूप, दीप, सुगंधित फूल, पवित्र जल और नैवेद्य लेकर वेंकटाचल में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा में आते हैं। लाल रंग के होठों से शंख बजाने वाले श्री वेंकटेश्वर स्वामी को तिरुमला क्षेत्र अत्यंत प्रिय है।

महाविष्णु, जो समुद्र के जल के रंग के समान हैं, उन्होंने वराह अवतार लेकर पृथ्वी का उद्धार किया। उन्होंने ही कृष्ण रूप में अवतरित होकर गोवर्धन पर्वत उठाया, गोपों की रक्षा की और कंस का वध किया। वही महाविष्णु आज तिरुमला में भक्तों को दर्शन देकर अनुग्रह कर रहे हैं। क्षीरसागर में शयन करने वाले विष्णु ने नृसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का वध किया। वही अब तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

वैकुंठ में निवास करने वाले नारायण की महिमा को हजारों युगों तक विचार करने पर भी कोई समझ नहीं सकता। जिन्होंने पृथ्वी पर अनेक अवतार लिए, वही नारायण अब वेंकटाचल में निवास कर रहे हैं। जो महाविष्णु सम्पूर्ण विश्व को मापने वाले पुण्यमयी श्लोक के रूप में प्रतिष्ठित हैं, वे तिरुमला क्षेत्र में विराजमान हैं, जो मुक्ति प्रदान करता है। जो भक्त श्रद्धा से उनकी सेवा करते हैं, उन्हें अवश्य ही मुक्ति की प्राप्ति होती है।

तिरुमला में खड़े होकर श्रीनिवास के ध्यान से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। सुन्दर स्त्रियाँ द्वादशी के दिन फूलों के गहने पहनकर, धूप, दीप और आरती के साथ स्वामी की पूजा करती हैं। उनकी अगरबत्तियों का धुआँ आकाश में तारों को छिपा देता है। पहले मायावी स्वर्णमृग का रूप धारण करने वाले मारीच का वध करने वाले श्रीराम ने जिस पर्वत पर निवास किया था, वही तिरुमला है।

हे मन! पुरुषोत्तम महाविष्णु हमें हर काल में रक्षा करने के लिए सदा तत्पर हैं। नारायण भक्तों के हृदय में निवास करते हैं। जो क्षीरसागर में शयन करते हैं, वही अब तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वही वेंकटेश्वर स्वामी मेरे हृदय में सदा निवास करते हैं, यह जान लो!

श्री पूदत्त आल्वार

पूदत्त आल्वार तमिलनाडु के महा बलिपुरम के पास माधवी नामक फूल में अवतरित हुए। वे महाविष्णु के आयुधों में कौमोदकी (गदा) के अवतार माने जाते हैं। पूदत्त आल्वार ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

देवताओं और वैकुंठ लोक के भक्तों द्वारा प्रशंसित गुणों से संपन्न नारायण ने धर्म की रक्षा के लिए कई अवतार लिए। उन विभिन्न कालों में जो लोग उन्हें नहीं देख सके, उनके लिए श्री वेंकटेश्वर स्वामी तिरुमला

में वास कर अपने भक्तों के कष्टों को दूर करते हुए उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। घने बाँस के जंगलों और अन्य वृक्षों से घिरे पहाड़ी क्षेत्र तिरुमला का क्षेत्र अत्यंत शीतल और शांत है। महर्षियों और देवताओं द्वारा देवदेव के रूप में पूजे जाने वाले स्वामी, जिन्होंने क्षीरसागर में शयन किया, कृष्ण रूप में उन्होंने - राक्षस केशी को मार डाला जो घोड़े के रूप में आया था, वही श्री वेंकटेश्वर स्वामी आज तिरुमला में अपने भक्तों को दर्शन दे रहे हैं। बाँस के वृक्षों से भरे तिरुमला में स्थित वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों में मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ। उन स्वामी की लीलाओं का गान मेरी जीभ सदैव करती रहती है।

तिरुमला में निवास करने वाले, देवताओं की पूजा को प्राप्त करने वाले महाविष्णु के चरणों की सेवा करने वाले भक्तों को धन मिलने पर प्रसन्नता और धन खोने पर दुःख नहीं होता। नीलमणि जैसी - आभा वाले, जो दर्शन करने वाले के दुःख को दूर करते हैं, करुणा के अमृत से भरे हाथों वाले, भक्तवत्सल महाविष्णु तिरुमला में स्थित हैं। अनेक तीर्थों से युक्त तिरुमला में स्थित वेंकटेश्वर स्वामी के ध्यान में भक्त स्वयं को भूल जाते हैं। वेंकटेश्वर स्वामी का तिरुमला में स्थित होना भक्तों के लिए अत्यंत प्रिय है।

तिरुमला में रहने वाले बंदर प्रातः काल उठकर कमल फूलों से भरी झीलों में स्नान करते हैं, फिर ताजे सुगंधित फूलों को लेकर वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित कर नमस्कार करते हैं। हे हृदय! तुम भी इस प्रकार जागृत हो जाओ और इस पृथ्वी पर आभूषण के रूप में स्थित तिरुमला में अवस्थित वेंकटेश्वर स्वामी के नामों का जप करते हुए उनके चरणों को प्राप्त करने की इच्छा से वेंकटेश्वर स्वामी को फूल अर्पित करो। तिरुमला पर्वतों में एक हाथी बाँस के वृक्ष को काटकर उसे शहद में डुबोकर अपनी प्रिय मादा हथिनियों को देता है। इस प्रकार से तिरुमला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी अवस्थित हैं।

श्री पेय आल्वार

पेय आल्वार का जन्म चेन्नई के मैलापुर में हुआ था। वह महाविष्णु के आयुधों में नंदक नामक खड्ग के अवतार थे। पेय आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"चार वेदों के साथ-साथ साधारण भक्त को भी दर्शन देने वाले तिरुमला के वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों को देवलोक के निवासी भी अपने मुकुटों सहित साष्टांग प्रणाम करते हैं। जो हृदय में पुरुषोत्तम वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों का ध्यान करते हैं, उनके भीतर युवतियों को आलिंगन करने की कामना समाप्त हो जाती है, और उनके लिए शेषाद्रि पर्वत पर स्थित वेंकटेश्वर स्वामी को प्राप्त करना सरल हो जाता है। तुलसी मालाएँ धारण करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी के निवास स्थान - स्वामी का सदा ध्यान करने वाला मेरा हृदय और पवित्र दिव्य स्थल तिरुमला क्षेत्र। पूर्व काल में महाविष्णु ने वराह रूप धारण करके इस पूरी पृथ्वी को अपनी दांतों से उठाया। वही महाविष्णु अब तिरुमला पहाड़ी पर प्रकट हुए हैं। एक शुद्ध शिला पर बैठी मादा बंदर, आकाश में चंद्रमा को देखती है और नर बंदर से कहती है, "वह चंद्रमा मुझे लाकर दो!" ऐसी ही जगह है तिरुमला क्षेत्र।

पूर्व काल में वे वामन रूप में अवतार लेकर बलि चक्रवर्ती के पास गए और अपनी बुद्धिमत्ता से उनसे इस पृथ्वी को दान में लिया था, वही महाविष्णु अब तिरुमला में स्थित हैं। तिरुमला के स्वच्छ सरोवर में एक नर बंदर आकर अपने प्रतिबिंब को देखता है और सोचता है कि वहाँ कोई दूसरा बंदर है। डर के कारण वह पलायन करता है और बेल का फल तोड़ने के लिए बेल के पेड़ पर चढ़ने का प्रयास करता है। ये सभी दृश्य प्रतिदिन तिरुमला में घटित होते हैं। पूर्व काल में, बेल के फलों को गिराने के लिए वत्सासुर को अपनी छड़ी से मारकर नष्ट करने वाले श्रीकृष्ण का पवित्र क्षेत्र तिरुमला है।

जब भी किसी पहाड़ी की चर्चा होती है, मेरी बेटी तुरंत तिरुमला पहाड़ी की प्रशंसा करती है। सुरभि के फूलों को एक हाथी, देवताओं के देवता वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित करता है। तिरुमला को छोड़कर अन्य कोई स्थान न जानने वाले कुरवा जाति के युवा अपनी कलाइयों में चूड़ियाँ पहनकर वेंकटेश्वर स्वामी के लिए नृत्य करते हैं। महाविष्णु ने श्रीकृष्ण रूप धारण करके एक घड़ा सिर पर रखकर नृत्य किया। वही महाविष्णु अब तिरुमला में निवास कर रहे हैं। वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों का आश्रय लेकर उनकी स्तुति करना ही हमारी जिह्वा का उद्देश्य है। तिरुमला बहुत विशाल दिव्य स्थान है और अनेक शिखरों के साथ प्रसिद्ध है।

श्री तिरुमलिशै आल्वार

तिरुमलिशै आल्वार का जन्म चेन्नई के पास तिरुमलिशै गाँव में हुआ था। वह महाविष्णु के आयुधों में सुदर्शन चक्र के अवतार थे। एक बार तिरुमलिशै आल्वार को तिलक लगाने के लिए आवश्यक तिलक नहीं मिला। इधर-उधर ढूंढने के बाद भी उन्हें तिलक नहीं मिला। वेंकटेश्वर स्वामी ने स्वप्न में तिरुमलिशै आल्वार को एक स्थान बताया और कहा कि वहाँ जाने पर तिलक मिलेगा। तिरुमलिशै आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी के निर्देशानुसार सुबह वहाँ जाकर तिलक प्राप्त किया। तिरुमलिशै आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"मैं सदा तिरुगोष्टि में प्रकट हुए श्रीमन्नारायण की पूजा करना चाहता हूँ और इससे शुभफल प्राप्त करने की कामना करता हूँ। श्रीमन्नारायण, जो मेरा परम लक्ष्य हैं, वैकुंठ को छोड़कर तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट हुए। मैं उनकी पूजा करने में कभी लापरवाही नहीं बरतूँगा! वह स्वामी मुझे रोगों से बचाकर सभी शुभ फल प्रदान करके आशीर्वाद देते हैं। मैं तिरुमला निवासी वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन की प्रबल इच्छा के साथ प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे उनके दर्शन हों।

बरसात के मौसम में तिरुमला के जलप्रपातों में जल प्रवाह अधिक होता है और विभिन्न बहुमूल्य रत्न उस पानी में बहते हैं। उन रत्नों को अग्नि समझकर हाथियों के झुंड भयभीत होकर खड़े हो जाते हैं। रत्नों की चमक को बिजली समझकर सांप अपने बिलों में छिप जाते हैं। ऐसी तिरुमला में प्रकट हुए वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन की मैं इच्छा रखता हूँ। जब मैंने तिरुमला की स्तुति की, तब मुझे वैकुंठपद प्राप्त हुआ, यह मैंने समझा। इस रहस्य को जानकर, मैं सदा पवित्र तिरुमला का ध्यान करता हूँ। वेदों में जिनकी स्तुति की गई है, उन वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों में मैं सदा के लिए बंधा हूँ।

श्रवण नक्षत्र के दिन भक्तों द्वारा की जा रही स्तुतियों की ध्वनि तिरुमला में गूंजती है। हे परमधाम, जो तिरुमला में निवास करते हो! भले ही आप मेरे हृदय में हो, फिर भी मैं तिरुमला आकर आपकी पूजा करना चाहता हूँ। हे मनुष्यों! यदि आप अपने पापों को मिटाना चाहते हैं, तो तिरुमला, जो आकाश को छूने वाले शिखरों से घिरा है और चौदह लोकों में प्रसिद्ध है, वहाँ जाएँ और तिरुमला क्षेत्र से प्रार्थना करें। तिरुमला क्षेत्र हमारे शत्रुओं जैसे पापों को मिटा सकता है। कमल से उत्पन्न ब्रह्मा और तीन आंखों वाले शिव तिरुमला में प्रकट हुए वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों की प्रतिदिन पूजा करते हैं। सदा यौवन में रहने वाले नारायण तिरुमला में खड़े होकर सबको आशीर्वाद देते हैं। जैसे कटे हुए पेड़ हिलते नहीं हैं, वैसे ही भक्त वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं।" शीतल जलप्रवाह से युक्त तिरुमला देवताओं और भूतलवासियों के लिए एक अत्यंत बहुमूल्य स्थान है।

तिरुमला क्षेत्र यालि, हाथियों, सिंहों जैसे जानवरों, सोने की खानों , माणिक्यों, मोतियों , सुवासित पुष्पों, कोंगल, बंदरों, शिकारियों और आकाशीय शिखरों से युक्त स्थान है। श्रेष्ठतम नीले नीलमणि जैसे चमकते वेंकटेश्वर स्वामी इस तिरुमला में निवास करते हैं। भक्त बिना किसी भौतिक इच्छा के तिरुमला में आते हैं और श्रद्धा से वेंकटेश्वर स्वामी की

पूजा करते हैं। पवित्र तिरुमला क्षेत्र अपने दर्शन मात्र से ही शारीरिक कष्टों और भयानक पापों को समाप्त कर देता है। देवताओं की रक्षा करने के लिए श्रीमन्नारायण ने चक्र आयुध धारण कर तिरुमला में निवास किया है। कुछ लोग तिरुमला आकर, वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा करते हुए, मृत्यु के बाद मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। इन भक्तों से श्रेष्ठ वे होते हैं, जो भगवान की इच्छाओं को समझकर, भक्ति से वेंकटेश्वर स्वामी का ध्यान करते हैं और भक्तों की सेवा करते हुए उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग ही सत्य में सुखी रहते हैं।

श्री नम्म आल्वार

नम्म आल्वार तमिलनाडु राज्य के तिरुनलवेली जिले के आल्वार तिरुनगरी में अवतीर्ण हुए थे। वे वैकुंठ के विष्वक्सेन, एक बड़े विष्णुभक्त के रूप में नम्म आल्वार के नाम से प्रसिद्ध हुए। नम्म आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"हे, सारथी! हमारे रथ को तेजी से चलाओ। तुम पूछते हो कि हम कहाँ जा रहे हैं? ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ। हमें पवित्र तिरुमला क्षेत्र में जाना है। तिरुमला में वैकुंठनाथ भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में विराजमान हैं। ऐसी पवित्र भूमि, जहाँ सफ़ेद मोतियों की माला की तरह दिखने वाली कई जलधाराएँ बहती हैं, वहाँ हमारे रथ को तेजी से ले चलो। मेरी बेटी के बाल अभी भी छोटे हैं। उसे वस्त्रों को सही तरीके से पहनना भी नहीं आता है। वह छोटे बच्चों की तरह बोलती है और अपनी नजरें स्थिर रखे बिना इधर-उधर घूमती रहती है। इस तरह से छोटी बच्ची होने के बावजूद वह वेंकटेश्वर स्वामी की 'तिरुवेंगडम्' (तिरुमला) नाम को स्पष्ट और गंभीरता से उच्चारित करती है।

"तिरुमला में विराजमान वेंकटेश्वर स्वामी, जो भक्तों के निवासस्थान है, वे हम सभी के जीवन का आधार हैं। तिरुमला में प्रकट हुए वे वेंकटेश्वर स्वामी को फूल बहुत पसंद हैं। हे पिता! ठंडी तिरुमला में

विराजित मेरे स्वामी! लंका राज्य को जीतने वाले पराक्रमी! सात महान वृक्षों को चीरने वाले धनुषधारी! तिरुमला में तुलसी की मालाओं को धारण करने वाले मेरे प्रिय स्वामी! भूत, भविष्य और वर्तमान में (घटित, घटने वाले और वर्तमान काल में) रक्षा करने वाले आपद्बांधव! तिरुमला में विराजित परमात्मा! आपको नमस्कार हो!" इस प्रकार की प्रार्थना करना हमारा कर्तव्य है। इस प्रकार जो भी प्रार्थना करते हैं, उनके पाप और पाप करने का कारण बनने वाले कर्म बंधन सभी आग में जले हुए कपास की तरह जलकर नष्ट हो जाते हैं।

देवताओं और देवताओं के नायक विष्वक्सेन, सुगंधित फूल, पवित्र जल और चमकते दीपक लेकर वेंकटेश्वर स्वामी को नमन करते हुए अपने सिर झुकाते हैं। जहाँ वेंकटेश्वर स्वामी प्रकट हुए वह तिरुमला क्षेत्र, हमें मुक्ति प्रदान कर सकता है। जो गोवर्धन पर्वत उठाकर बारिश से गोकुलवासियों और गायों को बचाते हैं और बलि चक्रवर्ती से तीन पग में धरती प्राप्त करते हैं, वही नारायण अपनी इच्छा से तिरुमला में निवास कर रहे हैं। तिरुमला शिखरों को नमन करने से हमारे पाप नष्ट हो जाते हैं। तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों को हृदय में स्थान देकर, उनका मुख से स्तुति करने वाले को वे स्वामी जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त कर देते हैं।

आदिशेष को शैय्या बनाकर विश्राम करने वाले जगद् रक्षक, वैकुंठपति, तिरुमला में निवास करते हैं। जीवन समाप्त होने से पहले, शक्ति क्षीण होने से पहले, तिरुमला जाएँ और पद्मनाभ वेंकटेश्वर स्वामी को प्रणाम करें। तमिलनाडु के उत्तर में स्थित तिरुमला नामक पवित्र क्षेत्र में महाविष्णु प्रकट हुए हैं। भक्ति से अनभिज्ञ मूर्ख चाहे मुझे पागल कहें, मैं बिना परवाह किए सदा सर्वत्र वेंकटेश्वर स्वामी के 108 नामों का जप करते हुए भ्रमण करता रहता हूँ।

वेंकटेश्वर स्वामी के नाम का उच्चारण करते हुए, नाचते-गाते हुए, जप और स्तुति करते हुए भक्तों की सेवा स्वयं देवता करते हैं। भले ही आप

मुझसे द्वेष करें, भले ही मेरी बातें आपको अप्रिय लगें, मेरी बात सुनें। जब तिरुमला में प्रकट हुए मेरे पिता, देवाधिदेव हैं, तो मैं किसी और को क्यों पूजूँगा ? वैकुंठ में स्थित नारायण तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट होकर हमारे पापों का समूल नाश करके हमें पुनर्जन्म से मुक्त कर रहे हैं। जब तिरुमला पृथ्वी पर है, तो मैं अन्यत्र क्यों जाऊँ ? देवता भी तिरुमला में आकर अपनी इच्छाएँ पूरी करते हैं।

श्री कुलशेखर आल्वार

कुलशेखर आल्वार का जन्म केरल के तिरुवंजीक्कुलम नामक दिव्यदेश में हुआ था। वह महाविष्णु के गले की कंठी 'कौस्तुभमणि' के अवतार थे। कुलशेखर आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"भूदेवी से विवाह करने के लिए सात सांड को हराने वाले श्रीकृष्ण की सदा सेवा करने की मेरी इच्छा है। मैं धन-संपत्ति की कामना नहीं करता, जो शरीर में मांसपेशियों को बढ़ाने में सहायक होती है। अपने बाएँ हाथ में शंख धारण करनेवाले वेंकटेश्वर स्वामी, जहाँ विराजित है वह तिरुमला के पुष्करिणि के किनारे रहने वाले एक बगुले के रूप में मैं जन्म लेना चाहता हूँ। नित्य यौवन से युक्त रम्भा आदि देवकन्याएँ मेरे चारों ओर नृत्य करते हुए इन्द्रलोक में सुख भोगने के अवसर से संपन्न हो सकती हैं, फिर भी मैं ऐसे भौतिक सुखों की कामना नहीं करता। यदि मुझे पृथ्वी पर सम्राट बनने का अवसर मिलता है, तो भी मैं उसे स्वीकार नहीं करना चाहता। मैं तो सुगंधित पुष्पों और मधु से भरे वन वाले तिरुमला के सरोवरों में मछली के रूप में जन्म लेना चाहता हूँ।

वैकुंठ के समान तिरुमला में भक्तों के साथ शिव, ब्रह्मा और इंद्रादि देवता, स्वामी के दर्शन के लिए प्रवेश करने की कोशिश कर रहे हैं। मैं तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के सेवक के रूप में रहना चाहता हूँ, जो तांबूल को थूकने वाले सुनहरे पात्र को पकड़ता है। जिस प्रकार

देवता क्षीर सागर में शयन करने वाले अनंत पद्मनाभ की स्तुति करते हैं, तिरुमला के मधुमक्खियों के झुंड से निकलने वाली ध्वनि भी उसी प्रकार वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति करती प्रतीत होती है। ऐसे तिरुमला में मैं चंपक वृक्ष के रूप में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता हूँ।

"मैं दर्शकों को भयभीत करने वाले हाथी पर सवारी करते हुए प्रशंसा पाने की, रत्नाभूषणों की, या इस भू-लोक पर सम्राट बनने की इच्छा नहीं रखता। मैं केवल वेंकटेश्वर स्वामी के निवास स्थान तिरुमला में एक तुच्छ पेड़ के रूप में रहना चाहता हूँ। मैं बिजली जैसी पतली कमर वाली रंभा, उर्वशी जैसी अप्सराओं के नृत्य देखने या उनके संग रहने की इच्छा नहीं रखता। मैं तिरुमला में एक शिखर बनना चाहता हूँ।

"मुझे चंद्रमा जैसे सफ़ेद छत्र के नीचे बिराजते और सबकी प्रशंसा पाने वाले सम्राट बनने की इच्छा नहीं है। सुगंधित और सुंदर फूलों से भरे तिरुमला में एक सरोवर के रूप में जन्म लेने की मेरी इच्छा है। जब चंद्रमौली शिव, ब्रह्मा और इंद्र अपनी पदवियों के अनुसार यज्ञ करते हैं तब तिरुमला में स्थित वेदों द्वारा महिमा मंडित श्री वेंकटेश्वर स्वामी उनकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं। मैं पवित्र तिरुमला के क्षेत्र तक जानेवाला वह मार्ग बनना चाहता हूँ जहाँ भक्तों की चरणधूलि सदा मुझ पर गिरे। हे अनंत, महापुरुष, तिरुमला वेंकटेश्वर! मुनि, देवता और भक्त नित्य आपके दर्शन करते हैं। मैं गर्भगृह की देहलीज बनकर नित्य आपके दर्शन करना चाहता हूँ। चौदह लोकों पर शासन करने का अवसर और उर्वशी का आलिंगन प्राप्त करने का अवसर होते हुए भी मुझे उनकी इच्छा नहीं है। मैं तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट हुए और लाल रत्न जैसे होठों वाले नारायण के स्थान पर एक वस्तु के रूप में जन्म लेना चाहता हूँ।

श्री पेरिया आल्वार

पेरिया आल्वार का जन्म श्रीविल्लिपुत्तूर में हुआ था। वह गरुड का अंश थे। पेरिया आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"सुंदर शीतल किरणों वाले चंद्रमा! तेरे किरणों का प्रकाश दसों दिशाओं में फैलता है। श्री कृष्ण के शरीर की कान्ति के कारण तेरी कान्ति मद्धिम पड़ गई है। पर्वतों से आभायुक्त तिरुमला में श्रीनिवास ने अपनी दोनों बाहों को ऊपर उठाकर तुझे आमंत्रित किया है। छोटे बालक श्री कृष्ण के हाथों में दर्द न हो, इससे पहले ही दौड़कर आ!

"तिरुमला में सुगंधित फूलों से युक्त श्रीनिवास, मैंने तुम्हारे लिए छाता और चप्पलें तैयार की हैं। तुम उन्हें लिए बिना बछड़ों को चराने जंगल चले गए। भयानक जंगल में बछड़ों के पीछे दौड़ने के कारण आपके कोमल पैर भी लाल हो गए हैं। तुम पतले हो गए हो, मेरे प्यारे बालक!

"आकाश को छूने वाले शिखरों से सुशोभित तिरुमला में निवास करने वाले श्रीवेंकटेश्वर, जो समस्त लोकों के सभी जीवों के उद्धार के लिए अवतरित हुए, यशोदा माता द्वारा बांधे गए दामोदर, भक्तों के दोषों को क्षमा कर उन्हें रक्षित करने वाले रक्षक, मैंने अपनी आत्मा और शरीर में आपका चक्र अंकित कर लिया है और अब आपकी कृपा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

श्री तिरुप्पाण आल्वार

तिरुप्पाण आल्वार का जन्म श्रीरंग क्षेत्र के पास हुआ था। वह नारायण के श्रीवत्स अंश से अवतरित हुए थे। तिरुप्पाण आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

"अत्यंत पवित्र ऐसे विश्व के आदिदेव, सुगंधित तिरुमला क्षेत्र में वेंकटेश्वर के रूप में बिना फल की इच्छा के करुणा रूपी वर्षा कर रहे हैं। वह भगवान वेंकटेश्वर मुझे अपने दासों का दास बनाने के लिए यहाँ पर विराजमान हैं।

तिरुमला में बंदर हमेशा एक पेड़ की डाल से दूसरी पेड़ की डाल पर कूदते रहते हैं। देवता तिरुमला में आकर सुगंधित फूलों से वेंकटेश्वर

स्वामी की पूजा करते हैं। वही स्वामी श्रीरंगम में आदिशेष पर शयन करते हैं।”

श्री तिरुमंगै आल्वार

तिरुमंगै आल्वार का जन्म तमिलनाडु के तिरुक्कुरै के निकट आलिनादर नामक ग्राम में हुआ था। वह नारायण के शारंग नामक धनुष के अवतार थे। तिरुमंगै आल्वार ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

“विशाल क्षीरसागर में शयन करने वाले महाविष्णु ने श्रीकृष्ण रूप में अवतार लेकर वृक्ष रूपी राक्षस कुरुंदा और बकासुर नामक बगुले का वध किया, और अब लाल मछलियों से भरे सरोवरों वाले तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में विराजमान हैं। अपने नाम का उच्चारण करने वालों को मुक्ति का आशीर्वाद देने वाले श्रीमन्नारायण का निवास स्थान पवित्र तिरुमला क्षेत्र है। इसलिए हे मन! तिरुमला पहुँचकर हरिनाम का जप करो। जिन माता-पिता ने मुझे जन्म दिया और पाला, उन्हीं को मैंने अपनी गति माना। सुंदर पत्नी को ही अपना सर्वस्व और संतान को अपना सहारा समझा। इस प्रकार, सांसारिक बंधनों में फँसकर दुखों का अनुभव किया। कुत्ते जैसा नीच जन्म धारण करने के बाद, अब मैंने समझ लिया है कि केवल आप ही शाश्वत हैं। इसलिए, मैं आपके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। सुगंधित पुष्पों और बाँस की झाड़ियों से सुसज्जित तिरुमला में विराजमान श्री वेंकटेश्वर स्वामी! मुझे अपना दास मानकर कृपा कीजिए।

“हे तिरुमला में प्रकट हुए वेंकटेश्वर स्वामी! हिरनी जैसे सुंदर नेत्रों वाली स्त्रियों के सौंदर्य के प्रति आसक्त होकर मैंने अनेकों भयानक पाप किए हैं, जिनके कारण मुझे नरक में जाना होगा। मैंने अपने पापों को समझकर पश्चाताप के साथ आपकी शरण ली है। मुझे अपना दास मानकर अपनी सेवा में स्थान दो। गर्जना करते मेघों के समूहों के कारण शीतल तिरुमला पर्वतों में अवतरित वेंकटेश्वर स्वामी! मैंने पाप कर्म करते

हुए, बिना किसी उद्देश्य के कई लोगों की हत्या की है। भिक्षा माँगने आए लोगों पर दया दिखाए बिना निर्दयता से व्यवहार किया है और उन्हें अपमानित किया है। हे स्वामी! आपके नाम को सुनते ही मैं आपकी शरण में आया हूँ। हे वेंकटेश्वर स्वामी! मुझे अपना दास मानकर अपनी सेवा में नियोजित कीजिए। इस संसार की सभी जातियों में मैंने जन्म लिया है। विभिन्न आकारों और रूपों के साथ अनेक जन्म धारण किए हैं। किसी भी जन्म में मैंने पुण्य कर्म नहीं किया। मैं जीवन का अर्थ नहीं जान पाया और अब मैं जन्म-मरण के चक्र में फँसकर थक गया हूँ।

"पृथ्वी पर तिरुमला में प्रकट हुए तिरुमलेश्वरा, इस जन्म में मैंने आपके चरणों की शरण ली है। मुझे अपना दास मानकर कृपा करो। अनेक पाप कर्म करने के बाद, अब इस बुढ़ापे में सही दिशा न जानकर, मैं आपके चरण कमलों की शरण लेने आया हूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि आपकी कैसे स्तुति करूं। ऊँचे शिखरों वाले तिरुमला में निवास करने वाले श्रीवेंकटेश्वर, मेरे पिता बनकर मेरे पापों को मिटाकर, मुझे रक्षित कर अपनी सेवा में स्थान दो। धरती, जल, अग्नि, वायु और आकाश के पंचतत्त्वों से बने इस शरीर को रोग पीड़ा दे रहे हैं, और मुझे आपके पास आने का मार्ग नहीं दिख रहा है। हे वेंकटेश्वर स्वामी! मुझ से हर प्रकार का संबंध रखने वाले परमधाम! मैंने आपके चरणों की शरण ली है। कृपा करके मुझे अपना दास बनाओ!"

"बचपन में मैंने अज्ञानवश कई पाप कर्म किए। युवावस्था में स्त्रियों का दास बनकर उन्हें संतुष्ट करने के लिए अनुचित कार्य किए। अब रोगों और गरीबी से मैं कठिनाइयों का सामना कर रहा हूँ। मैंने पहले कई जन्म लेकर सुखों का अनुभव किया, लेकिन उन जन्मों में किए गए पाप कर्मों के कारण मुझे बार-बार जन्म लेना पड़ा। तिरुमला में स्थित वेंकटेश्वर स्वामी! इस जन्म में मैं आपकी करुणा और कृपा प्राप्त करने की आशा से व्रत का पालन कर रहा हूँ। लेकिन इसमें मेरा मन स्थिर नहीं हो पा रहा है। हे परमधाम! मुझे जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त करके अपनी सेवा में

स्थान दो! चाहे कितनी भी तपस्या की हो, हम इस मानव जन्म से मुक्त नहीं हो सकते, लेकिन समुद्र जैसी करुणा वाले वेंकटेश्वर स्वामी, जो अपनी शरण में आता है आप उन्हें अपने धाम ले जाते हैं और इस संसार के बंधनों से मुक्त कर देते हैं।"

श्री गोदा देवी (आंडाल)

गोदा देवी का प्राकट्य श्रीविल्लिपुत्तूर में विष्णुचित्त के तुलसी बगीचे में हुआ था। वह भूदेवी का अंश थीं। गोदा देवी ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की:

हे कामदेव! मैंने आपकी तीनों समयों में सुगंधित पुष्पों से पूजा की है। हे कामदेव! इससे पहले कि मैं तुम्हें क्रोधपूर्वक दोष दूँ, वह जो पुष्पों से अलंकृत है, गोविंद का नाम धारण करता है, अद्भुत कार्य करने वाला है, और वैकुंठ को छोड़कर तिरुमला में चक्र धारण कर समस्त जीवों को दर्शन देता है, वह वेंकटेश्वर स्वामी दौड़कर आए और मुझसे विवाह कर मुझे आलिंगन प्रदान करने के लिए प्रेरित करे।

हे चंपक पुष्पों के मधु का पान कर मधुर स्वर में गान गाने वाली कोयल! वह वैकुंठवासी, जिसने अपने हाथ में श्वेत पाञ्चजन्य शंख धारण किया है, वह अपनी दिव्य आकृति के साथ तिरुमला में खड़ा होकर दर्शन दे रहा है। उसने मेरे हृदय में प्रवेश कर मुझे वेदना से पीड़ित कर दिया है और मेरी इस वेदना को आनंद के रूप में देख रहा है। हे कोयल! अपने मधुर स्वर से तिरुमलावासी वेंकटेश्वर स्वामी का आह्वान कर, उन्हें मेरे पास आने के लिए बुला।

सघन काले बादलों! जो आकाश में कुम्भ जैसे छा गए हो। क्या तिरुमला के पवित्र झरनों से गिरते जलप्रपातों के पास लक्ष्मीनाथ महाविष्णु आपके साथ हैं? वेंकटेश्वर स्वामी के विरह में मेरे आँसू वर्षा की धाराओं की तरह बह रहे हैं। क्या मुझे इस प्रकार कष्ट देना लक्ष्मीनाथ के लिए उचित है?

बरसात के मौसम में तिरुमला में शीतल वर्षा करने वाले हे काले बादलों! युद्ध में विजय प्राप्त करने वाले नारायण के चरणों का मैं हमेशा स्मरण करती हूँ। जैसे बरसात के मौसम में आक के पत्ते गिर जाते हैं, वैसे ही मैं वेंकटेश्वर स्वामी के विरह में कुम्हला रही हूँ। इस लंबी जीवन यात्रा में मुझे एक दिन भी वेंकटेश्वर ने आकर कुछ अच्छे शब्द कहे हैं क्या? ऊँचे शिखरों से सुशोभित तिरुमला में निवास करने वाले हाथियों की गर्जना जैसी गर्जना करने वाले बादलों! हजार सिरों वाले आदिशेष पर शयन करने वाले महाविष्णु मुझे एक अच्छा शब्द कह सकते हैं न! क्या वह स्वामी एक मासूम स्त्री को, जो उनके स्मरण में कुम्हला रही है, बचा सकते हैं?

9

तिरुमला में शुद्ध भक्तों की लीलाएँ

श्री यामुनाचार्य

यामुनाचार्य का जन्म 916 ईस्वी में तमिलनाडु के मदुरै में श्रीवैष्णव परम्परा के नाथमुनि के पुत्र ईश्वरमुनि के घर हुआ था। नाथमुनि कुछ वर्षों तक अपने पुत्र ईश्वरमुनि और पुत्रवधू के साथ वृंदावन में यमुना नदी के तट पर निवास करते रहे। यमुना तट से घर लौटने के बाद, ईश्वरमुनि के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। नाथमुनि ने यमुना तट पर निवास की स्मृति में अपने पौत्र का नाम "यामुना" रखा।

यामुनाचार्य ने एक प्रवचन में अपने शिष्यों से कहा, "तिरुमला में श्रीनिवास भगवान को विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाने पर नम्मालवार अत्यंत प्रसन्न होते हैं। 'परांकुश दिव्यशूर' कहे जाने वाले नम्मालवार के अनुसार, यह श्रीनिवास भगवान को भक्त द्वारा प्रदान की जाने वाली सबसे उत्कृष्ट सेवा है। पहले, मैं तिरुमला गया था और कुछ समय तक श्रीनिवास भगवान के लिए पुष्प सेवा की थी। लेकिन ठंडे वातावरण और कीड़ों के प्रकोप को सहन न कर पाने के कारण, मुझे तिरुमला से लौटना पड़ा। इस प्रकार मुझे श्रीनिवास भगवान की सेवा करने का अवसर केवल थोड़े समय के लिए मिला। इसलिए, यदि कोई तिरुमला जाकर श्रीनिवास भगवान की सेवा करते हुए पुष्प सेवा करता है, तो यह नम्मालवार की शिक्षाओं का सम्मान करने के समान होगा।"

थोड़ी देर बाद, तिरुमल नंबि नामक एक शिष्य उठकर खड़ा हुआ और यामुनाचार्य से कहा, "गुरुदेव! जैसा आपने बताया है, मैं श्रीनिवास भगवान की सेवा करने जाऊँगा।" यह सुनकर यामुनाचार्य अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तिरुमल नंबि को गले लगाकर कहा, "श्रीनिवास भगवान की सेवा करो और उस भगवान की कृपा प्राप्त करो।"

श्री तिरुमल नंबि

वेंकटेश्वर स्वामी के शुद्ध भक्तों में से एक तिरुमल नंबि थे। तिरुमल नंबि का जन्म 973 ईस्वी में हुआ था। इन्हें श्रीशैलपूर्ण भी कहा जाता है। तिरुमल नंबि के गुरु यामुनाचार्य थे। वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए यामुनाचार्य ने तिरुमल नंबि को वेंकटाचलम (तिरुमला) भेजा। तिरुमल नंबि की बहन कांति मति देवी थीं, जिनके पुत्र के रूप में रामानुजाचार्य का जन्म हुआ। तिरुमल नंबि ने रामानुजाचार्य की जन्म कुंडली देखकर उन्हें 'इलै आळवार' नाम दिया।

तिरुमल नंबि प्रतिदिन पापनाशन से जल लाकर वेंकटेश्वर स्वामी का अभिषेक करते और फूलों से उन्हें सजाते थे। एक दिन जब तिरुमल नंबि पापनाशन से जल ला रहे थे, तो वेंकटेश्वर स्वामी बालक के रूप में उनके सामने आए और कहा, "दादा! दादा! मुझे प्यास लगी है। कृपया मुझे पानी दो।" तिरुमल नंबि ने उत्तर दिया, "यह जल पापनाशन से वेंकटेश्वर स्वामी के लिए लाया गया है। यदि मैं यह जल तुम्हें दूँ तो यह अपवित्र हो जाएगा, और जब तक मैं वापस जाकर जल लाऊँगा, स्वामी के अभिषेक में देर हो जाएगी। इसलिए तुम पापनाशन जाकर जल पी लो।" यह कहकर वह आगे बढ़ गए। बालक के रूप में स्वामी ने पीछे से बाण मारकर मटके में छेद किया और जल पी लिया। इस घटना से दु:खी तिरुमल नंबि के सामने बालक ने पर्वत पर बाण चलाकर जल प्रकट किया। फिर बालक ने तिरुमल नंबि से कहा, "दादा! दादा! अब तुम्हें पापनाशन से जल लाने की आवश्यकता नहीं है। इस पर्वत से आने वाले जल को वेंकटेश्वर स्वामी के लिए ले जाओ।" यह कहकर बालक अदृश्य हो गया। तिरुमल नंबि ने समझ लिया कि यह बालक रूप में वेंकटेश्वर स्वामी थे। तब से तिरुमल नंबि उसी जल का उपयोग करने लगे। चूँकि वह जल पर्वत से आया था, इसे "आकाशगंगा" नाम दिया गया। आज भी तिरुमल नंबि के चांदी के कलशों में हाथी पर जल लाने का कार्य होता हैं। आकाशगंगा के प्रकट होने के दिन, वेंकटेश्वर स्वामी

की उत्सव मूर्ति को आकाशगंगा ले जाया जाता है और वहीं उत्सव मनाया जाता है।

रामानुजाचार्य एक बार एक वर्ष तक तिरुपति के कपिलतीर्थ में रहे। उस समय, तिरुमल नंबि प्रतिदिन सुबह वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा करने के बाद तिरुमला से तिरुपति आते और रामानुजाचार्य को रामायण सुनाते। शाम तक वे फिर तिरुमला लौट जाते। लेकिन, दोपहर में वेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन न कर पाने के कारण तिरुमल नंबि को दु:ख होता था।

इस बात को समझते हुए, वेंकटेश्वर स्वामी ने अलीपीरी में पर्वत पर चढ़ने वाले सीढ़ियों के पास अपने पदचिह्न स्थापित किए और तिरुमल नंबि से कहा, "इन पदचिह्नों के दर्शन करना मेरे दर्शन करने के समान होगा।" यह सुनकर तिरुमल नंबि बहुत प्रसन्न हुए और प्रतिदिन दोपहर में उन पदचिह्नों के दर्शन कर उनकी पूजा करने लगे।

एक बार, तिरुमल नंबि के एक शिष्य ने वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित करने वाली फूलों की माला पहन ली। वेंकटेश्वर स्वामी ने तिरुमल नंबि के सपने में आकर यह बात बताई। तिरुमल नंबि ने अपने शिष्य को डांटते हुए कहा, "आज से किसी को भी वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित की गई माला भी उपयोग नहीं करनी है।" इसके बाद उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित मालाओं को देवताओं के लिए एक कुँए में डालने की व्यवस्था की।

तिरुमल नंबि ने अपने शरीर को छोड़ते समय वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "हे स्वामी! मैंने अपने गुरु यामुनाचार्य के आदेशानुसार आपकी सेवा की है। अब मैं अपना शरीर त्याग रहा हूँ। यदि मैंने आपकी सेवा में कोई त्रुटि की हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें।" उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी भक्तों से भी कहा, "यदि मैंने आप सभी के प्रति कोई अपराध कीया हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें।" यह कहकर उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। भक्तों ने उसी घर में तिरुमल नंबि की प्रतिमा

स्थापित की, जहाँ वे निवास करते थे। अब उस घर को 'तिरुमल नंबि मंदिर' कहा जाता है। तिरुमल नंबि की आविर्भाव तिथि पर, वेंकटेश्वर स्वामी श्रीदेवी और भूदेवी के साथ तिरुमल नंबि के मंदिर में आते हैं, उन्हें आशीर्वाद देते हैं, वहाँ पूजा स्वीकार करते हैं और फिर लौट जाते हैं। उत्सवों के समय, जब वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सव मूर्ति तिरुमल नंबि मंदिर से गुजरती है, तो वेंकटेश्वर स्वामी वहाँ रुकते हैं, तिरुमल नंबि को देखते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं।

श्री कांचीपूर्ण (तिरुक्कच्चि नंबि)

कांचीपूर्ण का जन्म 1015 में कांचीपुरम के निकट स्थित पू इरुंत वल्ली नामक गांव में हुआ था। वे कांचीपुरम के वरदराज स्वामी के भक्त थे। कांचीपूर्ण के पास वरद नामक एक सेवक था। एक बार वरद ने कांचीपूर्ण से पूछा, "स्वामी! क्या मैं वैकुंठ जा पाऊँगा?" कांचीपूर्ण ने उत्तर दिया, "मैं वरदराज स्वामी से पूछकर बताऊँगा। कांचीपूर्ण प्रतिदिन वरदराज स्वामी की चामर सेवा करते हुए उनसे वार्तालाप करते थे। उसी रात, कांचीपूर्ण ने वरदराज स्वामी से पूछा, "क्या मेरा सेवक वैकुंठ जा सकेगा?" वरदराज स्वामी ने उत्तर दिया, "हां, वह जाएगा।" कांचीपूर्ण ने यह बात वरद को बताई। इस पर वरद अत्यंत प्रसन्न हुआ।

कुछ दिनों बाद, वरद ने कांचीपूर्ण से फिर पूछा, "स्वामी! वैकुंठ पहले आप जाएँगे या मैं?" कांचीपूर्ण ने कहा, "मैं वरदराज स्वामी से पूछकर बताऊँगा।" उसी रात, जब कांचीपूर्ण एकांत सेवा में थे, उन्होंने वरदराज स्वामी से यह प्रश्न किया वरदराज स्वामी ने कांचीपूर्ण से कहा, "तेरा सेवक वैकुंठ जाएगा, लेकिन तू वैकुंठ नहीं जा सकेगा।" यह सुनकर कांचीपूर्ण आश्चर्यचकित हुए और पूछा, "स्वामी! मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ, और आपसे प्रतिदिन वार्तालाप करता हूँ। फिर भी, मैं वैकुंठ क्यों नहीं जा सकता?" इस पर वरदराज स्वामी ने समझाया, वैकुंठ में मेरे दासों के लिए अनुमति नहीं है। केवल मेरे भक्तों के दासों

को वैकुंठ में प्रवेश मिलता है। जो मेरे भक्तों की सेवा करते हैं, वही वैकुंठ जाने के योग्य होते हैं। तुम मेरे भक्तों की सेवा नहीं करते और तुम्हारा कोई गुरु भी नहीं है। इस कारण, तुम्हें वैकुंठ में प्रवेश नहीं मिलेगा।

यह सुनकर कांचीपूर्ण अपने घर लौट गए। वैकुंठ जाने की इच्छा से उन्होंने अपने संन्यासी रूप को त्याग दिया और एक सेवक का रूप धारण करके श्रीरंगम की ओर प्रस्थान किया। वहाँ उन्होंने यामुनाचार्य के शिष्य और रंगनाथ स्वामी के भक्त महापूर्ण से संपर्क किया। कांचीपूर्ण ने महापूर्ण से कहा, "स्वामी! मेरा कोई सहारा नहीं है। मैं आपके पास सेवा करने आया हूँ। मुझे बस इतना चाहिए कि आप जो भोजन छोड़ दें, वही मुझे दे दें।" महापूर्ण ने उन्हें स्वीकार किया और गायों की सेवा का कार्य सौंपा। कांचीपूर्ण नियमित रूप से गायों की देखभाल करते, और महापूर्ण को दिन में तीन बार कावेरी नदी पर स्नान के लिए बैलगाड़ी में ले जाते। वे उनके वस्त्र भी धोते थे। एक दिन, जब कांचीपूर्ण महापूर्ण को शाम के समय कावेरी स्नान के बाद वापस ला रहे थे, अचानक वर्षा हो गई। कांचीपूर्ण पूरी तरह भीग गए। उन्होंने गोशाला लौटकर अपने गीले वस्त्र उतारकर सूखने के लिए रख दिए। उनके पास केवल एक जोड़ी वस्त्र थे। रात के समय, जब किसी के आने की संभावना नहीं थी, उन्होंने अपने संन्यासी वस्त्र पहने, तिलक लगाया और हरिनाम का जप करने लगे। महापूर्ण को यह ज्ञात था कि कांचीपूर्ण के पास केवल एक जोड़ी वस्त्र हैं। उन्होंने उन्हें वस्त्र देने के उद्देश्य से गोशाला की ओर प्रस्थान किया। वहाँ उन्होंने कांचीपूर्ण को संन्यासी वस्त्र पहने, तिलक लगाए और हरिनाम जप करते देखा।

महापूर्ण ने तुरंत कांचीपूर्ण को पहचान लिया और उनके चरणों में प्रणाम करते हुए पूछा, "आपने मेरे सेवक के रूप में यहाँ आने का क्यों कष्ट किया?" कांचीपूर्ण ने सारी घटना बताते हुए कहा, "वैकुंठ जाने के लिए भक्तों की सेवा करना आवश्यक है। इसलिए, मैं आपकी सेवा करने आया हूँ।" महापूर्ण ने उत्तर दिया, "आप मेरी सेवा न करें। मैं आपकी

सेवा स्वीकार करने योग्य भक्त नहीं हूँ। आप रंगनाथ स्वामी की चामर सेवा करें।" इसके बाद, उन्होंने कांचीपूर्ण को रंगनाथ स्वामी की सेवा में नियुक्त कर दिया।

कुछ दिनों बाद, रंगनाथ स्वामी ने कांचीपूर्ण से कहा, "कांचीपूर्ण! मेरे मंदिर को इस प्रकार बनाया गया है कि ग्रीष्मकाल में भी यह ठंडा रहता है। कावेरी नदी मेरे मंदिर के चारों ओर बहती है, जिससे यह क्षेत्र हमेशा ठंडा रहता है। इसलिए मुझे तुम्हारी चामर सेवा की आवश्यकता नहीं है। वरदराज स्वामी अग्निकुंड से प्रकट हुए हैं, और उनका स्थान गर्म रहता है। अतः तुम्हें वरदराज स्वामी की सेवा करनी चाहिए। मेरी सेवा तुम्हारे बिना भी पूर्ण है।"

रंगनाथ स्वामी द्वारा अपनी सेवा अस्वीकार किए जाने पर कांचीपूर्ण तिरुमला गए और वहाँ वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। कुछ समय तक वहाँ रहने के दौरान, वेंकटेश्वर स्वामी के भक्तों ने उन्हें चामर देकर चामर सेवा करने के लिए कहा। जब कांचीपूर्ण वेंकटेश्वर स्वामी के लिए चामर सेवा कर रहे थे, तो स्वामी ने भी उनसे कहा, "कांचीपूर्ण! मेरा मंदिर पर्वतों के बीच है, और यहाँ का स्थान हमेशा ठंडा रहता है। अतः मुझे तुम्हारी चामर सेवा की आवश्यकता नहीं है। जैसा कि रंगनाथ स्वामी ने कहा, तुम्हें वरदराज स्वामी की सेवा करनी चाहिए।" वेंकटेश्वर स्वामी द्वारा भी अपनी सेवा अस्वीकार किए जाने के बाद, कांचीपूर्ण कांचीपुरम लौटे और वरदराज स्वामी की सेवा करने लगे। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर, वरदराज स्वामी ने कहा, "अब तुम वैकुंठ जाने के योग्य हो गए हो।" इसके बाद, कांचीपूर्ण ने यामुनाचार्य से दीक्षा ली और उनके शिष्य बन गए।

श्री रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य का जन्म 1017 में चेन्नई के निकट पेरंबुदूर गाँव में हुआ। वे श्री वेंकटेश्वर स्वामी के एक महान भक्त थे। उनके गुरु यामुनाचार्य थे।

वे श्री वैष्णव परम्परा के अनुयायी थे, जिसका मुख्य केंद्र श्रीरंगम है। श्रीरंगम में निवास करते हुए, रामानुजाचार्य तीर्थ यात्राओं के माध्यम से इस परम्परा का प्रचार करते थे। इसी कारण वे वेंकटेश्वर स्वामी की प्रत्यक्ष सेवा नहीं कर सके। उन्होंने अपने शिष्य अनंताचार्य को वेंकटाचलम भेजा, जहाँ उन्होंने स्वामी की सेवा की। आज भी, रामानुजाचार्य की परम्परा के आचार्य ही वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा करते हैं। रामानुजाचार्य तीन बार तिरुमला गए और वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा की।

एक बार, रामानुजाचार्य तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए अपने शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे थे। वे अष्टसहस्र गाँव के मार्ग से गुजर रहे थे। वहाँ उनके दो शिष्य, एक धनी ब्राह्मण यज्ञेशु और एक गरीब ब्राह्मण वरदाचार्य, रहते थे। रामानुजाचार्य ने सोचा कि वरदाचार्य के पास इतने शिष्यों के लिए भोजन की व्यवस्था करना कठिन हो सकता है। इसलिए उन्होंने यज्ञेशु को संदेश भेजा कि वे अमुक दिन गाँव पहुँचेंगे।

यज्ञेशु ने संदेशवाहकों को बिना सम्मान किए ही वापस भेज दिया। जब शिष्य रामानुजाचार्य के पास लौटे, तो उन्होंने बताया कि यज्ञेशु ने उन्हें पानी तक नहीं दिया। यह सुनकर रामानुजाचार्य यज्ञेशु के घर नहीं गए और वरदाचार्य के घर गए। वरदाचार्य अपनी आजीविका के लिए भिक्षा पर निर्भर थे और उस समय भिक्षा माँगने गाँव गए थे। उनकी पत्नी कार्पार लक्ष्मीदेवी घर पर थीं। रामानुजाचार्य ने उनके घर का दरवाजा खटखटाया। अंदर से लक्ष्मीदेवी ने कहा, "मेरे पास उपयुक्त वस्त्र नहीं हैं।" रामानुजाचार्य ने अपनी उत्तरीय (ऊपर का वस्त्र) खिड़की से अंदर फेंक दी। लक्ष्मीदेवी ने वह वस्त्र पहनकर दरवाजा खोला और सभी के बैठने के लिए चटाई बिछाई। फिर उन्होंने सभी को ठंडा पानी दिया।

इसके बाद, कार्पार लक्ष्मीदेवी ने गाँव के एक दुकानदार से कहा, "हमारे गुरुदेव रामानुजाचार्य अपने शिष्यों के साथ हमारे घर आए हैं। सभी के लिए प्रसाद बनाने हेतु मुझे रसोई सामग्री चाहिए।" इस पर दुकानदार ने कहा, "अगर तुम मेरी कामना पूरी करोगी, तो मैं तुम्हें रसोई

सामग्री दूँगा।" लक्ष्मीदेवी को समझ नहीं आया कि क्या करना चाहिए। उसने सोचा और दुकानदार से कहा, "पहले मुझे रसोई सामग्री दे दो, ताकि मैं अपने गुरुदेव और उनके शिष्यों को प्रसाद से संतुष्ट कर सकूँ। इसके बाद मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगी।" दुकानदार ने यह बात मान ली और उसे रसोई सामग्री दे दी। लक्ष्मीदेवी ने भोजन बनाकर घर के शालग्राम को नैवेद्य अर्पित किया और फिर वही प्रसाद रामानुजाचार्य और उनके शिष्यों को परोसा। जब सभी ने प्रसाद ग्रहण कर लिया, तब वरदाचार्य घर लौटे। उनकी पत्नी लक्ष्मीदेवी ने उन्हें पूरी घटना सुनाई। यह सुनकर वरदाचार्य ने कहा, "गुरुदेव की सेवा के लिए तुमने इस नश्वर शरीर की क़ीमत पर शाश्वत यश अर्जित किया है।" उन्होंने लक्ष्मीदेवी की प्रशंसा की।

रामानुजाचार्य को अपनी दिव्य दृष्टि से इस घटना का पता चल गया। उन्होंने वरदाचार्य को निर्देश दिया कि वह दुकानदार को उनका उच्छिष्ट (अर्थात वह प्रसाद जो उन्होंने खाया था) दे दें। वरदाचार्य ने रामानुजाचार्य का उच्छिष्ट अपनी पत्नी को दिया और उनसे कहा कि इसे दुकानदार को दें। लक्ष्मीदेवी दुकानदार के पास गई और उससे कहा, "पहले आप इस महाप्रसाद को ग्रहण करें।" दुकानदार ने जैसे ही महाप्रसाद को ग्रहण किया, उसके प्रभाव से उसके सभी पाप नष्ट हो गए, और उसका शरीर और इंद्रियाँ पवित्र हो गईं। दुकानदार ने लक्ष्मीदेवी के चरणों में गिरकर अपने पापों के लिए क्षमा माँगी।

इसके बाद लक्ष्मीदेवी उस दुकानदार को रामानुजाचार्य के पास ले गई और उन्हें सारी घटना बताई। दुकानदार ने रामानुजाचार्य को साष्टांग प्रणाम किया, उनसे अपने दोषों के लिए क्षमा माँगी और स्वयं को उनका शिष्य बनाने की प्रार्थना की। रामानुजाचार्य ने उसे क्षमा किया और शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया। रामानुजाचार्य ने दुकानदार से कहा, "वरदाचार्य बहुत गरीबी में जीवन बिता रहे हैं, इसलिए उन्हें कुछ धन प्रदान करो।" लेकिन वरदाचार्य ने रामानुजाचार्य से कहा, "स्वामी! भक्ति

के लिए ज्ञान, धन, और कुल शत्रु हैं, इसलिए मुझे धन नहीं चाहिए।" यह सुनकर रामानुजाचार्य बहुत प्रसन्न हुए।

यज्ञेश्वर ने जब यह जाना कि रामानुजाचार्य उसके घर न आकर वरदाचार्य के घर गए हैं , तो यज्ञेश्वर ने उनके पास जाकर दण्डवत प्रणाम किया और पूछा, "गुरुदेव! आप मेरे घर क्यों नहीं आए?" इस पर रामानुजाचार्य ने कहा, "मेरे शिष्यों ने आपको यह संदेश दिया था कि मैं आ रहा हूँ, लेकिन आपने उनका आदर न करके अतिथि सेवा से इनकार किया, इसलिए मैं आपके घर नहीं आया।" यज्ञेश्वर ने कहा, "स्वामी! आपकी बात सच है। आपके आगमन की खुशी में मैं उनके बारे में भूल गया, लेकिन यह अहंकार से नहीं हुआ। कृपया मुझे क्षमा करें और मेरे घर आकर मेरी सेवा स्वीकार करें।" रामानुजाचार्य ने कहा, "मैं पहले तिरुपति में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करूँगा और फिर श्रीरंगम लौटते समय आपकी सेवा को स्वीकार करूँगा" और फिर तिरुपति के लिए रवाना हो गए।

रामानुजाचार्य के तिरुपति आने की जानकारी तिरुमलानंबि को मिली। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी के तीर्थप्रसाद को लेकर रामानुजाचार्य से मिलने के लिए प्रस्थान किया। जब रामानुजाचार्य ने तिरुमलानंबि को देखा, तो उन्होंने कहा, "स्वामी! आप स्वयं क्यों आए? आप किसी छोटे भक्त को भी भेज सकते थे?" तब तिरुमलानंबि ने कहा, "इस पर्वत पर मुझसे छोटा कोई भक्त नहीं है, इसलिए मैं ही स्वामी के तीर्थप्रसाद को लेकर आया हूँ।"

रामानुजाचार्य तिरुपति में कपिलतीर्थ के भीतर नम्माल्वार के मंदिर में थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, तिरुमला का पर्वत साक्षात आदिशेष है। रामानुजाचार्य ने तिरुमला पर्वत को आदिशेष का अवतार स्वीकार करके अपने चरण पर्वत पर न रखने का निश्चय किया और पर्वत पर नहीं चढ़े। यह जानकर, अनंताचार्य पर्वत से नीचे आए और रामानुजाचार्य को दण्डवत् प्रणाम करके कहा, "गुरुदेव! तिरुमला पर्वत पर स्थापित

वेंकटेश्वर स्वामी को शैव द्वारा शिव के रूप में और शक्तिवादियों द्वारा दुर्गा के रूप में पूजा जाता है। लेकिन आल्वारों ने वेंकटेश्वर स्वामी को विष्णु के रूप भजते हुए कई स्तुतियां लिखी हैं और प्रार्थनाएँ की है। आल्वारों की प्रार्थनाएँ अरण्य रुदन का रूप ले रही हैं। इसलिए, आप पर्वत पर चढ़कर शास्त्रों के प्रमाण से यह प्रमाणित करें कि वेंकटेश्वर स्वामी ही महाविष्णु हैं और आल्वारों की प्रार्थनाओं को सत्य बना दें। हे गुरुदेव! यदि आप पर्वत पर चढ़ने के लिए योग्य नहीं हैं, तो मैं कैसे चढ़ सकता हूँ? तिरुमला आकर वेंकटेश्वर स्वामी को फूलों और तुलसी की सेवा देने के लिए मुझे क्यों भेजा गया?"

रामानुजाचार्य अनंताचार्य की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने घुटनों को कपड़े से बाँधकर और घुटनों के बल चलते हुए तिरुमला पर्वत पर चढ़े। उन्होंने स्वामि पुष्करिणि में स्नान किया और पास में स्थित भूदेवी के साथ वराह स्वामी के दर्शन किए। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में प्रदक्षिणा करके और नमस्कार कर के दर्शन किए। फिर उन्होंने शैव और शक्तिवादी भक्तों को बुलाकर शास्त्रों के प्रमाण प्रस्तुत किए और कहा, "वेंकटेश्वर स्वामी न तो दुर्गा देवी हैं और न ही शिव, बल्कि कई पुराणों में उन्हें महाविष्णु ही बताया गया है। इसलिए, यहाँ केवल विष्णु की पूजा करनी चाहिए।"

फिर भी, शैव और शक्तिवादी भक्तों ने रामानुजाचार्य से पूछा, "यदि वह विष्णु हैं, तो उनके पास शंख और चक्र क्यों नहीं हैं?" रामानुजाचार्य ने शैवों और शक्ति वादियों से कहा कि "तोंडमान और वसुदास के युद्ध में वेंकटेश्वर स्वामी ने अपने शंख-चक्र तोंडमान को दे दिए थे और खुद वसुदास की सहायता की थी। इसलिए वेंकटेश्वर स्वामी के पास शंख-चक्र नहीं हैं।" लेकिन उन्होंने इसे नहीं माना। रात को, रामानुजाचार्य ने वेंकटेश्वर स्वामी के सामने दुर्गा देवी के खड्ग, शिव के डमरु-त्रिशूल और विष्णु के शंख-चक्र रखकर मंदिर के दरवाजों को ताले लगा दिए और कहा, "हम सभी यहाँ रहेंगे। यदि गर्भगृह में खड्ग को स्वीकार

किया गया तो यह दुर्गा देवी होंगी, डमरु-त्रिशूल को स्वीकार किया गया तो यह शिव होंगे, और शंख-चक्र को स्वीकार किया गया तो यह विष्णु होंगे।" सभी ने इस शर्त को स्वीकार किया।

रात को, रामानुजाचार्य ने आदिशेष के रूप में गर्भगृह में प्रवेश किया और वेंकटेश्वर स्वामी के दोनों हाथों में शंख-चक्र पहनाए। अगली सुबह, जब मंदिर के दरवाजे खोले गए, तो देखा गया कि वेंकटेश्वर स्वामी ने शंख-चक्र को स्वीकार कर लिया था। इस घटना के बाद, शैव और शक्तिवादी तिरुमला पर्वत छोड़कर चले गए। रामानुजाचार्य के द्वारा वेंकटेश्वर स्वामी को शंख-चक्र पहनाए जाने के कारण, वेंकटेश्वर स्वामी ने रामानुजाचार्य को अपने गुरु के रूप में माना। इसलिए, रामानुजाचार्य के सहस्त्रनामों में वेंकटेश्वर स्वामी के गुरु के रूप में भी एक नाम है।

एक राजा रामेश्वरम जाते समय वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए गया और स्वामी के मंदिर के चारों ओर मंडप बनाने के लिए उसने अपने सेवकों को निर्देश दिया। अपनी वापसी यात्रा में राजा ने देखा कि मंडप कितना पूरा हुआ है। उस रात राजा ने सपने में एक साँप देखा। अगले दिन, जब राजा स्वामी के दर्शन के लिए गया, तो देखा कि वह सांप वेंकटेश्वर स्वामी के कंधे के चारों ओर लिपटा हुआ था। राजा ने स्वर्ण से एक नागाभरण बनवाया और पुजारी से कहा कि वह इसे वेंकटेश्वर स्वामी के कंधे पर धारण कराएँ। पुजारी ने कहा, "नागाभरण केवल शिव को धारण कराये जाते है, इसलिए मैं नागाभरण वेंकटेश्वर स्वामी को धारण नहीं कराऊँगा।" लेकिन वेंकटेश्वर स्वामी ने पुजारी को सपने में दर्शन देकर कहा, "मैं आदिशेष पर निवास करता हूँ। आदिशेष मेरे लिए प्रिय है। इसलिए, राजा द्वारा बनाया गया नागाभरण मुझे पहनाओ।"

तब पुजारी ने वेंकटेश्वर स्वामी की इच्छा के अनुसार उनको नागाभरण पहनाया। जब रामानुजाचार्य ने देखा कि स्वामी के केवल एक कंधे पर नागाभरण है, तो उन्होंने पुजारियों से पूछा कि ऐसा क्यों किया गया। उन्होंने पूरी घटना बताई। रामानुजाचार्य ने सोचा कि एक कंधे पर ही

आभूषण अच्छा नहीं लगेगा और फिर उन्होंने दूसरे कंधे पर भी नागाभरण बनवाकर पहनाया। इस कारण, आज भी वेंकटेश्वर स्वामी को नागाभरण पहनाया जाता है।

रामानुजाचार्य ने तिरुचानूर में स्थित पद्मावती देवी (लक्ष्मी देवी) को साल में एक दिन वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित किए गए फूलों और हल्दी-कुंकुम भेजने की व्यवस्था की। उन्होंने संक्रांति के बाद के दिन, गोदा देवी द्वारा पहने गए फूलों को वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित करने की व्यवस्था की और गोदा देवी से वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह कराने की व्यवस्था की। उन्होंने धनुरमास (दिसंबर-जनवरी) में, सुबह में गाये जाने वाले 'सुप्रभातम्' की जगह गोदा देवी द्वारा लिखी गई तिरुप्पावई का पाठ करने की व्यवस्था की। वेंकटेश्वर स्वामी के फूलों के अलंकरण के समय, दिव्यप्रबंधम(1) का गायन करने की व्यवस्था की गई।

रामानुजाचार्य के तिरुमला आने से पहले, दस दिनों के ब्रह्मोत्सव का केवल पहला दिन तिरुमला में मनाया जाता था। बाकी नौ दिन तिरुचानूर में होते थे। यह जानकर, रामानुजाचार्य ने दस दिनों के उत्सव को तिरुमला में ही आयोजित करने की व्यवस्था की।

तिरुमला के जंगलों में योग नरसिंह स्वामी की प्रतिमा थी। रामानुजाचार्य ने इस नरसिंह स्वामी को वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में स्थापित कर प्रतिदिन पूजा-अर्चना और नैवेद्य की व्यवस्था की। योग मुद्रा में होने के कारण, इस स्वामी को योग नरसिंह स्वामी के नाम से जाना गया।

श्री अनंताचार्य

रामानुजाचार्य के प्रमुख गृहस्थ शिष्यों में से एक अनंताचार्य थे। अनंताचार्य का जन्म 1053 में हुआ था। वे रामानुजाचार्य से 36 वर्ष छोटे थे। अनंताचार्य का निवास स्थान तिरुमला में था, जहाँ उनके घर के पीछे श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए उन्होंने स्वयंसिद्ध कुंड और पुष्प

(1) बारह आल्वारों द्वारा रचित चार हजार गीतों

वाटिका बनाई थी। वही पर ही उनकी प्रतिमा एवं समाधि भी वहीं स्थित हैं। अनंताचार्य ने संस्कृत में 'वेंकटाचल इतिहास माल' नामक ग्रंथ के साथ-साथ 'रामानुज चतुष्लोकी' और 'गोडा चतुष्लोकी' नामक रचनाएँ भी लिखी थीं।

एक बार रामानुजाचार्य ने श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के बारे में बताते हुए अपने शिष्यों से पूछा, "वेंकटेश्वर स्वामी को पुष्प बहुत प्रिय हैं, "नम्मालवार ने एक कीर्ति में लिखा है कि वेंकटेश्वर स्वामी को फूल बहुत प्रिय हैं। इसलिए आप में से कौन तिरुमला जाकर श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को पुष्प अर्पित करेगा ?" इस पर अनंताचार्य उठकर रामानुजाचार्य से बोले, "गुरुदेव! मैं जाकर श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को पुष्प सेवा अर्पित करूँगा।" रामानुजाचार्य ने अत्यंत प्रसन्न होकर उन्हें जाने की अनुमति दी। रामानुजाचार्य की अनुमति से अनंताचार्य श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए तिरुमला पहुंचे। वहाँ स्वामी का दर्शन करने के बाद उन्होंने तिरुमला में एक कुटीर बनवाई।

वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए आवश्यक पुष्प और तुलसी के पौधों को उगाने के लिए अनंताचार्य अपनी पत्नी के साथ एक कुआँ खोद रहे थे, तभी स्वामी ने उनकी सहायता करने का निश्चय किया। स्वामी ने एक बालक के रूप में अनंताचार्य के पास जाकर कहा, "मैं इस पर्वत पर रहने वाली एक कोय जाति का बालक हूँ। मैंने आपके बारे में सुना है और मैं आपकी सहायता करूँगा।" अनंताचार्य ने बालक से कहा, "तुम यह काम नहीं कर सकते। हमारे गुरु ने जो सेवा दी है, उसे मैं ही करूँगा। तुम जा सकते हो।" बालक रूप में श्रीवेंकटेश्वर स्वामी वहाँ से चले गए।

अनंताचार्य कुआँ खोदते रहे। उन्होंने खोदी हुई मिट्टी को एक टोकरी में भरकर अपनी पत्नी को दे दिया। उनकी पत्नी उस थैले को दूर फेंकने के लिए जा रही थी। यह देख कर श्रीवेंकटेश्वर स्वामी उनकी पत्नी के पास गए और कहा, "आप गर्भवती हैं। गर्भवती महिलाओं को इतनी

कठिनाई भरे काम नहीं करने चाहिए। आप यह टोकरी मुझे दे दें। मैं इसे दूर फेंक दूँगा।" अनंताचार्य की पत्नी ने बालक से कहा, "मेरे पति ने पहले तुम्हारी सहायता को नकार दिया था। अब अगर मैं तुम्हारी सहायता स्वीकार करुँगी, तो हम दोनों को मेरे पति डांटेंगे। इसलिए तुम चले जाओ।" बालक रूप में स्वामी ने कहा, "तुम्हारे पति कुंड के अंदर हैं। मैं जो मदद करूँगा, वह उन्हें दिखाई नहीं देगी। इसलिए तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है।" अनंताचार्य की पत्नी ने वेंकटेश्वर स्वामी की माया के प्रभाव में आकर उस बालक की सहायता स्वीकार कर ली।

बालक के रूप में आए श्रीवेंकटश्वर स्वामी की सहायता से उनकी सेवा जल्दी पूरी हो गई। अनंताचार्य ने देखा कि उनकी पत्नी मिट्टी की दूसरी टोकरी भरने से पहले ही लौट आईं हैं। अनंताचार्य ने अपनी पत्नी से पूछा, "पहले तो तुम देर से आ रही थी, और अब मैं टोकरी में मिट्टी भरूँ, उससे पहले ही लौट आ रही हो। इसका कारण क्या है?" पतिव्रता पत्नी ने बिना झूठ बोले सब कुछ सही-सही बता दिया। गुस्से में अनंताचार्य कुँए से बाहर आ गए। उनके गुस्से को देख कर बालक रूप में श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को समझ में आ गया कि वे उन्हें दंडित करेंगे। इसलिए स्वामी वहाँ से भाग गए। अनंताचार्य ने बालक को पकड़ने के लिए उनका पीछा किया। भागते हुए वेंकटेश्वर स्वामी ने पीछे मुड़कर देखा, तो अनंताचार्य ने अपने हाथ में रहे सब्बल से वेंकटेश्वर स्वामी पर वार कर दिया। सब्बल स्वामी के होंठ के निचले हिस्से पर लगी, जिससे खून बहने लगा। इस प्रकार, खून बहाते हुए श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालक रूप में मंदिर में जाकर अदृश्य हो गए। अनंताचार्य दौड़ नहीं सके और लौट आए।

उधर मंदिर में श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति के होठों के नीचे से रक्त बहने लगा। यह देखकर मंदिर के पुजारी घबराकर श्रीवेंकटेश्वर स्वामी से पूछने लगे, "स्वामी! यह रक्त क्यों बह रहा है?" श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने उस घटना का विवरण देते हुए कहा, "इस रक्त को रोकने के लिए

हरे कपूर को लगाओ। अनंताचार्य द्वारा की गई इस लीला की याद स्वरूप हर दिन इसी प्रकार हरे कपूर को लगाओ।" मंदिर के पुजारी ने श्रीवेंकटेश्वर स्वामी द्वारा बताई गई विधि से उनकी सेवा की। इस घटना के बारे में जानने के बाद, अनंताचार्य ने श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को अष्टांग प्रणाम किया और अपनी गलती के लिए क्षमा प्रार्थना की।

एक बार अनंताचार्य फूलों के हार तैयार कर रहे थे, तभी श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने मंदिर के पुजारी के माध्यम से उन्हें मिलने के लिए बुलाया। जब अनंताचार्य ने पुजारी से जाना कि स्वामी उन्हें बुला रहे हैं, तो उन्होंने कहा, "मैं आता हूँ, आप जाइए।" अनंताचार्य ने फूलों और तुलसी के हार को तैयार कर लाने में थोड़ी देर कर दी।

श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने अनंताचार्य से पूछा, "तुम्हें इतनी देर क्यों लगी?" अनंताचार्य ने उत्तर दिया, "स्वामी! मैं फूलों और तुलसी के हार को तैयार कर रहा था, इसलिए आने में देर हो गई।" श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने अनंताचार्य से पूछा, "तुम्हारे लिए मैं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हूँ कि मेरे लिए बनाये गए फूलों के हार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं?" अनंताचार्य ने कहा, "स्वामी! जब फूल पूरी तरह से खिल जाते हैं, तो उनकी खुशबू जल्दी ही चली जाती है। इसलिए हमारे गुरु रामानुजाचार्य ने हमें निर्देश दिया है कि फूलों के हार को तब तक तैयार करके अर्पित करो, जब तक वे खिलें नहीं। जब आपने मुझे बुलाया, तब मैं फूलों के हार बना रहा था। अगर मैं बीच में उसे छोड़कर आपके पास आता, तो फूल खिलकर अपनी खुशबू खो देते। इसलिए मैंने फूलों के हार को पूरी तरह से तैयार किया और फिर आपके लिए लाया।"

एक बार, जब अनंताचार्य अपने बगीचे में फूल तोड़ रहे थे, तभी एक साँप ने उन्हें काट लिया। फिर भी, श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की फूल सेवा में कोई विलंब न हो, इसलिए उन्होंने फूल तोड़कर माला तैयार की और मंदिर में लाने के लिए चल दिए। श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने कहा, "तुम्हें साँप ने काटा है, न? तुम तुरंत औषधि ले लो।" अनंताचार्य ने उत्तर दिया,

"स्वामी! मुझे काम, क्रोध, लोभ, मद और मात्सर्य जैसे साँप हर क्षण काटते रहते हैं। उनके सामने इस साँप के जहर की क्या बात है? अगर इस साँप के जहर से मैं मर भी जाऊँ, तो वैकुण्ठ में जाकर वहाँ आपकी सेवा करूँगा। और यदि जीवित रहा, तो यहीं आपकी सेवा करूँगा।"

एक बार, अनंताचार्य श्रीरंगम जाने और अपने गुरु तथा श्रीरंगनाथ स्वामी के दर्शन करने के लिए, श्रीवेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित किए गए प्रसाद को लेकर, तिरुमला से रवाना हुए। रास्ते में, जब उन्होंने प्रसाद की थैली खोली, तो उसमें चींटियाँ दिखने लगीं। कुलशेखर महाराज की प्रार्थना—"स्वामी, मैं इस पर्वत पर एक तुच्छ जीव के रूप में जन्म चाहता हूँ," को याद करते हुए उन्होंने सोचा कि संभवतः कुछ महान भक्त चींटियों के रूप में जन्मे होंगे। इसलिए, उन्होंने उस प्रसाद को तिरुमला पर्वत पर ले जाकर वहाँ छोड़ दिया और श्रीरंगम के लिए रवाना हो गए।

एक बार कुछ भक्त तिरुमला पर्वत पर चढ़ते-चढ़ते थक गए। तभी, श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने भक्त का वेश धारण करके उनके पास जाकर कहा, "मैं अनंताचार्य का शिष्य हूँ। एक भक्त ने, जो आप सब को पर्वत पर थका हुआ देख रहा था, अनंताचार्य को आपके बारे में सूचित किया। अनंताचार्य ने श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के नैवेद्य में अर्पित पुलिहोरा (इमलीभात) प्रसाद आपके लिए भेजा है।" ऐसा कहकर उन्होंने भक्तों को प्रसाद दे दिया और वहाँ से चले गए। भक्तों ने उस पुलिहोरा प्रसाद को स्वीकार किया। तिरुमला पहुँचने के बाद, उन्होंने अनंताचार्य से मिलकर कहा, "आप द्वारा भेजा गया पुलिहोरा बहुत अच्छा था" और धन्यवाद दिया। अनंताचार्य ने उत्तर दिया, "मैंने किसी को नहीं भेजा। स्वयं श्रीवेंकटेश्वर स्वामी ने मेरे शिष्य के रूप में आकर आपको अपनी भेंट दी।"

एक बार, पराशरभट्ट का शिष्य उनके पास आया और भक्तों के लक्षणों के बारे में जिज्ञासा की। पराशरभट्ट ने कहा, "तिरुमला में

अनंताचार्य हैं। तुम उनके पास जाकर जान लो" और उसे तिरुमला भेज दिया। वह शिष्य पराशरभट्ट की बात मानकर तिरुमला गया और अनंताचार्य से मिलकर उसने उन्हें पूरी घटना बताई। अनंताचार्य ने उसे वहाँ कुछ दिन रुकने को कहा।

एक बार, श्रीवेंकटेश्वर स्वामी का उत्सव हुआ , जिसमें कई भक्त और संन्यासी शामिल हुए। उत्सव के बाद, भक्त प्रसाद प्राप्त करने के लिए बैठ गए। उनमें पराशरभट्ट द्वारा भेजा गया शिष्य भी था। अनंताचार्य ने उसे उठाकर प्रसाद वितरित करने के लिए कहा। वह प्रसाद वितरित करके दूसरी बार प्रसाद लेने वाले भक्तों के साथ बैठ गया। अनंताचार्य ने उसे फिर से उठाकर प्रसाद वितरित करने के लिए कहा। उसने फिर से प्रसाद वितरित किया और तीसरी बार प्रसाद लेने वालों के साथ बैठ गया। अनंताचार्य ने उसे फिर से उठाकर प्रसाद वितरित करने के लिए कहा। उसने प्रसाद वितरित किया और चौथी बार प्रसाद लेने वालों के साथ बैठकर प्रसाद लिया।

उत्सव समाप्त होने के बाद, अनंताचार्य ने उसे बुलाया और कहा, "तुमने मुझसे पूछा था कि भक्तों के लक्षण कैसे होने चाहिए, मैं तुम्हें बताता हूँ।" फिर उन्होंने कहा, "भक्तों को नमक, बगुला, मुर्गी और तुम्हारी तरह होना चाहिए।" वह भक्त अनंताचार्य से अनुमति लेकर पराशरभट्ट के पास गया और सारी घटना विस्तार से बताई, फिर कहा कि मुझे उनके उत्तर समझ नहीं आए। तब पराशरभट्ट ने अपने शिष्य से कहा, "छह प्रकार के स्वादों में से नमक एक है। ये छह स्वाद कभी अपनी विशेषताओं को नहीं खोते। बिना नमक के बनाई गई सब्जी कोई नहीं खाता। सब लोग बनी हुई सब्जियों की प्रशंसा करते हैं, लेकिन नमक की सराहना नहीं करते। नमक सब्जियों को स्वाद देता है, लेकिन अपनी महानता को नहीं लेता। इसी तरह, भक्त को भगवान की नवविधा भक्ति को अच्छे से साधना चाहिए, लेकिन अपने गुणगान की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

"बगुला मछलियों के लिए पानी में खड़ा रहता है। यदि वह छोटी-छोटी मछलियों को खाता है, तो बड़ी मछलियाँ उसकी ओर नहीं आतीं, इसलिए जब तक बड़ी मछलियाँ उसकी ओर नहीं आती हैं, तब तक राह देखता है और बड़ी मछली दिखने पर वह उन्हें पकड़कर खा लेता है। इसी प्रकार, भक्त को साधना करते समय मिलने वाली पूजा, लाभ, प्रतिष्ठा, अष्टांग योग की सिद्धि, स्वर्ग प्राप्ति, और इन्द्र एवं ब्रह्मा जैसी पदवियों की इच्छा नहीं करनी चाहिए, उन्हें केवल वैकुंठ प्राप्ति की ही इच्छा करनी चाहिए।

"मुर्गी धूल में से अपने लिए भोजन ढूंढती है। इसी प्रकार, भक्त को सभी शास्त्रों का सही अर्थ समझकर उसका पालन करना चाहिए।

जिस तरह आप अनंताचार्य के द्वारा किए गये अपमान से प्रभावित नहीं हुए उसी तरह भक्त को अपने सम्मान या अपमान से प्रभावित नहीं होना चाहिए।"

एक रात वेंकटेश्वर स्वामी लक्ष्मी देवी के साथ खेलने के लिए अनंताचार्य के फूलों के बगीचे में गए। वेंकटेश्वर स्वामी ने वहाँ के गुलाब के सुंदर फूल तोड़कर लक्ष्मी देवी को दिए। इसी तरह, लक्ष्मी देवी ने भी गुलाब के सुंदर फूल तोड़कर वेंकटेश्वर स्वामी को दिए। इस तरह, वे दोनों रात भर फूलों के बाग में खेलते रहे और ब्रह्म मुहूर्त (सुबह) होते ही वहाँ से चले गए।

जब अनंताचार्य सुबह फूल तोड़ने के लिए बाग में आए , तो उन्होंने देखा कि सारे सुंदर फूल तोड़े हुए हैं ,यह देखकर वे बहुत दुःखी हुए। बाग में बचे हुए फूलों से उन्होंने पुष्पमाला तैयार की और वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित की। अगली रात भी वेंकटेश्वर स्वामी लक्ष्मी देवी के साथ बाग में फूलों से खेलकर, ब्रह्म मुहूर्त में चले गए। अनंताचार्य फिर से बहुत दुःखी हुए। अगली रात भी वेंकटेश्वर स्वामी लक्ष्मी देवी के साथ बगीचे में आए और फूलों के साथ खेलते रहे और सुबह ब्रह्म

मुहूर्त में चले गए। अनंताचार्य फिर से बहुत दुःखी हो गए। अगली रात, उन्होंने सोचा कि किसी भी प्रकार इन लोगों को पकड़ना चाहिए और यह सोचकर वे रात में बगीचे की रखवाली करने लगे। वेंकटेश्वर स्वामी फिर से लक्ष्मी देवी के साथ आए और बगीचे के सभी सुंदर फूलों को लेकर चले गए। लेकिन अनंताचार्य को लक्ष्मी देवी और वेंकटेश्वर स्वामी दोनों नहीं दिखाई दिए।

आठ दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा। नौवें दिन, अनंताचार्य ने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की कि जो भी उनके बगीचे में आकर फूल तोड़ते हैं, वे उन्हें दिखाई दें। उस दिन, वेंकटेश्वर स्वामी और लक्ष्मी देवी राजा और रानी के रूप में घोड़े पर सवार होकर बगीचे में आए। यह देखकर अनंताचार्य ने राजा के रूप में वेंकटेश्वर स्वामी से कहा, "तुम राजा जैसे दिखते हो। क्या तुम्हें भगवान के लिए उगाए फूलों को नष्ट करना शोभा देता है?" और उन्हें बाँधने की कोशिश की। वेंकटेश्वर स्वामी स्वयं को छुड़ाकर घोड़े पर भाग गए। जैसे ही वेंकटेश्वर स्वामी भागे, अनंताचार्य ने रानी के रूप में लक्ष्मी देवी को पकड़ लिया और पेड़ों की बेलों से बाँध दिया। अनंताचार्य ने लक्ष्मी देवी से कहा, "तुम्हारे लिए तुम्हारा पति आएगा, तब मैं उसे उपदेश दूँगा।" लक्ष्मी देवी ने अनंताचार्य से कहा, "मेरे पति की मेरी तरह कई पत्नियाँ हैं, इसलिए वह मेरे लिए नहीं आएँगे। मैं आपकी बेटी के समान हूँ, कृपया मुझे छोड़ दो।" लेकिन अनंताचार्य ने लक्ष्मी देवी को नहीं छोड़ा।

अगले दिन सुबह, जब तिरुमला मंदिर का दरवाजा खोला गया और पुजारियों ने अंदर प्रवेश किया, तो उन्होंने देखा कि वेंकटेश्वर स्वामी के हृदय में लक्ष्मी देवी नहीं थीं। पुजारियों ने वेंकटेश्वर स्वामी से पूछा, "स्वामी! लक्ष्मी देवी कहाँ गईं?" वेंकटेश्वर स्वामी ने उत्तर दिया, "रात को मैं लक्ष्मी देवी के साथ अनंताचार्य के फूलों के बाग में घूम रहा था, तब अनंताचार्य ने मुझे पकड़ने की कोशिश की। मैं बचकर वापस आ गया, लेकिन लक्ष्मी देवी वहीं बंदी हो गईं।" पुजारियों ने अनंताचार्य के

फूलों के बाग में जाकर उसे यह सब बताया। तब तक लक्ष्मी देवी वहाँ एक मूर्ति के रूप में परिवर्तित हो चुकी थीं। अनंताचार्य लक्ष्मी देवी को एक टोकरी में रखकर मंदिर में लाए और वेंकटेश्वर स्वामी के हृदय में रखकर उनसे क्षमा माँगी।

इस लीला की याद में आज भी वेंकटेश्वर स्वामी और लक्ष्मी देवी को अनंताचार्य के बाग में ले जाकर पूजा की जाती है। तिरुमला में अनंताचार्य की समाधि पर वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित फूलों की माला प्रसाद रूपमें अर्पित की जाती है और शठगोपा के साथ अनंताचार्य को आशीर्वाद दिया जाता है। अनंताचार्य के जन्म दिवस पर भी इसी प्रकार पूजा की जाती है। कहा जाता है कि अनंताचार्य की समाधि से एक पोगड़ा पेड़ उत्पन्न हुआ था और इसे अनंताचार्य के रूप में माना जाता है।

श्री वेदांत देशिकन

वेदांत देशिकन का जन्म 1268 में तमिलनाडु के कांचीपुरम के पास तूपुल नामक गाँव में अनंतसूरी और तौताराम्बा दंपति के घर हुआ था। उनका जन्म नाम 'वेंकटनाथन' था। वीरराघवाचार्य ने 400 साल पहले गोविंदराज स्वामी मंदिर में वेदांत देशिकन मंदिर की स्थापना की थी।

अनंतसूरी और तौताराम्बा की कोई संतान नहीं थी। इसलिए वे हमेशा तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी से संतान प्राप्ति की प्रार्थना करते थे। एक दिन, अनंतसूरी को स्वप्न में वेंकटाचलपति ने बालक के रूप में दर्शन देकर मंदिर की एक घंटी सौंपते हुए कहा, "इस घंटी को अपनी पत्नी से निगलवाओ, तुम्हें पुत्र संतान प्राप्त होगी।" और यह कहकर वेंकटाचलपति अंतर्धान हो गए।

उसने देखा कि स्वप्न में स्वामी की आज्ञा के अनुसार उसकी पत्नी ने घंटी निगल ली। अगले दिन सुबह, उसने अपनी पत्नी को यह स्वप्न बताया और पत्नी ने भी कहा कि उसे भी वही स्वप्न आया था। यह सुनकर वे दोनों आश्चर्यचकित हो गए।

मंदिर में घंटी न मिलने पर पुजारियों ने अधिकारी को सूचित किया। वेंकटाचलपति ने स्वयं रामानुजाचार्य के वंश के अधिकारी को बताया कि घंटी कैसे गायब हो गई। मुख्य अधिकारी ने भी उन पवित्र दंपतियों से स्वप्न के बारे में सुना और चकित हो गए। तौताराम्बा ने 12 वर्षों तक घंटी को धारण किया और फिर वेदांत देशिकन का जन्म हुआ। वेदांत देशिकन ने तिरुमला आकर वेंकटेश्वर स्वामी की कई वर्षों तक सेवा की। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति करते हुए 'दयाशतक' नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें 108 श्लोक थे। इस ग्रंथ के कुछ श्लोकों का भावार्थ इस प्रकार है:

"गन्ने का रस बहुत मीठा होता है। जब उसे उबालते हैं, तो चीनी बन जाती है। उसी प्रकार, श्रीनिवास की दया पिघल कर वेंकटगिरि पर्वत बन गई। मैं उस वेंकटगिरि को प्रणाम करता हूँ। श्रीनिवास की दया रूपी सरोवर से आने वाले जल में शठगोप, नाथमुनि, यामुनाचार्य और इस परम्परा के अन्य आचार्य स्नान करते हैं। वेद संस्कृत में होने के कारण केवल कुछ लोग ही इसका लाभ उठा सके। उन वेदों का सार आल्वारों ने दिव्य प्रबंध के रूप में प्रस्तुत किया। आल्वारों ने परम पुरुष की दया का आश्रय लिया। ऐसे आल्वारों को मैं प्रणाम करता हूँ। भगीरथ ने स्वर्ग से गंगा नदी को लाकर कपिल मुनि के क्रोध से भस्म हुए अपने पितरों का उद्धार किया। उसी प्रकार, पराशर मुनि जैसे ऋषियों ने विष्णु पुराण, रामायण, भागवत आदि ग्रंथों को रचकर भगवान के ज्ञान से अनभिज्ञ मुझ जैसे लोगों को लक्ष्मी कान्त श्रीनिवास की दया रूपी दिव्य गंगा में स्नान करवा कर वैकुंठ जाने का अधिकारी बनाया।

बड़ी झील से नहर द्वारा पानी आकर फसल को सूखने से बचाता है। उसी प्रकार, विष्वक्सेन श्रीनिवास की दया रूपी झील से आकर सबके विघ्नों को दूर करके, उस दया को बाँटते हैं और इस प्रकार सबकी रक्षा करते हैं। ऐसे विष्वक्सेन को मैं प्रणाम करता हूँ। जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध देकर पोषण करती है, समस्त प्राणियों की माँ लक्ष्मी देवी ज्ञान

रूपी दूध देकर हम सबको वैकुंठ भेजती है। हे श्रीनिवास की दया देवी! तुम अंजनाद्रि पर्वत के स्वामी श्रीनिवास को आनंदित कर रही हो। मैं आपके सामने प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मेरे पापों से बचाओ। श्रीनिवास के पास रहने वाली हे दया देवी! तुम उन कठोर पापियों को उनके पापों से मुक्त करती हो, ऐसा ज्ञानी भक्तों ने निश्चित किया है।

हे दया देवी! श्रीनिवास को दयालु कहे जाने का कारण तुम ही हो। इसलिए, श्रीनिवास को छोड़कर सभी आपका ही आश्रय लेते हैं। पाप आपको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं। जब जीवात्माएँ श्रीनिवास की आज्ञा को भुला देती हैं, तो श्रीनिवास को क्रोध आ जाता है। श्रीनिवास अपना क्रोध शांत करने के लिए आपका ही आश्रय लेते हैं। हे दया देवी! आपके विशाल उदर को भरने के लिए मैंने बड़े-बड़े पाप किए हैं। हे दया देवी! तुमने बड़े-बड़े पापों को खाकर अपना पेट नहीं भरा, बल्कि छोटे-छोटे पाप करने वालों को ढूंढ रही हो। ऐसे में तुम कैसे जीवित रहोगी? (अर्थात हे दया देवी! तुम बहुत दयालु हो, मैंने बड़े-बड़े पाप किए हैं। इसलिए, यदि तुम दया करके मेरे पापों को नष्ट करोगी तो आपको संतुष्टि मिलेगी)। हे दया देवी! मैं पापियों का राजा हूँ और तुम सद्गुणों की रानी हो। दो राजाओं का एक जगह होना खतरनाक है। इसलिए, तुम मुझे पराजित करके अपने पति वेंकटेश्वर के चरणों में पहुँचा दो।

"हे दया देवी! आपकी इच्छा के अनुसार, भगवान विभिन्न अवतारों में जीवों द्वारा किए गए पापों के कारण उन्हें अनंत जन्म न लेने दें और उनकी रक्षा करें। वेद कई पुण्य कार्यों और भगवान के बारे में बताते हैं। तुच्छ बुद्धि वाले लोग पुण्य कार्यों को करने के बाद संसार सागर में डूब जाते हैं। हे दया देवी! जिनके पास आपकी दया है, वे पुण्य कार्यों को छोड़कर इस संसार के बंधनों से मुक्त होकर भगवान की सेवा करते हैं। बादल समुद्र से जल लेकर वर्षा के रूप में सभी जीवों को आनंदित करते हैं। हे दया देवी! इसी प्रकार, तुम श्रीनिवास रूपी समुद्र से सभी सद्गुणों को लेकर तिरुमला आए सभी लोगों को श्रीनिवास के सद्गुणों को बाँटती

हो। हे दया देवी! जैसे चातक पक्षी तालाबों, सरोवरों और नदियों का जल नहीं पीते, बल्कि केवल वर्षा का जल पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं, वैसे ही वेदों का सार जानने वाले भक्त देवताओं का आश्रय नहीं लेते, बल्कि केवल आपका आश्रय लेते हैं और श्रीनिवास के पास पहुँचते हैं।

श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णन

प्रतिवादि भयंकर अण्णन तमिलनाडु के कांचीपुरम के पास 'हस्तिगिरिनाथर अण्णन' नामक गाँव में 1361 में जन्मे थे। उन्होंने श्रीसंप्रदाय के 'मणवाल महामुनि' नामक आचार्य से दीक्षा ली। ये मणवाल महामुनि आदिशेष के अवतार है।

उन्होंने 29 श्लोकों वाला वेंकटेश्वर सुप्रभातम्, 11 श्लोकों वाला वेंकटेश्वर स्तोत्रम्, 16 श्लोकों वाली वेंकटेश्वर प्रपत्तिः, और 14 श्लोकों वाली वेंकटेश्वर मंगलाशासनम् की रचना की। इन्हें वेंकटेश्वर स्वामी को प्रातःकाल जागृत करने के समय पढ़ा जाता है।

वेंकटेश्वर स्तोत्र के कुछ श्लोकों का अर्थः "हे वेंकटेश्वर स्वामी! तुमने श्रीदेवी को गले लगाया, जिससे श्रीदेवी के शरीर पर लगी कुमकुम ने आपके शरीर को लाल बना दिया। इस जगत के नेता के रूप में आपको विजय ही विजय प्राप्त हो। ब्रह्मा, शिव और कुमारस्वामी समेत सभी देवताओं के स्वामी तुम हो। दयावश आप शरणगतों को रक्षा प्रदान करते हैं। हे वेंकटेश्वर स्वामी! मेरी भी रक्षा करो। हे श्रीहरि! मैंने कई बार अनगिनत पाप किए हैं। उन पापों को क्षमा करके इस मूर्ख की शीघ्र ही रक्षा करो। हे स्वामी! आप माँगे गए वरदानों से अधिक वरदान देने वाले हैं। वेद आपकी महिमा को स्वीकार करते हैं कि आप शिव और ब्रह्मा से भी श्रेष्ठ हैं।"

"हे गोपालस्वामी! आपके मनोहरणीय वेणु गान के कारण गोपिकाएँ आपकी चारों ओर एकत्रित हो जाती हैं। करोड़ों कामदेवों की सुंदरता से युक्त, आप सभी गोपिकाओं को आनंद देने वाले हैं। हे वासुदेव! मेरे लिए

आप ही एकमात्र हैं। अच्छे गुणों वाले, हे दशरथी! भूमि देवी की पुत्री सीता देवी को आप अत्यंत प्रिय और मनोहर हैं। रावणासुर जैसे अंधकार के लिए, आप सूर्य के समान हैं। हे रघुराम! महानुभाव! मैं आपकी शरण चाहता हूँ। मेरी रक्षा करें। हे वेंकटेश्वर स्वामी! मैंने बहुत दूर से आकर आपके चरणों की भक्तिमयी सेवा की है। यदि मैंने एक बार भी आपकी सेवा की हो, तो उस सेवा का परिणाम सदैव के लिए मुझे प्राप्त हो।"

श्री वेंकटेश्वर प्रपत्ति के कुछ श्लोकों का अर्थः "मैं इस संसार की अधिष्ठात्री देवी, वेंकटेश्वर स्वामी की प्रिया, स्वामी की सहनशीलता को बढ़ाने वाली, पद्म को अपने हाथ में धारण करने वाली, पद्मासन पर विराजमान लक्ष्मी देवी को नमन करता हूँ। लक्ष्मी देवी अपने कोमल पत्तों जैसे हाथों से प्रेम और भय के साथ वेंकटेश्वर स्वामी के कमल सदृश कोमल चरणों को धीरे-धीरे दबाती हैं, फिर भी जैसे मार मारने से लाल निशान उठ आते हैं, वैसे ही वेंकटेश्वर स्वामी के जिन चरणों पर भी लाल निशान आ जाते हैं, मैं उन चरणों की शरण लेता हूँ। हे वेंकटेश्वर स्वामी! आपने जो सुगंधित फूलों की माला धारण की है, वह आपके चरणों को स्पर्श करने के कारण और भी सुगंधित हो गई है। उन चरणों की सुंदरता को देखकर मैं आपकी शरण में आया हूँ।"

ध्वज, छत्र, अमृत कलश, वज्र, अङ्कुश, पद्म, कल्पवृक्ष, शंख और चक्र आदि चिन्हों से युक्त श्री वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों में मैं शरणागत होता हूँ। प्रतिदिन जब ब्रह्मा, शिव और इन्द्रादि देवता अपने मुकुटों से इन चरणों को नमस्कार करते हैं, तब उन मुकुटों के रत्नों की आभा से जो मंगल आरती के समान प्रकाश होता है, ऐसे प्रभु के चरणों की मैं शरण लेता हूँ। हे वेंकटेश्वर स्वामी! आपने अर्जुन के रथसारथी बनकर उसे उपदेश दिया और कहा, "मेरी शरण में आओ।" आज, मेरे लिए, आप पुनः यहाँ खड़े होकर अपने करकमलों से संकेत कर रहे हैं कि "मेरे चरणों की शरण में आओ।" ऐसे आपके उन पवित्र चरणों में मैं शरणागत होता हूँ।।

श्री वेंकटेश्वर मंगलाशासन के कुछ श्लोकों का भावार्थः "लक्ष्मीदेवी के पति, समस्त शुभताओं के धन के समान, इच्छाओं के दाता श्री वेंकटाचल निवासी श्रीनिवास का मंगल हो! लक्ष्मीदेवी को विस्मय से देखने वाले सुंदर नेत्रों वाले, अपनी सुंदरता से समस्त जनों को मोहित करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी का शुभ हो! वह अविनाशी, दोषरहित, सच्चिदानंद स्वरूप, श्रेष्ठ गुणों से युक्त, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान वेंकटेश्वर स्वामी की शुभता हो!

"समस्त मानव जाति के लिए अपने चरणों की शरण दिखाते हुए, अपने चरणों को अपने दाहिने हाथ से दिखाने वाले, और जिन्होंने फूलों की माला, आभूषण, पीतांबर, और आयुधों से सज्जित होकर अपनी शोभा बढ़ाई है, ऐसे वेंकटेश्वर स्वामी का कल्याण हो! वैकुंठ में निवास करना पसंद न करते हुए, स्वामि पुष्करिणि के किनारे लक्ष्मी देवी के साथ विहार करने वाले वेंकटेश्वर स्वामी का कल्याण हो! मनवाला महामुनि के मन में और समस्त लोकों में निवास करने वाले श्रीनिवास का कल्याण हो! हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा प्रशंसित और पूजा किए गए वेंकटेश्वर स्वामी का कल्याण हो!"

श्री वेंकटेश्वर स्वामी सुप्रभातम के लिए प्रकरण तीन में पृष्ठ संख्या 45 पर 'दर्शन विधि' को देखें।

श्री अन्नमाचार्य

ताल्लपाका नामक गाँव में जनमेजय महाराज द्वारा निर्मित चेन्नकेशव स्वामी का मंदिर स्थित है। चेन्नकेशव मंदिर के पुजारी विठलय्य भी कृषि कार्य किया करते थे। विठलय्य ने अपने एकमात्र पुत्र नारायणय्य को पढ़ाई के लिए नजदीक के वुटाकुरू भेज दिया।

नारायणय्य के गुरु दुर्वासा मुनि की तरह क्रोधित स्वभाव वाले थे। नारायणय्य की स्मरणशक्ति कमजोर थी। गुरु द्वारा दी गई कठिनाइयों के कारण नारायणय्य ने आत्महत्या करने की सोची। जब गाँव के लोग

चिंतालम्मा के मंदिर के पास स्थित एक वल्मीक में रहनेवाले साँप के बारे में बात कर रहे थे, तब नारायणय्य ने सुन लिया। नारायणय्य ने सर्पदंश से मरने की इच्छा रखकर एक रात वल्मीक में हाथ डाला । चिंतालम्मा प्रकट हुईं और पूछा, "तू क्यों मरना चाहता है ?" नारायणय्य ने अपनी और अपने गुरु की स्थिति बताई। चिंतालम्मा ने आशीर्वाद दिया, "तू एक महान पंडित बनेगा, और तेरा पोता वेंकटेश्वर स्वामी का भक्त बनेगा।" कालांतर में नारायणय्य एक पंडित बन गए। विवाह के बाद नारायणय्य को एक पुत्र हुआ, जिसे नारायणसूरी नाम दिया गया।

नारायणसूरी का विवाह लक्कमांब से हुआ था। ये दम्पति को कोई संतान न होने के कारण वे वेंकटाचलम गए और वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की कि, "हमें एक पुत्र दें, जो आपका भक्त हो।" वेंकटेश्वर स्वामी की कृपा से 1408 के मई 9 को विष्णु खड्ग (नंदक) ने पुत्र रूप में जन्म लिया। नारायणसूरी ने अपने जन्मे पुत्र का नाम अन्नामय्य रखा।

अन्नामय्य की माता लक्कमांब और घर के बड़े-बुजुर्ग उसे महाभारत, रामायण, भागवतम और वेंकटेश्वर स्वामी के माहात्म्य आदि की कहानियाँ सुनाया करते थे। अन्नामय्य खेल-खेल में दोस्तों के साथ घूमता रहता था। आठ साल की उम्र में एक दिन अन्नामय्य को घास काटने के लिए उसके माता-पिता ने कुल्हाड़ी देकर भेज दिया। घास काटते समय अन्नामय्य के अंगूठे में एक कट लग गया। उसी समय कुछ भक्त वेंकटाचलम जा रहे थे। अन्नामय्य भी उनके साथ वेंकटाचलम के विभिन्न तीर्थों में स्नान करते करते वेंकटाचलम चले गए। बाद में अन्नामय्य वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हुए वेंकटेश्वर स्वामी के गुणगान करने लगे थे।

अन्नामय्य न दिखाई देने पर उनके माता-पिता भी अन्नामय्य की खोज करते-करते वेंकटाचलम पहुँच गए। वहाँ अन्नामय्य को देखकर, उन्हें घर वापस आने के लिए कहा, लेकिन अन्नामय्य ने मना कर दिया। नारायणसूरी ने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "मेरे पुत्र को घर लौटने और विवाह करने के लिए कहिए।" उस रात वेंकटेश्वर स्वामी ने

अन्नामय्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा, "तू घर लौट कर विवाह कर और मेरे बारे में प्रचार कर।" अन्नामय्य ने वेंकटेश्वर स्वामी के कहे अनुसार घर लौटकर कुछ वर्षों बाद अक्कलम्मा और तिरुमलम्मा नामक दो कन्याओं से विवाह किया। अन्नमाचार्य ने आंध्र और तमिलनाडु के आसपास के क्षेत्रों में घूमते हुए वेंकटेश्वर स्वामी के बारे में प्रचार किया।

अन्नमाचार्य ने अहोबिलम के श्री शठगोपा मुनि से वैष्णव सिद्धांत सीखा और दीक्षा ली। अन्नमाचार्य ने अपने गुरु शठगोपा मुनि की स्तुति में एक कीर्तन इस प्रकार लिखा: "मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले, भक्तों के लिए सुलभ, हरि के प्रिय, शठगोपा मुनि का दर्शन करो। श्रीरंगनाथ, वरदराज स्वामी, वेंकटेश्वर स्वामी, और अहोबिलम के नरसिंह स्वामी की सेवा में श्रद्धा रखने वाले शठगोपा मुनि का दर्शन करो और उनका अभिवादन करो।"

वेंकटेश्वर स्वामी कीर्तन: अन्नमाचार्य ने वेंकटेश्वर स्वामी पर कई कीर्तन रचे। उनमें से कुछ कीर्तन की भावना निम्नलिखित है:

"कमल जैसे नेत्रों वाले, मुस्कान के साथ चमकते सुंदर शरीर वाले परमधाम। रेशमी धोती पर चमकते नंदक खड्ग, नाभि में कमल, शंख और चक्र से युक्त हाथ, वक्षस्थल में कौस्तुभमणि, गले में चमकते रत्नों का हार, सुनहरे हार, श्रेष्ठ भुजाकीरती, सफ़ेद मोतियों की माला, सिर पर हीरे का मुकुट, वेंकटेश्वर स्वामी अत्यंत सौंदर्य से सुशोभित हैं।"

"वेंकटेश्वर! मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिए आपका नाम ही पर्याप्त है। मुझे पवित्र बनाने के लिए आपका तीर्थ (चरणामृत) पर्याप्त है। मेरे पाप दूर करने के लिए आपका प्रसाद ही पर्याप्त है। मुझे महान बनाने के लिए आपकी सेवा पर्याप्त है। मुझे बचाने के लिए मेरे शरीर पर आपके तिलक के निशान पर्याप्त हैं। मेरे सुखी रहने के लिए आपका स्मरण ही पर्याप्त है। जब तुम मुझे हर प्रकार से बचा सकते हो, तो मुझे किसी और की तलाश क्यों करनी चाहिए?"

"हे वेंकटेश्वर स्वामी! सुबह हो रही है। हमारी विचित्र इच्छाओं को सुनने के लिए जागिए। आपकी सेवा करने के लिए देवता और मुनि आए हैं। (उनकी सेवा स्वीकार करने के लिए) अपनी कमल जैसे नेत्र खोलकर जागिए। गंधर्व, किन्नर और यक्ष आपकी स्तुति कर रहे हैं। (उनका कीर्तन सुनने के लिए जागिए)। आदिशेष, तुम्बुरु, नारद और ब्रह्मा आदि आपके चरणों में प्रणाम करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। (उनके नमस्कार स्वीकार करने के लिए जागिए)। जगन्माता अलमेलुमंग को अपनी आंखों से देखकर जागिए।"

"वेंकटेश्वर स्वामी की भुजाएँ बहुत लोगों को अभय देती हैं। मत्स्य अवतार में वेदों को खोजकर ब्रह्मा को लौटाने वाली भुजाएँ, कूर्म अवतार में मंदर पर्वत को उठाकर अपनी पीठ पर रखने वाली भुजाएँ, वराह अवतार में भूदेवी को आलिंगन करने वाली भुजाएँ, नरसिंह अवतार में पैने नाखूनों वाली भुजाएँ, वामन अवतार में बलि चक्रवर्ती से दान प्राप्त करने वाली भुजाएँ, परशुराम अवतार में बहुत लोगों को दान देने वाली भुजाएँ, राम अवतार में समुद्र को बाण से बुलाने वाली भुजाएँ, बलराम अवतार में हल धारण करने वाली भुजाएँ, कृष्ण अवतार में गोपियों को स्पर्श करने वाली भुजाएँ, और कल्कि अवतार में खड्ग धारण करने वाली भुजाएँ।

"वेंकटेश्वर स्वामी पर्वतों जैसे वरदान देते हैं। उन्होंने घड़े बनाने वाले कुम्हार भक्त (भीम) को इच्छित मुक्ति दिया, तोंडमान के बुलाने पर वहाँ गये, अनंताचार्य द्वारा खोदी गई मिट्टी उठायी, तिरुमल नंबि की प्रार्थना को सुना, कांची वरदराज स्वामी के भक्त तिरुक्कच्चि नंबि को बुलाया। जो भी उनका स्मरण करते हैं, वेंकटेश्वर स्वामी उनकी दयापूर्वक रक्षा करने वाले हैं।

"हे नारायण! आपको नमन है। जिनकी नारद मुनि और शिव द्वारा स्तुति कि जाती हैं, वे मुर राक्षस का संहार करने वाले, मुकुंद मणि धारण करने वाले, श्रीदेवी के प्रिय पति, गरुड़ को अपने वाहन के रूप में धारण

करने वाले, कमल जैसे नाभि वाले, पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ, बंधनों से मुक्त करने वाले। आपको नमन है। जो सूर्य और चंद्रमा को अपने नेत्रों के रूप में धारण करते हैं, ब्रह्मा द्वारा स्तुति किए जाते हैं, क्षीर सागर में शयन करते हैं, बलि चक्रवर्ती को बाँधने वाले, गोपियों के प्रिय, देवताओं में श्रेष्ठ देव, जिनकी चार वेदों द्वारा स्तुति कि जाती हैं वे, हे वेंकटेश्वर! मुझ पर कृपा करने वाले, आपको नमन है।"

"ब्रह्मा ने वेंकटेश्वर के चरणों को धोया (अभिषेक किया)। वामन अवतार में पृथ्वी को मापने वाले चरण। बलि चक्रवर्ती के सिर पर रखे गए चरण। आकाश को व्यापने वाले चरण। इंद्र को बचाने वाले चरण। अहल्या के पापों को दूर करने वाले चरण। कालिय नाग के सिर पर नृत्य करने वाले चरण। लक्ष्मी देवी द्वारा सेवा किए जाने वाले चरण। योगियों को बचाने वाले चरण। श्रेष्ठ वेंकटगिरि पर स्थित स्थिर चरण, मुक्ति प्रदान करने वाले चरण।

श्रीकृष्ण कीर्तनः अन्नमाचार्य ने कृष्ण पर कई कीर्तन रचे। उनमें से कुछ कीर्तन की भावना निम्नलिखित है:

"यशोदा माता को आधी रात में एक पुत्र प्राप्त हुआ। उसने पूतना का दुग्धपान किया और उसके साथ-साथ उसके प्राण भी हर लिए, गायों को चराया, बैलगाड़ी (शकट) को लात मारकर तोड़ दिया, यमलार्जुन वृक्षों को गिराया, अपनी छोटी उंगली से पर्वत उठाया, गोपियों के साथ रासलीला की। वह मुरली धारण करने वाला, कालिय नाग के अहंकार को दबाने वाला, कंस का संहार करने वाला, देवताओं पर शासन करके अपना प्रभुत्व दिखाने वाला, 16,000 रानियों का पालन करने वाला है।

"हे यशोदा माँ! कृष्ण के शरीर को झुलाओ मत, ऐसा करने से उनके पेट में बसे संसार हिल जाएँगे। दूध उबल रहा है, उस दूध के पास से कृष्ण को दूर ले जाओ। हमारे बाल-कृष्ण की पतली कमर को पकड़कर उठाने पर उनके पेट के संसार दब जाएँगे, इसलिए ऐसा मत करो। हे माँ!

कृष्ण को परेशान किए बिना पालने में सुला दो। वेंकटाचल में वेंकटेश्वर (कृष्ण) को अपनी कठोर बातों से दंड मत दो।

"हे कृष्ण! तुमने गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली से उठाया, फिर भी गोपिकाएँ आपकी शक्ति को नहीं समझ सकीं और तुम पर आरोप लगाती रहीं। यह छोटा कृष्ण देवकी से जन्म लेकर यशोदा के पास बड़ा होने आया। चौदह लोकों के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के लिए यह बाल कृष्ण पिता है। कई बार कृष्ण उड़कर घर की छत पर मक्खन के मटकों को तोड़ते थे। एक गोपिका कृष्ण को मारने गई, तो दूसरी गोपिका ने कहा, 'हे माँ! कृष्ण को मत मारो। इतने सुंदर कृष्ण को देखकर तुम कैसे मार सकती हो?' शाम को सारे गाँव के घरों का मक्खन खाकर कृष्ण घर लौटता था। गोपिकाएँ कृष्ण की शिकायत करती थीं। गोपिकाओं की शिकायत सुनकर जब यशोदा माँ क्रोधित होकर शाम को घर लौटे कृष्ण को मारने जाती थीं, तब कृष्ण कहते थे, 'माँ! माँ! मुझे मत मारो। मैंने कोई गलत काम नहीं किया' यह कहते हुए कृष्ण माँ यशोदा के पैर पकड़ लेता था। कई बार जब गोपिकाएँ कृष्ण की शिकायत करने आतीं, तो मासूम बनकर यशोदा माँ के पास दूध पीता रहता। सभी का मूल कारण कृष्ण अब वेंकटाचल में वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्रकट हुआ है।

"पालने में सोए बाल-कृष्ण को गोपियाँ देखकर पालने के पास आकर उसे झुलाने लगतीं। नवयुवती गोपिकाएँ स्वर्ण पालने के पास आकर सोते हुए शिशुओं को सुलाने के गीत गाते हुए 'लाली लाली लालम्मा' गातीं। कमल की पंखुड़ियों जैसी आँखों वाली गोपिकाएँ पायल की मंद-मंद ध्वनि करतीं, और वेंकटेश्वर (बाल-कृष्ण) को पाकर नाचतीं।

श्रीराम कीर्तन: अन्नमाचार्य ने राम पर कई कीर्तन रचे। उनमें से एक कीर्तन की भावना निम्नलिखित है:

"हे राम! समुद्र को धमकाकर लक्ष्मण को आनंदित करने वाले। शिव का धनुष तोड़कर सीतादेवी से विवाह करने वाले। सुग्रीव की रक्षा

करके कोसल देश (अयोध्या) पर शासन करने वाले। विश्वामित्र मुनि के यज्ञ की रक्षा करने वाले, हे कौशल्या के पुत्र! हे राम! आपकी जय हो! जय हो! अपने शत्रु रावण का संहार करने वाले। सूर्यवंश में जन्म लेने वाले। धनुष धारण करके मुनियों की रक्षा करने वाले। अहल्या का उद्धार करने वाले। शिव की पत्नी पार्वती द्वारा स्तुति प्राप्त करने वाले। अपने प्रताप से मारीच का संहार करने वाले। लव-कुश के प्रिय। अच्छे गुणों वाले राम। "हे मेरे हृदय में हमेशा विराजमान राम! कामदेव से भी सुंदर राम! भक्तों के हृदय में सदा बसे रहने वाले राम! सुंदर अयोध्या में निवास करने वाले राम अब हमारे सामने वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में उपस्थित हैं। उस वेंकटेश्वर स्वामी को प्रणाम कर उनकी सेवा करें।"

हरिनाम के बारे में: अन्नमाचार्य ने हरिनाम पर कई कीर्तन रचे। उनमें से कुछ कीर्तन की भावना निम्नलिखित है:

"वेंकटेश्वर, आपका नाम ही हमारा आधार है। वही हमारा संचित धन है। आपका नाम ही जीव और आपके बीच का अंतर स्पष्ट करता है। वेंकटेश्वर, गोविंद, श्रीधर, पद्मनाभ, दामोदर, कृष्ण जैसे आपके नामों को मेरा नमस्कार।

"सभी मंत्र वेंकटेश्वर मंत्र में ही समाहित हैं। नारद मुनि ने हमेशा नारायण मंत्र की स्तुति की। हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद को नरसिंह मंत्र प्राप्त हुआ। विभीषण को श्रीराम मंत्र प्राप्त हुआ। ध्रुव को वासुदेव मंत्र प्राप्त हुआ। अर्जुन को श्रीकृष्ण मंत्र प्राप्त हुआ। व्यास के पुत्र शुक ने नारायण को सामने देखकर 'ॐ नमो नारायणाय' मंत्र का जप किया। मेरे गुरु शठगोपमुनि के माध्यम से मुझे चंद्रमा जैसे वेंकटेश्वर मंत्र प्राप्त हुआ।

"भक्तों! भूख लगने पर, थकावट के समय, बंदी होने पर, सुंदर और प्रकाशवान श्रीहरि का नाम ही मार्ग है। कोई अन्य मार्ग नहीं है। संकट में होने पर, दूसरों द्वारा अपमानित होने पर, पाप करने पर, भय होने पर, हरिनाम ही मार्ग है। श्रीहरिनाम को छोड़कर अन्य मार्ग खोजने पर भी

कोई अन्य गंतव्य नहीं मिलता। जब ज़ंजीरों से बंधे हो, दूसरों द्वारा मारे जाने की धमकी हो या ऋणदाता द्वारा प्रताड़ित होने पर वेंकटेश्वर नाम ही सभी कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है। मूर्खता से यदि तुम किसी अन्य मंत्र की तलाश भी करोगे, तो भी तुम्हें कोई और मार्ग नहीं मिलेगा।

"भक्तों के कष्ट, क्रोध, और परेशानियों को नष्ट करने वाला वेंकटेश्वर का नाम सभी को आनंद देता है। हरिनाम सभी प्राणियों की रक्षा करता है। इसलिए, वेदों से श्रेष्ठ हरिनाम का सदा जप करें। हरिनाम सभी के लिए सुलभ है। यह मुक्ति प्रदान करता है। ब्रह्मा हमेशा हरिनाम का जप करते हैं। हिमवान की पुत्री पार्वतीदेवी मन में हरिनाम का स्मरण करती हैं। हरिनाम रूपी अमृत क्या आपके लिए पर्याप्त नहीं है? इससे अधिक स्वादिष्ट और क्या हो सकता है? जन्म-मृत्यु से मुक्त होने के लिए, दस हजार नरक गड्ढों को मिटाने के लिए, गरीबी और दोषों को हटाने के लिए, पापों के अंधकार को दूर करने के लिए, कल्पवृक्ष (इच्छाओं को पूरा करने वाला पेड़) के समान हरिनाम ही पर्याप्त है।

कलियुग की शिक्षा: अन्नमाचार्य ने कलियुग की शिक्षा पर एक कीर्तन इस प्रकार लिखा है:

"इस कलियुग में जो भी शिक्षा है, वह उसी दिन के लिए सीमित है। (इस जन्म की शिक्षा इस जन्म के लिए, अगले जन्म की शिक्षा अगले जन्म के लिए)। पिछली पीढ़ी ने वेंकटेश्वर को जानने के लिए पढ़ाई की थी। कलियुग की शिक्षा वेंकटेश्वर को भूलने के लिए होती है। निर्माता (भगवान) का तिरस्कार करने के लिए कलियुग की शिक्षा काम करती है। ब्राह्मणों ने वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए पढ़ाई की। संपत्ति और भौतिक सुख देने वाली शिक्षा वेंकटेश्वर को भूलने के लिए है। जो शिक्षा विष्णु को मन में स्थापित नहीं कर सकती, वह व्यर्थ है।"

आध्यात्मिक कीर्तन: अन्नमाचार्य ने आध्यात्मिक ज्ञान को सिखाने वाले कई कीर्तन रचे। उनमें से कुछ कीर्तन की भावना निम्नलिखित है:

"जीवित मनुष्य किसका है? किसका क्या बनता है? यह आत्मा (जीव) पिछले जन्मों में कई लोगों के बेटे के रूप में जन्मी है। कई लोगों की बहन के रूप में जन्मी है। कई लोगों के रिश्तेदार के रूप में जन्मी है। इस जन्म में वह कई लोगों को दु:खी कर रही है। अगले जन्म में भी वह कई लोगों को दु:खी करेगी। यह आत्मा कहाँ-कहाँ घूमती है? कितनी जगहों पर जन्म लेकर कितने लोगों को रिश्तेदार बना चुकी है? अगले जन्म में यह आत्मा कहाँ जाएगी? सोचने पर पता चलता है कि आत्मा का कोई स्थायी स्थान नहीं है। आत्मा द्वारा धारण किए गए शरीर नष्ट हो जाते हैं, लेकिन जीवात्मा (आत्मा) नष्ट नहीं होती। वेंकटेश्वर की माया के कारण यह जीवात्मा अनेक जन्मों को धारण करके पुत्र, भाई, पिता, दादा आदि पद प्राप्त कर रही है।

"जन्म सत्य है, मृत्यु सत्य है, बीच का जीवन एक नाटक है। खाने के लिए अन्न है, ओढ़ने के लिए वस्त्र है। इन दोनों के लिए होने वाला संघर्ष भी एक नाटक है। यह आत्मा किसकी है? किसकी क्या बनती है? इसलिए आत्मा और इस संसार को जानकर मुक्ति प्राप्त करो।

"स्वप्न में देखे गए सपनों की तरह संपत्ति अस्थायी है। पारिवारिक प्रेम आकाश में बिजली की चमक की तरह है। हे मन! अस्थायी सुखों का दास मत बनो। यह संसार नष्ट हो जाएगा। यह संसार सभी को मोह में डालता है। शरीर बूढ़ा हो जाएगा लेकिन मन यौवन में ही रहकर इच्छाएँ पैदा करता रहेगा। हे मन! (जीव) हर शाम मृत्यु है, हर सुबह जन्म है। हे जीव! यदि तुम्हें संतोष है, तो थोड़ा मिलना भी संतोषजनक होगा। यदि संतोष नहीं है, तो पूरा संसार मिलना भी पर्याप्त नहीं होगा। हे जीव! यौवन की इच्छाओं को पूरा करना आपके वश की बात नहीं है। तालाब में जितना भी पानी हो, कमल का पौधा उससे ऊँचा उठता है। इसी प्रकार, तुम्हारी शक्ति कितनी भी हो, तुम्हारी इच्छाएँ उससे अधिक होंगी। जीवन भर काम करने पर भी इच्छाएँ पूरी नहीं होंगी। इसलिए भौतिक इच्छाओं को छोड़कर लक्ष्मीपति (वेंकटेश्वर स्वामी) की शरण लो।

"वेंकटेश्वर! मैं जीवन यात्रा करते-करते (इतने दिन जीकर) बहुत थक गया हूँ। अब और यात्रा (जीना) करने की शक्ति नहीं है। अब तुम ही मुझे बचाओ। मेरी इच्छाएँ आपके आशीर्वाद के बिना पूरी नहीं होंगी। पाप और पुण्य की ज़ंजीरें इस जीव को बाँधती हैं। तुम उन पाप-पुण्यों की ज़ंजीरों को तोड़कर मुक्ति प्रदान करो।

पेनुगोंडा के शासक साल्व नरसिंह राय ने अन्नमाचार्य को अपने दरबार में गुरु नियुक्त किया था। अन्नमाचार्य वेंकटेश्वर स्वामी और पद्मावती देवी की स्तुति में कीर्तन गाते थे। इन कीर्तनों को सुनकर नरसिंह राय ने अन्नमाचार्य से कहा कि वे उनके बारे में भी एक कीर्तन गाएँ। अन्नमाचार्य ने "हरि! हरि!" कहते हुए अपने कान बंद कर लिए और बोले, "जीभ नारायण की स्तुति के लिए है, न कि मानव की स्तुति के लिए।"

इन अपमानजनक शब्दों को सुनकर, नरसिंह राय ने अन्नमाचार्य को ज़ंजीरों से बाँधकर जेल में डाल दिया। जेल में अन्नमाचार्य ने वेंकटेश्वर स्वामी को प्रार्थना करते हुए कीर्तन गाए, और ज़ंजीरें टूट गईं। सिपाहियों ने यह बात राजा को बताई। राजा ने स्वयं आकर देखा और ज़ंजीरें को नीचे पड़ा पाया। फिर राजा ने स्वयं अन्नमाचार्य को ज़ंजीरों से बाँधा, और देखते ही ज़ंजीरें फिर से टूट गईं। तब राजा ने अन्नमाचार्य के चरणों में गिरकर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। अन्नमाचार्य ने राजा को क्षमा किया और भक्तों का इस प्रकार अपमान न करने की सलाह दी। अन्नमाचार्य ने राजाओं के पास रहने की बजाय तिरुमला जाकर वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा करते हुए भक्तों के साथ रहने का निश्चय किया।

भक्तों को राजाओं और धनवानों की आवश्यकता नहीं है — अन्नमाचार्य का कीर्तन: "हम विष्णु भक्त हैं, इसलिए जन्म से ही धनवान हैं। हमें पद प्राप्त करने वाले राजाओं का धन नहीं चाहिए। हमने लक्ष्मी देवी के पति की शरण ली है, इसलिए अन्य लोगों की संपत्ति की हमें आवश्यकता नहीं है। उनके द्वारा हमें धन दिये जाने की जरूरत नहीं है। इस धरती पर प्राप्त सभी संपत्ति भूदेवी से प्राप्त होती है। भूदेवी नारायण की

पत्नी हैं। हम नारायण के दास हैं। इसलिए, नारायण हमें बचाएँगे और सभी संपत्तियों से संपन्न करेंगे। इस लोक के पद ब्रह्मा द्वारा दिए जाते हैं। ब्रह्मा के पिता नारायण हैं। नारायण ही हमारे स्वामी हैं। ब्रह्मा द्वारा नियुक्त स्वामियों की हमें आवश्यकता नहीं है। हे भक्तो! आप चाहे कितने भी पुराण और शास्त्र पढ़ लें, उनमें कहीं भी विष्णु भक्त के विनाश का उल्लेख नहीं मिलता।

अन्नमाचार्य ने 32 हजार कीर्तनों की रचना की, जिन्हें उनके पुत्रों ने ताम्रपटों पर अंकित करके वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में सुरक्षित रखा। इन संकीर्तन को रखने वाले कमरे को 'संकीर्तन अरा' कहा जाता है।

पहले वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह उत्सव के समय ही होता था। अन्नमाचार्य ने नित्य कल्याणम की व्यवस्था की। इस नित्य कल्याणम को प्रारंभ करने के लिए, वेंकटेश्वर स्वामी ने अन्नमाचार्य को 'मामा' कहकर संबोधित किया। अन्नमाचार्य ने 95 वर्ष की आयु में 1503 में शरीर त्याग कर वैकुंठ प्राप्त किया।

श्रीपादराज तीर्थ (श्रीपादरायलु)

मध्व संप्रदाय के श्रीपादराज तीर्थ का जन्म 1412 में कर्नाटक के अब्बूर गाँव में गिरिअम्मा और शेषगिरिअप्पा दंपति के यहाँ हुआ। उनका जन्म नाम 'लक्ष्मीनारायण' था और उनका संन्यास नाम 'श्रीपादराज तीर्थ' था।

चंद्रगिरि के शासक साल्व नरसिंह ने श्रीपादराज तीर्थ से तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा करने का अनुरोध किया। श्रीपादराज तीर्थ ने इसे स्वीकार किया और अपने प्रशिक्षित शिष्य व्यास तीर्थ को तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा की जिम्मेदारी सौंपी।

श्रीपादराज तीर्थ ने कई बार वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए और कई कीर्तन लिखे। उनमें से कुछ कीर्तन का भाव इस प्रकार है:

"शेषाचल में निवास करने वाले और दर्शन देने वाले ओ वेंकटेश्वरा! मेरी जीभ के लिए आपका हरिनाम ही अलंकरण है, मेरे पैरों के लिए आपके धाम में चलकर आना ही अलंकरण है, मेरे कानों के लिए आपकी कथा का श्रवण ही अलंकरण है, मेरे हाथों के लिए आपकी सेवा करना ही अलंकरण है, मनुष्यों के लिए सम्मान ही अलंकरण है, मुनियों के लिए ज्ञान ही अलंकरण है, आपके मंदिर के लिए तुलसी वन ही अलंकरण है, पतिव्रता के लिए पति की सेवा करना ही अलंकरण है।"

"पापों को नष्ट करने वाले ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो। महिमा को प्रदर्शित करने वाले ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो। लक्ष्मी देवी के साथ निवास करने वाले ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो। ब्रह्माजी के पिता ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो। गजेंद्र की रक्षा करने वाले ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो। सभी को मोहित करने वाले सुंदर रूप वाले ओ वेंकटेश्वरा! आपकी जय हो, जय हो।"

"श्रीनिवासा! आप ज्ञानी (भक्तों) को दर्शन देने वाले हो। अज्ञानी (अभक्तिहीनों) को आप दर्शन नहीं देते। आप अपने भक्तों के हृदय में प्रकाशित होते हो, उन्हें उबारते हो, नश्वर जीवों के लिए अनेक अवतारों को धारण करने वाले हो, और आपको स्मरण करने वाले व्यक्तियों के पापों को नष्ट कर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त करने वाले हो।"

श्री व्यास तीर्थ

व्यास तीर्थ का जन्म 1447 में कर्नाटक के बन्नूर गाँव में मल्लन और अक्काम्मा नामक ब्राह्मण दंपति के यहाँ हुआ था। उन्होंने मध्व संप्रदाय के ब्रह्मण्य तीर्थ से संन्यास लिया। उनका संन्यास नाम 'व्यास तीर्थ' था।

चंद्रगिरि के शासक साल्व नरसिंह ने मध्व संप्रदाय के श्रीपादराज तीर्थ से तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा की जिम्मेदारी लेने का

अनुरोध किया। श्रीपादराज तीर्थ ने यह अनुरोध स्वीकार किया और अपने प्रशिक्षित शिष्य व्यास तीर्थ को तिरुमला भेजा। व्यास तीर्थ ने श्रीपादराज तीर्थ की इच्छा अनुसार 12 वर्षों तक वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा की।

व्यास तीर्थ ने वेंकटेश्वर स्वामी की इस प्रकार स्तुति की: "वेंकटेश्वर स्वामी के चरण आनंद का निवास हैं। वे चरण स्वर्ण ज़ंजीरों से अलंकृत हैं। उन चरणों का सभी को दर्शन करना चाहिए और उन्हें पूजन करना चाहिए।

"दो हाथों में शंख और चक्र धारण किए, तीसरे हाथ से अपने चरणों की शरण में आने का संकेत करते हुए, और चौथे हाथ से सबको अभयता का आशीर्वाद प्रदान करते हुए।

"माणिक्य के समान चमकते वेंकटेश्वर स्वामी, सिर पर मुकुट, माथे पर तिलक, कानों में कुंडल, गले में श्रीवत्स और कौस्तुभ मणि, स्वर्ण आभूषणों से सज्जित, रेशमी पीतांबर पहने, करोड़ों कामदेवों को भी आकर्षित करने वाला सुंदर रूप धारण करनेवाले वेंकटेश्वर स्वामी की मैं भक्ति करता हूँ।"

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु

भगवान हर युग में इस भौतिक संसार में अवतरित होते हैं। कोई भगवान को अवतरण का आदेश नहीं देता। भगवान जीवों पर दया दिखाने के लिए अवतार लेते हैं। पंडित भी इस बात को समझ नहीं पाते कि भगवान कैसे पृथ्वी पर अवतरित हो सकते हैं। लेकिन श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है, "धर्म की रक्षा, साधुओं की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए मैं हर युग में अवतरित होता हूँ।" शास्त्रों में भगवान के अवतारों का वर्णन आचार्यों द्वारा स्वीकार किया गया है।

दुर्भाग्यवश, इस कलियुग में कुछ अभक्त आम-जनता को धोखा देने के लिए "मैं ही भगवान हूँ" कहकर स्वयं भगवान होने का स्वांग करते

हैं। शास्त्र ज्ञान से वंचित लोग उनकी बातों पर विश्वास करके धोखा खा रहे हैं। विष्णु पुराण में कहा गया है, "भगवान से अधिक शक्ति, धन, कीर्ति, सौंदर्य, ज्ञान और वैराग्य वाला कोई नहीं है।" जो खुद को भगवान कहता है, उसमें ये छह गुण होने चाहिए। यदि ये छह गुण नहीं हैं, तो उसे धोखेबाज माना जाना चाहिए।

शास्त्रों के आधार पर भगवान को पहचानने में असमर्थ होने पर, हमें ऐसे ढोंगी के साथ नर्क जाना पड़ेगा। श्रीकृष्ण भगवान के स्वयं अवतार, श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु कहते हैं, स्वयं को भगवान घोषित करने वाले भगवान नहीं हैं। चैतन्य महाप्रभु स्वयं भगवान होते हुए भी, अपनी भक्ति का आनंद लेने और दूसरों को भक्ति सिखाने के लिए भक्त के रूप में अवतरित हुए। इसीलिए इस अवतार को गुप्त अवतार या अज्ञात अवतार कहा जाता है।

सत्ययुग में विष्णु का ध्यान करने से, त्रेतायुग में यज्ञ करने से और द्वापरयुग में भगवान के चरणों की सेवा करने से जो फल मिलता है, वही फल कलियुग में केवल संकीर्तन (भजन) से प्राप्त किया जा सकता है। भागवत में बताया गया है कि कलियुग का युगधर्म "हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे" संकीर्तन है, जिसे श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने प्रारंभ किया।

चैतन्य महाप्रभु की परम्परा के भक्तों ने इस संकीर्तन आंदोलन को पूरे भारत में फैलाया। इसी परम्परा में भक्तिवेदांत स्वामी ने 1966 में न्यूयॉर्क शहर में 'अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ' (इस्कॉन) की स्थापना की और इस संकीर्तन आंदोलन को पूरी दुनिया में प्रचारित किया।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के बारे में पुराणों में इस प्रकार बताया गया है:

> गर्ग मुनि ने श्रीकृष्ण का नामकरण करते समय नंद महाराज से कहा, "आपका पुत्र हर युग में अवतरित होता है। जो पिछले युगों में सफ़ेद,

लाल और पीले रंग में अवतरित हुए थे, वह अभी कृष्ण रूप में अवतरित हुए हैं।" (श्रीमद्भागवतम 10.8.13)

प्रह्लाद महाराज ने भागवत में नरसिंह स्वामी की स्तुति करते समय चैतन्य महाप्रभु के बारे में इस प्रकार बताया:

हे देव! इस प्रकार आप नर, पशु, ऋषि, देवता, मछली, कूर्म आदि रूपों में अवतरित होकर समस्त लोकों का पालन करते हुए दानवों का संहार करते हो। हे स्वामी! युगानुसार आप धर्म की रक्षा करते हो। लेकिन कलियुग में आप अपने को भगवान नहीं कहोगे, इसलिए आप त्रियुग (तीन युगों में प्रकट होने वाले) के नाम से जाने जाओगे। (श्रीमद्भागवतम 7.9.38)

कलियुग में बुद्धिमान लोग संकीर्तन (भजन) द्वारा कृष्ण का गुणगान करने वाले भगवान के अवतार की पूजा करेंगे। कृष्ण का संकीर्तन करने वाले इस भगवान का रंग काला नहीं होगा। वह स्वयं कृष्ण भगवान होंगे। इस भगवान के साथ अनुयायी भी होंगे। (श्रीमद्भागवतम 11.5.32)

श्री चैतन्य महाप्रभु के नामों का अर्थ (महाभारत - अनुशासन पर्व - विष्णु सहस्रनाम):

"**सुवर्ण वर्ण** - सोने जैसे पीले शरीर वाले।

"**हेमांग** - सोने जैसे सुंदर चमकते शरीर वाले। "वरांग- उत्तम अंगों वाले।

"**संन्यास कृच्छम** - संन्यास धर्म को स्वीकार करने वाले।"

"**निष्ठा शांति परायण** - सभी प्राणियों को समान भाव से देखते हुए भगवान की भक्ति सिखाने वाले।"

देवताओं ने नारायण की इस प्रकार स्तुति की:

"हे नारायण! आप कलियुग में पतित जीवों पर करुणा करके स्वर्ण रंग में शचीदेवी के पुत्र के रूप में अवतरित होकर अपनी भक्ति का साधन करते हुए सभी को भक्ति सिखाओगे।" (भविष्योत्तरपुराण - प्रतिसर्ग 4.9.32)

पुराणों में इस प्रकार वर्णित श्रीकृष्ण भगवान के अवतार, श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु, वर्तमान बंगाल राज्य के नवद्वीप स्थित मायापुर में जगन्नाथ मिश्रा और शचीदेवी नामक ब्राह्मण दंपति के घर 1486 में अवतरित हुए। श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु का जन्म नाम 'विश्वंभर' था। श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने पहले लक्ष्मीप्रिया से विवाह किया। लक्ष्मीप्रिया के शरीर त्यागने के बाद उन्होंने विष्णुप्रिया से विवाह किया।

जैसे श्रीकृष्ण ने स्वयं भगवान होते हुए भी, लोक शिक्षा के लिए सांदीपनि को गुरु रूप में स्वीकार किया, उसी प्रकार श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने भी, भगवान होते हुए भी, लोक शिक्षा के लिए मध्व संप्रदाय के माधवेन्द्रपुरी के शिष्य ईश्वरपुरी से हरिनाम मंत्र दीक्षा ली। 24 वर्ष की आयु में उन्होंने केशव भारती से संन्यास ग्रहण किया। उनका संन्यास नाम 'श्रीकृष्ण चैतन्य' था।

चैतन्य महाप्रभु ने हरिनाम संकीर्तन करते हुए कई मायावादियों को कृष्ण भक्त बना दिया। चैतन्य महाप्रभु ने पुरी में 24 वर्ष बिताए। चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ 'चैतन्य भागवत', 'चैतन्य चरितामृत' और 'चैतन्य मंगल' में विस्तृत रूप से वर्णित हैं।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने जगन्नाथपुरी को अपना निवास केंद्र बनाकर तीर्थयात्राएँ कीं। विभिन्न तीर्थस्थलों के कुंडों में स्नान करते हुए, वहाँ के अर्चा मूर्तियों के दर्शन करते हुए, उन्होंने तिरुपति में कोदंडराम स्वामी के दर्शन किए और तिरुमला जाकर वेंकटेश्वर स्वामी के भी दर्शन किए।

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के बाद श्रीकालहस्ति जाकर वहाँ के श्रीकालहस्तिश्वर के भी दर्शन किए।

श्री नित्यानंद प्रभु

पाँच हजार वर्ष पहले आदिशेष ने बलराम के रूप में अवतार लिया था। वही बलराम वर्तमान बंगाल राज्य के बिरभुम जिले के एकचक्रपुर नामक गाँव में हाडाई पंडित और पद्मावती देवी नामक ब्राह्मण दंपति के घर 1473 में श्री नित्यानंद प्रभु के रूप में अवतरित हुए। वनवास के समय पाण्डवों ने कुछ दिनों के लिए इस एकचक्रपुर में निवास किया था। उसी समय भीम ने बकासुर का संहार भी किया था।

नित्यानंद प्रभु का जन्म नाम 'कुबेर पंडित' था। वे अपने मित्रों के साथ हमेशा रामायण, भागवत, और श्रीकृष्ण की लीलाओं को खेल के रूप में खेलते रहते थे। इन लीलाओं का नित्य (हर समय) स्मरण करते और खेलते हुए आनंदित रहने के कारण उन्हें 'नित्यानंद' नाम मिला।

एक बार एक संन्यासी तीर्थयात्रा करते हुए एकचक्रपुर में हडाई पंडित के घर अतिथि के रूप में आए। हडाई पंडित ने संन्यासी की अतिथि सेवा की। संन्यासी के विदा होते समय, उन्होंने हडाई पंडित से पूछा, "क्या आप अपने पुत्र को मेरे साथ भेज सकते हो?" हडाई पंडित संन्यासी की बात को नकार नहीं सके और अपने पुत्र नित्यानंद को उनके साथ भेज दिया। बारह वर्ष की आयु में संन्यासी के साथ निकले नित्यानंद प्रभु ने विभिन्न तीर्थस्थलों का दर्शन किया और पंढरपुर पहुँचे। उसी समय माधवेन्द्रपुरी भी वहाँ तीर्थयात्रा कर रहे थे। नित्यानंद प्रभु ने माधवेन्द्रपुरी से दीक्षा ली। नित्यानंद प्रभु ने वहाँ से विभिन्न तीर्थस्थलों का दर्शन करते हुए वेंकटाचल में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए।

बाद में, श्रीकृष्ण भगवान के अवतार श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के नेतृत्व में गृहस्थ आश्रम को स्वीकार कर, कृष्ण भक्ति का साधन करते हुए उन्होंने श्रीकृष्ण का प्रचार किया। नित्यानंद प्रभु की लीलाओं को चैतन्य चरितामृत, चैतन्य भागवत और चैतन्य मंगल में विस्तार से वर्णित किया गया है।

श्री वल्लभाचार्य

वल्लभाचार्य का जन्म 1479 में मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के चंपारण्य नामक गाँव में लक्ष्मण भट्ट और एलम्मा नामक ब्राह्मण दंपति के यहाँ हुआ था।

लक्ष्मण भट्ट, वल्लभाचार्य के जन्म के बाद, अपने गाँव कांकरवाड़ा (या कंकरवाड़ा) जो वर्तमान में आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर स्थित है, वहाँ चले गए थे। जब वल्लभाचार्य 11 वर्ष के थे, लक्ष्मण भट्ट अपनी पत्नी एलम्मा और वल्लभाचार्य के साथ तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए आए थे। वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के बाद, लक्ष्मण भट्ट तिरुमला से ही भगवद्धाम वापस चले गये। वल्लभाचार्य अपनी माता के साथ तिरुमला से अपने पैतृक गाँव लौट आए। वल्लभाचार्य जी तीर्थयात्राओं के दौरान अपने शिष्यों के साथ तिरुमला पहुंचे। वहाँ उन्होंने स्वामि पुष्करिणि में स्नान किया और श्री वराहस्वामी एवं श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए।

श्री वादिराज तीर्थ

मध्व संप्रदाय के वादिराज तीर्थ का जन्म 1480 में कर्नाटक के उडुपी के पास स्थित 'हुविनकेरे' गाँव में गौरी और रामाचार्य नामक दंपति के यहाँ हुआ। वादिराज तीर्थ ने वागीश तीर्थ से संन्यास ग्रहण किया। जब उन्होंने तिरुमला का दर्शन किया, तो उन्हें तिरुमला पर्वत शालिग्राम के रूप में दिखाई दिया, और उन्होंने घुटनों पर चलकर पर्वत की चढ़ाई की और श्रीनिवास को शालिग्राम माला अर्पित की। वादिराज तीर्थ ने श्रीनिवास पर कई कीर्तन रचे, जिनमें से दो की भावना निम्नलिखित है:

"प्रकाशमान वेंकट पर्वत पर निवास करने वाले श्रीनिवास, मुझे सदा बचाओ! सभी देवता श्रीनिवास के दास हैं। श्रीनिवास ऊँचे पर्वत पर खड़े होकर अपने भक्तों को देख रहे हैं और उनकी रक्षा कर रहे हैं।

दो हाथों में शंख और चक्र धारण किए, तीसरे हाथ से अपने चरणों की ओर इशारा करते हुए, और चौथे हाथ से अभय प्रदान करते हुए। 'जो भी मेरे चरणों को स्मरण करेगा, उसे इस भवसागर से पार कराऊँगा,' ऐसा अभय दे रहे हैं।

"शेषनाग पर शयन करने वाले नारायण अब अपने भक्तों की रक्षा के लिए शेषाचल पर खड़े हैं। उन्होंने राम अवतार में शेषनाग के अवतार लक्ष्मण की सेवा स्वीकार की, और कृष्ण अवतार में शेषनाग के अवतार बलराम का सम्मान किया। नारायण के भक्तों में शेषनाग प्रमुख हैं। ब्रह्मा और शिव जैसे देवता श्रीनिवास के दास हैं। वेंकटगिरिनाथ (श्रीनिवास) समस्त कारणों के मूल कारण हैं। सभी लोगों के दुखों को दूर करने वाले श्रीनिवास की बराबरी करने वाला कोई नहीं है। हे श्रीनिवास! जैसे आपने द्रौपदी की प्रार्थना सुनकर उसे भरी सभा में बचाया था, वैसे ही मेरी प्रार्थना सुनकर मुझे भी बचाओ।

श्री पुरंदर दास

पुरंदर दास का जन्म 1484 में कर्नाटक में वरदप्पा और रुक्मिणी नामक दंपति के यहाँ हुआ। वरदप्पा और रुक्मिणी संतानहीन होने के कारण तिरुमला आए और यहाँ आकर वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए और एक पुत्र की प्रार्थना की। वेंकटेश्वर स्वामी की कृपा से उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ। स्वामी की कृपा से जन्म लेने के कारण उस बालक का नाम 'श्रीनिवास' रखा गया।

पुरंदर दास ने 4,75,000 कीर्तन रचे। उनमें से अब केवल एक हजार कीर्तन उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ वेंकटेश्वर स्वामी के बारे में हैं, जिनमें से दो की भावना निम्नलिखित है:

"भक्तों की पीड़ा दूर करने के लिए गरुड़ पर तेज़ी से आने वाले भगवान! हरि! भक्तवत्सल! कृपया मेरे सांसारिक जीवन के भय और

पीड़ाओं को दूर करें, स्वामी! मैं आपकी दया और करुणा पर निर्भर हूँ। हे भगवान! ब्रह्मांड में जीवों की सृष्टि, रक्षा और विनाश की जिम्मेदारी लेने वाले! इस ब्रह्मांड के संचालन का मूल कारण आप हैं, यह सत्य को समझना और आपकी असीमित, पवित्र गुणों का गुणगान करना बहुत आनंददायक है! आपकी सहस्रनाम संकीर्तन के आनंद के अमृत में डूबे भक्त सभी चीजों को भूल जाते हैं और अपने मन को व्यर्थ कार्यों में नहीं जाने देते।

"हे भगवान! वैनतेय (गरुड़) को वाहन बनाने वाले! असुरों का नाश करने वाले भगवान! हे कमल जैसे नेत्रों वाले! दुर्योधन के दरबार में संदेश ले जाकर पांडवों के लिए तर्क करने वाले करुणामूर्ति! कृपया अपनी दयापूर्ण दृष्टि मुझ पर डालें और मुझे बचाएँ!

"हे शेषाद्रि शेखर विभो! आप अपने भक्तों की रक्षा करने में कभी असफल नहीं होते। हे जगदीश! कृपया मुझे सही मार्ग दिखाओ और इस भयानक स्थिति से उबारो। कृपया मुझे सांसारिक समुद्र से पार कराओ। वेंकटाचल पर निवास करने वाले श्रीनिवास, नारद मुनि, तुम्बुरु के दिव्य संगीत और अपने पुत्र ब्रह्मा की स्तुतियों का आनंद लेते हुए, कमल जैसी आँखों और शंख-चक्र से युक्त अपने चिदानंद रूप में हमें दर्शन दे रहे हैं।"

श्री हाथीराम बाबाजी

'हाथीराम बाबाजी' उत्तर भारत से तिरुमला आए थे। वे एक महान भक्त थे। वे दिल्ली से लगभग 36 किलोमीटर दूर स्थित 'क्रीडल' नामक गाँव से थे। अपने गुरु की अनुमति से तीर्थयात्राएँ करते हुए लगभग 1500 में वे तिरुमला पहुँचे। "हाथीराम बाबाजी वेंकटेश्वर स्वामी से बात करते थे और उनके साथ पाचिक खेल खेलते थे। पाचिक खेलों में अपनी खेल क्रीड़ा भी वेंकटेश्वर स्वामी हाथीराम बाबाजी के साथ खेलते थे। हाथीराम बाबाजी को वेंकटेश्वर स्वामी के महान भक्त के रूप में सभी सम्मानित

करते थे। हाथीराम बाबाजी के साथ की जाने वाली बातचीत में वेंकटेश्वर स्वामी की कही गई बातें अन्य किसी को सुनाई नहीं देती थीं।"

कुछ लोग गिरीधर राजा, जो चित्तूर के शासक थे, के पास शिकायत करने गए कि "हाथीराम बाबा अपनी महत्ता दिखाने के लिए वेंकटेश्वर स्वामी से बातचीत का नाटक कर रहे हैं। वे खुद ही दोनों ओर से पासे खेलते हैं और कहते हैं कि वे वेंकटेश्वर स्वामी के साथ खेल रहे हैं।"

गिरीधर राजा ने हाथीराम बाबा को बुलाकर उनसे शिकायत बताई और कहा, "यदि तुम वास्तव में वेंकटेश्वर स्वामी के भक्त हो, तो इसे साबित करना होगा। यहाँ पूरी तरह से गन्ने से भरे कमरे में अगले दिन सुबह तक स्वामी की मदद से इन्हें खाना होगा, अन्यथा तुम्हें सजा मिलेगी।" उन्होंने हाथीराम बाबा को गन्ने से भरे कमरे में बंद कर दिया।

हाथीराम बाबा ने रात में प्रार्थना की, "स्वामी! मैं इतने सारे गन्ने नहीं खा सकता। अगर मैं इन्हें नहीं खाऊँगा, तो राजा मुझे सजा देगा। राजा को सजा देने से राजा को पाप लगेगा। ऐसा नहीं होना चाहिए। लोगों ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया है, इसे आप ही साबित कर सकते हो।" और फिर वे सो गए। रात में वेंकटेश्वर स्वामी हाथी के रूप में आए और कमरे में सभी गन्ने खाकर गरजने लगे। इस आवाज को सुनकर हाथीराम बाबा जागे और हाथी के रूप में वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति करने लगे।

सेवकों ने राजा के पास जाकर कहा, "जिस कमरे में हाथीराम बाबा बंद हैं, वहाँ एक हाथी गरज रहा है।" गिरीधर राजा आए और जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला, वह हाथी सभी के सामने भाग गया। हाथीराम बाबा वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति करते रहे। राजा समझ गए कि वेंकटेश्वर स्वामी स्वयं हाथी के रूप में आकर गन्ने खा गए। गिरिधर राजा ने हाथीराम बाबाजी को सच्चा भक्त मानकर उन्हें वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का अधिकारी नियुक्त किया और उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। हाथीराम बाबाजी ने वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा में कई कार्य किए।

हाथीराम बाबाजी हर सुबह वेंकटेश्वर स्वामी के सुप्रभात सेवा में ताज़ा गाय का दूध और मक्खन अर्पित करते थे। आज भी, हाथीराम बाबाजी के शिष्य तिरुमला में स्थित हाथीराम बाबाजी मठ से सोने की थालियों में दूध और मक्खन लाते हैं और सुप्रभात सेवा में अर्पित करते हैं। मंदिर के पुजारी इन्हें वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित करते हैं।

लोगों ने जब सुना कि वेंकटेश्वर स्वामी ने स्वयं हाथी के रूप में आकर हाथीराम बाबाजी की रक्षा कि और गिरिधर राजा ने उन्हें अपना गुरु मान लिया, तो वे हजारों की संख्या में हाथीराम बाबाजी के दर्शन के लिए आने लगे। तिरुमला में उनके मठ में भक्तों की बढ़ती भीड़ देखकर, हाथीराम बाबाजी ने पापनाशन मार्ग पर गोगर्भ तीर्थ और आकाशगंगा के बीच वेणुगोपाल स्वामी मंदिर की स्थापना की और वहीं वेणुगोपाल स्वामी की सेवा करने लगे। वहाँ, हाथीराम बाबाजी केवल 'राय' नामक पेड़ के पत्ते खाते थे। यह पेड़ अब भी वहाँ मौजूद है और उसके पत्ते लोग खा सकते हैं। दीपावली के एक दिन पहले, हाथीराम बाबाजी ने वेणुगोपाल स्वामी मंदिर प्रांगण में जीवित समाधि ली।

हर साल, हाथीराम बाबाजी के जीवित समाधि के दिन, तिरुमला स्थित हाथीराम बाबाजी मठ से लड्डूगोपाल मूर्ति को उनकी समाधि के पास लाकर उत्सव और पूजा की जाती है। पहले हाथीराम बाबाजी को केवल 'बाबाजी' कहा जाता था, लेकिन वेंकटेश्वर स्वामी के हाथी के रूप में आकर बचाने के कारण वे 'हाथीराम बाबाजी' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। 'हाथी' का मतलब है हाथी और 'राम' का मतलब है आनंद देने वाला। हाथीराम का अर्थ है हाथी के रूप में आकर बाबाजी को आनंद देने वाला।

श्री कनक दास

कनक दास का जन्म 1509 में कर्नाटक के 'कागिनेल' गाँव में हुआ था। कनक दास को खेत में हल जोतते समय सोना मिला। उस सोने से उन्होंने अपने गाँव में एक मंदिर का निर्माण किया और आदि केशवमूर्ति

की स्थापना की। उन्होंने इस मंदिर में तिरुमला के वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा विधि शुरू की। कनक दास व्यास राय के शिष्य थे। कनक दास ने तिरुमला जाने और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने का निश्चय किया। स्वामी ने वहाँ पूजा करने वाले पुजारी को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा, "मेरा भक्त कनक दास आ रहा है। तुम पहाड़ के नीचे जाकर मेरा तीर्थ प्रसाद देकर उसका स्वागत करो।" पुजारी पहाड़ के नीचे आए और सीढ़ियों के पास खड़े होकर आने वाले हर व्यक्ति से पूछने लगे, "आप कनक दास हैं?" कनक दास से भी यही प्रश्न पूछा गया। जब कनक दास ने पूछा, "क्यों ऐसा पूछ रहे हैं?" पुजारियों ने उत्तर दिया, "रात में वेंकटेश्वर स्वामी ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि मेरा भक्त कनक दास आ रहा है। उसे तीर्थ प्रसाद देकर उसका स्वागत करो। इसलिए हम सब से पूछ रहे हैं।" कनक दास ने सोचा कि सब उन्हें सम्मान देंगे, इसलिए उन्होंने कहा, "मेरा आगे जाने वालों के पीछे और पीछे आने वालों से आगे, कनक दास आ रहे हैं," और आगे बढ़ गए।

कनक दास वेंकटाचलम पहुँचे, वहाँ के विभिन्न तीर्थों में स्नान किया और वराह स्वामी और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। उन्होंने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "हे श्रीहरि! आप मुक्ति देने वाले और परमात्मा हो। मैं नर जन्म में जन्म लेने वाला कीड़ा और पापी हूँ। इस माया जाल में फँसा यह शरीर आपका है। हे वेंकटेश्वर स्वामी! आप स्वतंत्र हो। मुझे अपने दासों का दास बनाकर जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त करो।"

श्री राघवेन्द्र स्वामी

राघवेन्द्र स्वामी का जन्म 1595 में तमिलनाडु के भुवनगिरी में तिम्मन्ना भट्ट और गोपिकाम्बा दंपति के यहाँ हुआ था। तिम्मन्ना भट्ट और गोपिकाम्बा ने संतानहीन होने के कारण तिरुमला जाकर वेंकटेश्वर स्वामी से संतान की प्रार्थना की। वेंकटेश्वर स्वामी की कृपा से राघवेन्द्र स्वामी का जन्म हुआ। स्वामी की कृपा से जन्म होने के कारण दंपति ने अपने पुत्र का नाम 'वेंकटनाथ' रखा।

वेंकटनाथ ने मध्व संप्रदाय के सुधींद्र तीर्थ से संन्यास लिया। उनका संन्यास नाम 'राघवेन्द्र तीर्थ' था। इन्हें ही राघवेन्द्र स्वामी के नाम से जाना जाता है। संन्यास लेने के बाद, उन्होंने अपने शिष्यों के साथ तीर्थयात्राएँ कीं, विभिन्न तीर्थों में स्नान किया और मूर्तियों के दर्शन किए। अंत में उन्होंने तिरुमला में वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए।

श्रीकृष्ण देव राय

श्रीकृष्ण देव राय का जन्म 1509 में कर्नाटक के हम्पी में हुआ था। श्रीकृष्ण देव राय ने तिरुमला की दो बार यात्रा की और वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए। उन्होंने स्वामी को उपहार स्वरूप रत्न जड़ित मुकुट, दो सोने की थालियाँ, 25 चांदी की थालियाँ, सोने के आभूषण, बहुत गायें और बहुत गाँव अर्पित किए।

भक्त शिरोमणि तरिगोंड वेंगमांब

तरिगोंड वेंगमांब का जन्म 1730 में तिरुपति से 80 किलोमीटर दूर वायलपाडु मंडल के तरिगोंड गाँव में मंगम्मा और कनाल कृष्णय्या दंपति के यहाँ हुआ था। पाँच पुत्रों के जन्म के बाद, कृष्णय्या ने तिरुमला वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए और एक पुत्री की प्रार्थना की। वेंकटेश्वर स्वामी की कृपा से जन्म लेने के कारण पुत्री का नाम 'वेंकम्मा' रखा गया।

घर पर ही बड़ों से भागवत, रामायण और वेंकटेश्वर स्वामी की लीलाएँ सुनने वाली वेंकम्मा, छोटी उम्र से ही वेंकटेश्वर स्वामी का ध्यान करती थी। वह किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी, इसलिए लोग सोचते थे कि वेंकम्मा पर भूत-प्रेत का साया है। बारह साल की उम्र में वेंकम्मा का विवाह वेंकटाचलपति नामक युवक से कर दिया गया। कुछ दिनों बाद ही वेंकटाचलपति की मृत्यु हो गई, जिससे वेंकम्मा अपने गाँव लौट आई।

वेंकम्मा घर पर ही रहते हुए वेंकटेश्वर स्वामी का ध्यान करती थी। वह वेंकटेश्वर स्वामी के बारे में कीर्तन रचती थी और उन्हें सुरीले स्वर में गाती थी। वेंकम्मा की भक्ति को देखकर सभी उसे आदरपूर्वक 'वेंगमांब' कहने लगे। इस प्रकार वेंकम्मा 'वेंगमांब' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

वेंगमांब प्रतिदिन तरिगोंड गाँव में हनुमान मंदिर में स्थित नरसिंह स्वामी की पूजा करती थी, उन्हें तुलसी और फूलों की माला अर्पित करती थी और उनका ध्यान करती थी। वहाँ के हनुमान मंदिर के पुजारी को यह सहन नहीं होता था। एक दिन पुजारी ने वेंगमांब से क्रोधित होकर कहा, "तुम किसी पवित्र स्थल पर जा सकती हो! हमेशा यहाँ रहकर हमारे जीवन को क्यों परेशान करती हो?" पुजारी ने वेंगमांब को गुस्से में बाल पकड़कर मंदिर से बाहर निकाल दिया। वेंगमांब के गुस्से से पुजारी डर गया और उनके पैरों में गिरकर माफी माँगने लगा। वेंगमांब शांत हुईं और पुजारी की बात को दैवी प्रेरणा मानते हुए तिरुमला जाकर वहाँ बसने का निश्चय किया। उस समय वेंगमांब की उम्र 21 वर्ष थी।

तिरुमला पहुँचने पर वेंगमांब ने वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करते हुए, ध्यान करते हुए और कीर्तन गाते हुए समय बिताना शुरू किया। वेंगमांब के निवास के लिए वेंकटेश्वर स्वामी ने अपने भक्त आत्मा रामदासु के माध्यम से एक झोपड़ी बनवाई। वेंकटेश्वर स्वामी की रसोई से वेंगमांब को आवश्यक भोजन सामग्री मिलती रही।

वेंगमांब वेंकटेश्वर स्वामी के लिए कीर्तन गाती थीं। वेंगमांब की भक्ति को देखकर, अन्नमाचार्य के वंशजों ने तिरुमला पर्वत पर स्थित अपने घर में एक कमरा वेंगमांब के लिए देने का प्रस्ताव किया, जिसे वेंगमांब ने स्वीकार किया। यहाँ वेंगमांब घर के पीछे खाली स्थान में वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए तुलसी के पौधे उगाती थीं।

इस समय, ब्रिटिश सरकार ने अक्काराम दीक्षित को वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का मुख्य पुजारी नियुक्त किया। अक्काराम दीक्षित का घर वेंगमांब के तुलसी बगीचे के पास था। अक्काराम दीक्षित वेंगमांब से ईर्ष्या करते

थे क्योंकि भक्त उन्हें अधिक सम्मान देते थे। अक्काराम वेंगमांब के तुलसी बगीचे में कचरा फेंकते थे। वेंगमांब ने कई बार उन्हें समझाया, लेकिन वह नहीं माने। एक दिन, जब वेंगमांब ध्यान कर रही थीं, अक्काराम दीक्षित ने जानबूझकर उनके बगीचे में कचरा फेंका। क्रोधित वेंगमांब ने श्राप दिया, "तुम और तुम्हारा पूरा वंश इस क्षण रक्त वमन कर मर जाएगा।" और अक्काराम दीक्षित और उनके परिवार के सभी सदस्य तुरंत मर गए।

ब्रिटिश सरकार ने एक और पुजारी नियुक्त किया। नए पुजारी भी वेंगमांब से ईर्ष्या करते थे। एक बार ब्रह्मोत्सव के दौरान, मंदिर के पुजारी ने वेंगमांब की निंदा की, जिससे वेंगमांब ने वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर जाना बंद कर दिया। ब्रह्मोत्सव के नौवें दिन, वेंकटेश्वर स्वामी का रथ वेंगमांब के घर के सामने रुक गया। सभी प्रयासों के बावजूद, रथ नहीं हिला। नारियल तोड़ने, कद्दू फोड़ने, और नींबू काटने के बावजूद, रथ नहीं चला। भक्तों ने समझा कि किसी ने वेंगमांब के साथ अपराध किया था, जिससे रथ उनके घर के सामने रुक गया। सभी भक्तों ने वेंगमांब से क्षमा माँगकर रथ को आगे बढ़ाने की प्रार्थना की। वेंगमांब रथ के पास आईं, वेंकटेश्वर स्वामी को प्रणाम कर आरती उतारी, और रथ फिर से चलने लगा।

वेंगमांब की भक्ति और तपस्या को देखकर कई भक्त उनके दर्शन के लिए आने लगे, जिससे उनके ध्यान में बाधा उत्पन्न होने लगी। वेंगमांब ने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "स्वामी, मुझे अपने लोक में ले चलो!" वेंकटेश्वर स्वामी ने वेंगमांब से कहा, "तुम्बुरु तीर्थ पर एक गुफा है। वहाँ रहो, जहाँ कोई तुम्हें न देख सके। हर रात सुरंग मार्ग से मेरे मंदिर आकर मेरी पूजा करो।"

वेंगमांब ने वेंकटेश्वर स्वामी के निर्देशानुसार तुम्बुरु तीर्थ की गुफा में निवास किया और हर रात मंदिर आकर वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा की। मंदिर के पुजारियों ने देखा कि रात में रखी पूजा सामग्री सुबह गायब हो

जाती है। उन्होंने मंदिर के अधिकारियों को सूचित किया। अधिकारियों ने कहा, "कई दिनों से वेंगमांब दिखाई नहीं दे रही हैं। वह तिरुमला में कहीं रहकर रात में गुप्त रूप से मंदिर में प्रवेश कर पूजा कर रही होंगी। इसलिए आश्चर्यचकित न हों।"

एक रात, एक पुजारी ने मंदिर में छिपकर देखा। उस रात वेंगमांब वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा के लिए आईं और पुजारी उन्हें देखकर डर के बेहोश हो गया। सुबह अन्य पुजारियों ने उसे उठाया और उसने पूरी घटना बताई।

एक दिन, एक व्यक्ति जो कुष्ठ रोग से पीड़ित था, अपनी पीड़ा सहन न कर पाने के कारण वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए तिरुमला आया। उसे दर्शन की अनुमति नहीं मिली। वह आत्महत्या करने के लिए तुम्बुरु तीर्थ गया। आत्महत्या से पहले उसने जोर से प्रार्थना की, "गोविंदा! वेंकटेशा! श्रीनिवासा! बालाजी! मुझे जन्म-मृत्यु के बंधनों से मुक्त करो, स्वामी!" वेंगमांब ने गुफा से बाहर आकर उसकी दयनीय स्थिति देखी और कहा, "तुम्हारा कुष्ठ रोग ठीक हो जाएगा। मुझे यहाँ देखने की बात किसी को मत बताना। अगर किसी को बताया, तो तुम्हारा सिर फट जाएगा और तुम मर जाओगे।" वेंगमांब ने उसे अपनी आँखें बंद करने को कहा। जब उसने आँखें बंद कीं, तो वह तिरुमला के स्वामि पुष्करिणि से बाहर आया और उसका रोग पूरी तरह से ठीक हो गया। उसने किसी को नहीं बताया कि उसका कुष्ठ रोग कैसे ठीक हुआ। इस चमत्कार के कारण सभी उसका सम्मान करने लगे। कुछ दिनों बाद उसने तुम्बुरु तीर्थ पर वेंगमांब से मिलने की बात बताई और तुरंत उसका सिर फट गया और वह मर गया।

जब भक्तों को पता चला कि वेंगमांब तुम्बुरु तीर्थ पर हैं, तो वे बड़ी संख्या में उनके दर्शन के लिए आने लगे। तुम्बुरु तीर्थ पर भक्तों की भीड़ सहन न कर पाने के कारण वेंगमांब फिर से तिरुमला मंदिर के पास आ गईं। कुछ दिनों बाद, वेंगमांब ने वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना की, "स्वामी,

भक्तों की भीड़ सहन नहीं हो रही है। मुझे अपने लोक में ले चलो।" वेंकटेश्वर स्वामी ने कहा, "तुम जीवित समाधि में प्रवेश करो।" वेंगमांब ने तिरुमला में वराह स्वामी मंदिर के पास अन्नमाचार्य वंशजों के घर के पीछे तुलसी बगीचे में समाधि बनवाई और उसमें प्रवेश कर गईं। आज भी वहाँ वेंगमांब की समाधि देखी जा सकती है।

श्री त्यागराजु

श्रीराम के भक्त त्यागराजु का जन्म 1767 में आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में रामब्रह्मम और सीतम्मा दंपति के यहाँ हुआ।

एक बार त्यागराजु अपने शिष्यों के साथ तीर्थयात्रा करते हुए तिरुमला वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए गए। लेकिन तब तक पुजारियों ने मंदिर का पर्दा बंद कर दिया था। त्यागराजु के शिष्यों ने पुजारियों से प्रार्थना की कि पर्दा हटाकर दर्शन कराएँ। पुजारियों ने कहा, "शास्त्र नियमों के अनुसार, एक बार बंद करने के बाद पर्दा फिर से नहीं खोला जा सकता।"

तब त्यागराजु ने इस प्रकार प्रार्थना की: "हे तिरुमला वेंकटरमणा! मेरे भीतर की अज्ञानता का पर्दा हटाओ। स्वामी! हे परमपुरुष! धर्म और मुक्ति से दूर ले जाने वाले इस अज्ञानता के पर्दे को मुझसे हटाओ। यह अज्ञानता इस प्रकार है जैसे भूखी मछली चारा खाने के लिए जाती है और मर जाती है, जैसे भोजन करते समय मक्खी परेशानी पैदा करती है, और जैसे हरि का ध्यान करते समय मन क्षुद्र लोगों के पास चला जाता है। जैसे जानवर शिकारी के जाल को पहचान नहीं पाते और उसमें फंस जाते हैं, वैसे ही मैं अहंकार और अज्ञानता के जाल में फंस गया हूँ। हे वेंकटरमणा! कृपा करके मुझे आशीर्वाद दो और मुझ पर से इस अहंकार और अज्ञानता के पर्दे को हटाओ, स्वामी!"

इस कीर्तन को गाते ही पर्दा खुल गया। वहाँ उपस्थित सभी भक्त त्यागराजु के साथ वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुए।

कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद

कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद का जन्म 1896 में कलकत्ता में रजनी और गौर मोहन डे दंपति के यहाँ हुआ। उन्होंने श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद से हरिनाम दीक्षा और भक्ति प्रज्ञ केशव स्वामी से संन्यास लिया। 1966 में, उन्होंने अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण चैतन्य संघ (इस्कॉन) की स्थापना की।

कृतयद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायांयजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्॥

कृतयुग में विष्णु का ध्यान करने से, त्रेतायुग में यज्ञ करने से, और द्वापरयुग में भगवान के चरणों की सेवा करने से जो फल मिलता है, वह कलियुग में केवल हरे कृष्ण महा मंत्र के जप से प्राप्त हो सकता है। (श्रीमद्भागवतम 12.3.52)

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥
इति षोडशकम् नाम्नां कलिकल्मष नाशनम्।
नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते॥

16 नामों वाला यह हरे कृष्ण महामंत्र, इस कलियुग के सभी दोषों को नष्ट करता है। चारों वेदों में से इसे खोजने के लिए कोई अन्य सरल मार्ग नहीं है। (कलिसंतरण उपनिषद् ५-६)

श्रील प्रभुपाद ने शास्त्रों के आधार पर इस प्रकार प्रचारित किया कि 'मानव जन्म भगवान को समझने के लिए है, न कि निरंतर जंतुओं की तरह व्यतीत करने के लिए। भगवान को केवल भक्तिपथ से ही समझा जा सकता है।' उन्होंने इस विचार को दुनिया भर में प्रचारित किया।

श्रील प्रभुपाद इस प्रचार को करते हुए 25 अप्रैल 1974 को हैदराबाद से विमान से तिरुमला के लिए गए। 'तिरुमला तिरुपति देवस्थानम' के प्रबंधक ने श्रील प्रभुपाद और उनके भक्त दल का सम्मानपूर्वक स्वागत किया और उनके ठहरने के लिए दो कमरे दिए।

उस समय, तिरुमला वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए प्रति दिन 15,000 लोग आते थे। इसके कारण दर्शन के लिए बहुत समय तक इंतजार करना पड़ता था। लेकिन देवस्थानम ने श्रील प्रभुपाद और उनके भक्त दल को सीधे वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए ले जाने की अनुमति दी। दर्शन के लिए इंतजार कर रहे भक्त 'गोविंदा गोविंदा' का जयकारा कर रहे थे। लेकिन जब श्रील प्रभुपाद ने वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन किए, तो उन्होंने 'गोविंदं आदि पुरुषं तमहम् भजामि' नामक कीर्तन गाया।" इसके बाद, कमरे में रहते हुए श्रील प्रभुपाद ने अपने शिष्यों से कहा, "हालांकि कई लोग 'भगवान का अस्तित्त्व नहीं है' ऐसा प्रचार कर रहे हैं, लेकिन फिर भी करोड़ों लोग बालाजी के दर्शन के लिए जा रहे हैं, यह भगवान के प्रति जनता के विश्वास का प्रमाण है। वास्तव में, लोग अपनी भौतिक कठिनाइयों से राहत या धन के लिए भगवान के दर्शन के लिए आते हैं, लेकिन वे सभी 'गोविंदा' नाम का जप कर रहे हैं।" तिरुमला में आवास व्यवस्था को देखकर, श्रील प्रभुपाद ने अपने शिष्यों से कहा, 'हमें भी सोने की गुम्बदों से चमकते हुए बालाजी (वेंकटेश्वर स्वामी) के मंदिर, जैसे मंदिर का निर्माण करना चाहिए।' जब शिष्यों ने श्रील प्रभुपाद से पूछा, 'वेंकटेश्वर स्वामी को बालाजी क्यों कहा जाता है?' तो उन्होंने उत्तर दिया, 'बालाजी का अर्थ होता है छोटे बच्चे। यहाँ पर वेंकटेश्वर स्वामी को श्रीकृष्ण के रूप में 'बालाजी' कहा जाता है।'

एक दिन, तिरुपति मंदिर के एक अधिकारी ने श्रील प्रभुपाद से मिलने के समय बताया, 'हर महीने हुंडी में चालीस लाख रुपये आते हैं।' जब श्रील प्रभुपाद ने पूछा, 'आप उस धन का खर्च कैसे करते हैं?' तो उन्होंने उत्तर दिया, 'अधिकांश भाग भवनों के पुनर्निर्माण के लिए उपयोग किया

जाता है।' श्रील प्रभुपाद ने कहा, 'मंदिर का पुनर्निर्माण अच्छा है, लेकिन कृष्ण के संदेश को पूरे विश्व में फैलाना सबसे अच्छा है। बालाजी का अर्थ है कृष्ण। कृष्ण का संदेश फैलना चाहिए। वही कृष्ण चैतन्य महाप्रभु के रूप में अवतरित हुए और हमें बताया कि कैसे भक्ति साधना करनी चाहिए। लंदन में प्रचार की कमी के कारण कई चर्चों की स्थिति खराब हो गई है। मंदिर केवल प्रचार के लिए बनने चाहिए।'

इसके बाद, पास में मौजूद पुजारी ने कहा, 'हम एक और मंदिर बना रहे हैं, जिसमें 'पंचोपासन' (मायावाद की पद्धति से शंकराचार्य द्वारा सुझाए गए पांच मूर्तियों की पूजा पद्धति) की शुरुआत करेंगे।' श्रील प्रभुपाद ने आश्चर्य से कहा, 'क्या आपके आचार्य रामानुजाचार्य ने कभी पंचोपासन की सलाह दी थी?'"

श्रील प्रभुपाद ने वहाँ दो दिनों की अवधि में प्रतिदिन तीन-चार बार बालाजी के दर्शन किए। हर बार, वहाँ के पुजारियों ने श्रील प्रभुपाद को सीधे गर्भगृह के पास ले जाकर वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने का अवसर दिया, चाहे वह कितना भी समय लगे।

श्रील प्रभुपाद ने तिरुमला से जाने के एक महीने बाद तिरुमला तिरुपति देवस्थानम के अधिकारी को इस प्रकार एक पत्र लिखा:

> 'हाल ही में तिरुमला में दो दिनों की यात्रा के दौरान, आपने मेरे और मेरे शिष्यों—हरे कृष्ण आंदोलन के सदस्यों के प्रति जो सम्मान और प्रेम दिखाया, उसके लिए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आपने हमें बालाजी के दर्शन का जो अवसर दिया, हम उसे कभी नहीं भूल सकते। हमारे अमेरिका और यूरोप में रहने वाले अनुयायियों के लिए इस तरह का अवसर बहुत कम ही उपलब्ध होता है, और वे पूरी तरह से संतुष्ट हैं। यदि मौका मिला, तो हम पुनः तिरुमला आकर बालाजी के दर्शन करना चाहेंगे। हम अपनी संस्था के यात्रा करने वाले सदस्य के लिए एक विशेष कुटीर बनवाना चाहते हैं। यदि आप

हमें स्थान देने के लिए तैयार हैं, चाहे वह बिक्री के लिए हो या दान के रूप में, तो कृपया हमें बताएँ। इस विषय में कोई भी सलाह देने के लिए आप स्वतंत्र हैं। आपके अद्भुत आतिथ्य के लिए एक बार फिर धन्यवाद।

आपका शुभचिंतक,
ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी।

जब श्रील प्रभुपाद के शिष्य तिरुमला के अधिकारियों से मिले, तो देवस्थानम ने अलिपिरी में एक स्थान दान दिया। श्रील प्रभुपाद के शिष्यों ने वहाँ श्री श्री राधा गोविंद मंदिर का निर्माण किया।

एक बार जब श्रील प्रभुपाद हैदराबाद में सात मंत्रियों से मिले, तो उन्होंने उनके साथ बालाजी के विषय में जो चर्चा किया उसका सारांश यह है कि, "मानव जन्म यज्ञ के लिए (भगवान को समझने के लिए) प्रयोजित किया गया है। आपके नजदीक तिरुमला में बालाजी मंदिर है। बालाजी को बहुत अधिक आय प्राप्त होती है। उस आय का उपयोग केवल बालाजी की संतुष्टि के लिए होना चाहिए, अन्य कार्यों के लिए नहीं। भगवान के ज्ञान के अभाव में कई लोग दु:खी हो रहे हैं, इसलिए उस आय का उपयोग भगवान के ज्ञान का प्रचार करने के लिए करना चाहिए। लोग बालाजी को बहुत धन अर्पित करते हैं। उस धन का उपयोग भगवद्गीता में बताए गए रहस्यमय ज्ञान को पूरे विश्व में प्रचारित करने के लिए होना चाहिए। यही 'श्री चैतन्य महाप्रभु' का उद्देश्य है। चैतन्य महाप्रभु ने कहा, 'मेरी आज्ञा से आप सभी गुरु बनकर दूसरों को श्रीकृष्ण के उपदेशों का प्रचार करें। इस प्रकार भगवद्गीता और भागवतकथा में बताए गए श्रीकृष्ण के आदेशों का पालन करें। इस प्रकार गुरु बनकर हर किसी को मुक्ति दिलाने की कोशिश करें। यदि आप भगवद्गीता का प्रचार करेंगे, तो भारत को महानता प्राप्त होगी।' 'बालाजी' के धन का उपयोग केवल कृष्ण भक्ति के प्रचार के लिए होना चाहिए, अन्य लाभ के लिए नहीं। यही मेरा निवेदन है।"

> अभी भी, भारत में कई भक्त हैं, कई कृष्णभावनाभावित व्यक्ति हैं। विशेष रूप से इस प्रदेश में, आप बालाजी के महान भक्त हैं। बालाजी भगवान श्रीकृष्ण ही हैं, बाल-कृष्ण। इसलिए मैं यह इच्छा करता हूं कि सरकार का संचालन बालाजी, अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में हो। यही मेरी प्रार्थना है। और जो नियम, आदेश और विधान हैं, वे सभी भगवद्गीता में वर्णित हैं। (आंध्र प्रदेश के सात मंत्रियों के साथ वार्ता, 22 अगस्त 1976, हैदराबाद)

श्रील प्रभुपाद ने भगवद्गीता के 13वें अध्याय के 15वें श्लोक का प्रवचन करते हुए कहा, "मायावादियों का मानना है कि भगवान का कोई विशेष रूप नहीं है। यदि भगवान के पास इन्द्रियाँ नहीं होती हैं, तो वह निराकार (रूपहीन) होते। कृष्ण ने कहा कि मैं हर चीज को सुन सकता हूँ और देख सकता हूँ। इसका मतलब यह है कि कृष्ण के पास आँखे, कान, पैर, हाथ, सभी इन्द्रियाँ हैं। भगवान के अंग भौतिक नहीं हैं। हम केवल भौतिक वस्तुओं को देख सकते हैं, इसलिए भगवान ने हमें अर्चारूप में दर्शन दिया। जिससे हम उनके दिव्य रूप को देख सके। जो कोई अर्चारूप को पत्थर मानता है या गुरु को साधारण व्यक्ति मानता है, वह गधे के समान होता है, जैसा कि शास्त्र में कहा गया है। रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य जैसे महान आचार्यों ने हज़ारों मंदिरों की स्थापना की। आज भी तिरुमला के वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए हजारों लोग आते हैं। क्या वे सभी मूर्ख हैं? क्या वे केवल पत्थर को देखने के लिए जाते हैं? अर्चारूप में भगवान को देखने के लिए हमें पहले एक भक्त बनना होगा। तभी हम उस पत्थर में भगवान को देख सकेंगे।"

आभार

इस पुस्तक के प्रकाशन और वितरण के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करने वाले मेरे गुरुदेव, परम पूज्य श्री भक्तिविकास स्वामी जी का में हार्दिक आभारी हूँ।

वारंगल के नारायण ने आर्थिक सहायता प्रदान करके मुझे प्रोत्साहित किया। इस्कॉन भरूच (गुजरात) के भक्तों ने तकनीकी उपकरणों और साहित्य की आपूर्ति करके विभिन्न तरीकों से सहायता की। मुद्रण के लिए सव्यसाची प्रभु, अच्युत प्रभु, वेणुगोपाल कृष्ण प्रभु, और पूर्णब्रह्म प्रभु ने कई प्रकार से व्यवस्थाएँ की। मैं पूर्णब्रह्म प्रभु का इस पुस्तक को चैतन्य पब्लिशिंग हाउस के माध्यम से प्रकाशित करने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। नरहरी नरसिंह प्रभु, विष्णु स्वामी प्रभु, प्रभु कृष्ण प्रभु, आदि कूर्म प्रभु, वेदांत सूत्र प्रभु, साकारी प्रभु, गोविंद आनंद प्रभु, प्रेमानंद प्रभु, भक्त शिवप्रसाद, भक्त गणेश, भक्त संतोष, और अन्य भक्तों ने जानकारी एकत्रित करने, संपादन करने और सत्यापन में मदद की। निस्वार्थ और त्वरित सहयोग देने के लिए मैं इन सभी भक्तों का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

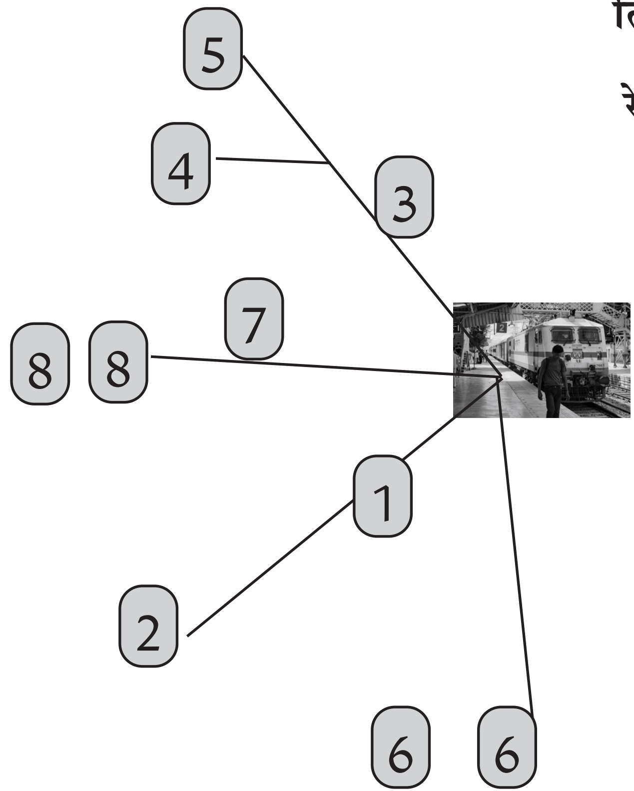
मैं उन सभी भक्तों का हार्दिक आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के हिंदी अनुवाद और प्रकाशन में सहायता की है। विशेषरूप से संपादन और प्रूफशोधन के लिए रामप्रिया माताजी, रेणुका सुंदरी माताजी, महेशानी माताजी, राघवानंद प्रभु, कमलानंद प्रभु, युयुधान प्रभु, अरिष्टहा प्रभु और भक्त बलवंत का मैं विशेष आभारी हूँ।

लेखक परिचय

श्रीनिवास सेवानंद दास 2004 से 2009 तक तिरुपति इस्कॉन मंदिर में और 2010 से 2012 तक भीमावरम इस्कॉन मंदिर में कई सेवाएँ कर चुके हैं। उन्होंने 2010 में परम पूज्य भक्ति विकास स्वामी से दीक्षा लेकर उनके आदेशानुसार तेलंगाना राज्य में 'हर गांव में हरिनाम संकीर्तन' पदयात्रा में 2013 से 2020 तक भाग लिया। यह पदयात्रा 2021 में तेलंगाना से गुजरात के भरूच इस्कॉन मंदिर तक आई। वे भी पदयात्रा के साथ भरूच आए और अब तक पदयात्रा में सेवाएँ जारी रख रहे हैं।

श्रीनिवास सेवानंद दास

संपर्क संख्या: 9542209593



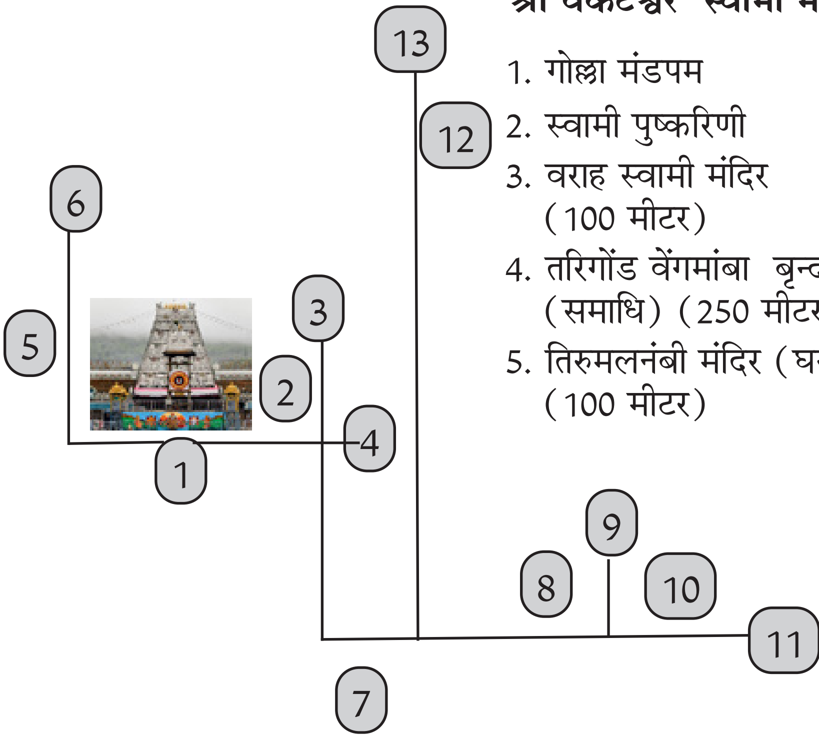
तिरुपति के दर्शनीय स्थलों का मार्गदर्शक चित्र

रेलवे स्टेशन से

1. गोविंदराज स्वामी मंदिर (¼ कि.मी.)
2. कोदंडराम स्वामी मंदिर (1 कि.मी.)
3. कपिल तीर्थ (3 कि.मी)
4. इस्कॉन राधा-गोविंद मंदिर (4 कि.मी)
5. अलिपिरी में श्रीवारील पादालु (वेंकटेश्वर स्वामी पाद चिह्न) (4 कि.मी)
6. पद्मावती देवी मंदिर - पद्म सरोवर (6 कि.मी)
7. श्रीनिवास मंगापुर (12 कि.मी)
8. सुवर्ण मुखारी (स्वर्ण मुखी) नदी और अगस्त्येश्वरालयम (14 कि.मी)

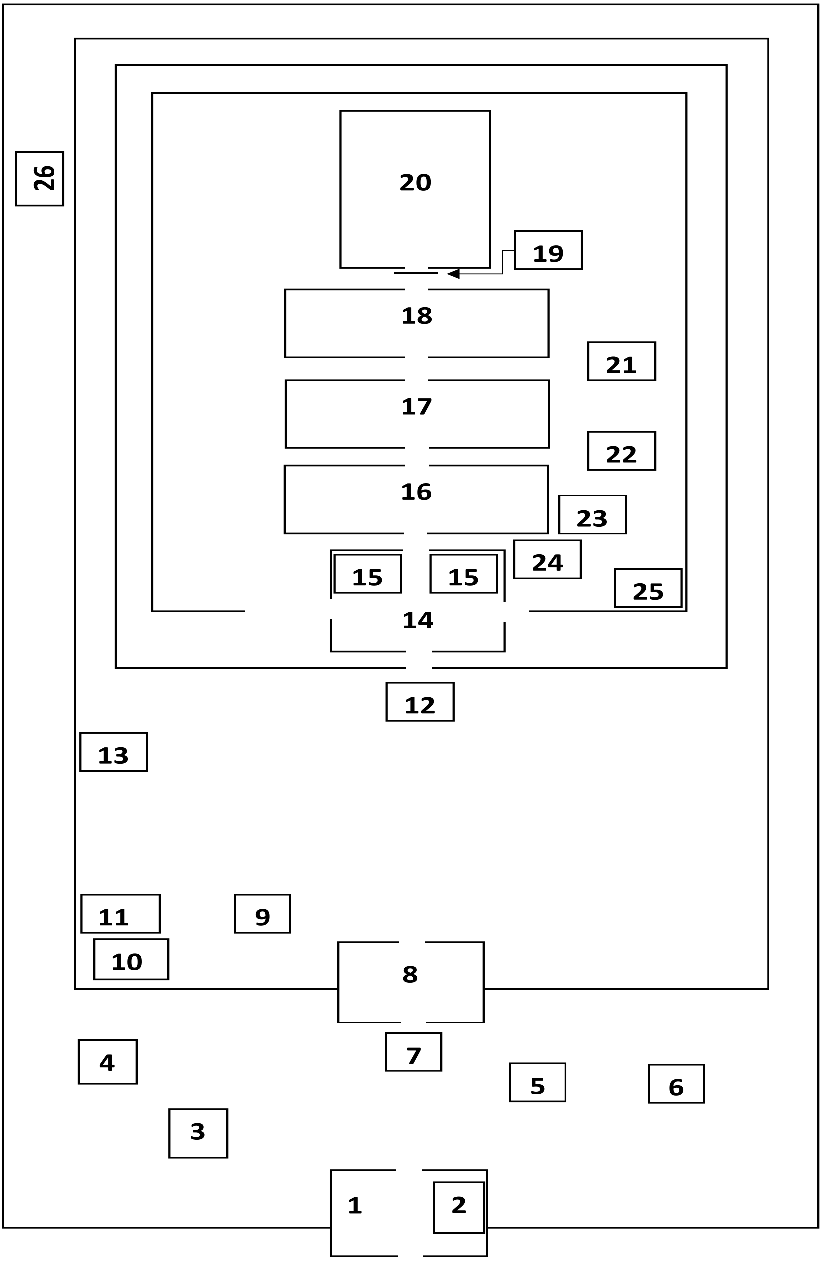
तिरुमला के दर्शनीय स्थलों का मार्गदर्शक चित्र

श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर से



1. गोल्ला मंडपम
2. स्वामी पुष्करिणी
3. वराह स्वामी मंदिर (100 मीटर)
4. तरिगोंड वेंगमांबा बृन्दावन (समाधि) (250 मीटर)
5. तिरुमलनंबी मंदिर (घर) (100 मीटर)
6. अनंताचार्य बृन्दावन (समाधि) (250 मीटर)
7. तरिगोंड वेंगमांबा पुष्पउद्यान और कुआँ (1 कि.मी)
8. हाथीराम बाबाजी बृन्दावन (समाधि) (4 कि.मी)
9. जाबालि तीर्थ (5 कि.मी)
10. आकाशगंगा तीर्थ (6 कि.मी)
11. पापनाशन तीर्थ (7 कि.मी)
12. चक्र तीर्थ (4 कि.मी)
13. श्रीवारी पादालु (वेंकटेश्वर स्वामी पाद चिह्न) (6 कि.मी)

श्री वेकंटेश्वर स्वामी मंदिर में दर्शनीय स्थलों का मार्गदर्शक चित्र



श्री वेकंटेश्वर स्वामी मंदिर में दर्शनीय स्थलों की सूचि

1. प्रधान गोपुरम
2. अनंताचार्य गुणपम (अनंताचार्य की सब्बल)
3. श्रीरंग मंडपम
4. तिरुमला राय मंडपम
5. अद्दाल मंडपम (दर्पण मंडप)
6. फूल बावि (फूलों का कुआँ)
7. ध्वजस्तंभ
8. रेंडव गोपुरम (दूसरा गोपुरम)
9. वरदराज स्वामी मंदिर
10. वंटशाल (रसोईघर)
11. फूलगदि (पुष्प कक्ष)
12. गरुड़ मंदिर
13. वंट बावि (रसोईघर के लिए कुआँ)
14. घंट मंडपम
15. जय विजय द्वारपाल
16. स्नपन मंडपम (अभिषेक मंडप)
17. रामुल वारि मेड (रामदरबार का मंच)
18. शयन मंडपम
19. कुलशेखर पडी (देहलि)
20. गर्भगृह
21. संकीर्तन आरा (अन्नमाचार्य के भजनों का संग्रह कक्ष)
22. भाष्यकारुलु (रामानुजाचार्य की मूर्ति)
23. विष्वक्सेन मंदिर
24. हुंडी (दान पात्र)
25. योग नरसिंहस्वामी
26. कल्याण मंडपम